



श्री पञ्चस्तवी

तथा

दुर्गासप्तशती का चौथा अध्याय

(श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में
अर्थ सहित)

स्वयत्तः :-

जिया लाल सराफ
नया कश्मीर होटल, लाल चोक,
श्रीनगर, कश्मीर।



मिलने का पता:—

भवानी आश्रम
पुखरीबल (हारी पर्वत)
श्रीनगर, कश्मीर।



ملنے کا پتہ :—
بھوانی ہشرم
نیکمہری بل (ہاری پربت)
سینگر کشمیر
(شاپہار آرٹ پریس ستری نگر)



शक्ति रहस्य

संसार में किसी भी कार्य में हाथ डालने से पहले शक्ति की आवश्यकता है। जब तक 'शक्ति' जो जीव को अपने ही अन्दर मौजूद है। उस शक्ति को काम में न लावे। किसी काम में सफलता न होती है और न होगी।

जीव को अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। सब पदार्थों में अपनी अपनी शक्ती अपने अन्दर है जीव में शक्ती का भण्डार है। जिस तरह लकड़ी के अन्दर आग छुपी हुई है और लकड़ी को मालूम नहीं कि सूख में आग की शक्ती अन्दर है। जो इसकी शक्ती 'आग' प्रकट होकर बाहर आती है तो पदार्थों को भस्म कर देती है तो लकड़ी अपने असली 'आग' के स्वरूप को प्रकट करती है। इसी तरह जीव के अन्दर शक्ती का भण्डार है और वह शक्ती जीव के अन्दर है। उस को मालूम नहीं कि मैं क्या हूँ। उस शक्ती से

जैसा चाहें अपनी अवस्था को बना सकते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि, मुन्नी महात्माओं में शक्तियाँ और सिद्धियाँ थीं। वह शक्तियाँ हममें भी हैं। (पुरुषार्थ) पुरुषार्थ करने की ज़रूरत है। पुरुषार्थ का मतलब है, (पुरुष-ऽर्थ) पुरुष का धन। जब जीव पुरुषार्थ करे, और टढ़ रहे तो उस महाशक्ति को उजागर कर सकता है। वह महाशक्ति जो जीव के अन्दर है। उसको परा शक्ति, ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति, इन्द्रिया शक्ति, चित्त शक्ति वगैराह कहा गया है। इस महान शक्ति को जगदम्बा (जगत् माता), जगत जननी इत्यादि नामों से कहा गया है। और इन्हीं नामों से शक्ति का पूजन अर्चन किया जाता है। सारा जगत शक्ति से ही बना है और बनाया जाता है। तमस आविष्कार जो जगत में हुए हैं और नए नए आविष्कार होते हैं। शक्ति ही उनका मूल कारण है। शक्ति के सिवा कुछ नहीं बन सकता।

भवानी सहस्रनाम में पहलेशंकर और नन्दीगण का समवाद लिखा है। नन्दीगण

शंकर से पूछता है। महाराज मुझे प्रश्न है।
कृपा करके मुझे प्रश्न का उत्तर दीजिए।

आप जगत के स्वामी होकर आप आंखें
बन्द करके सदा किस का स्मरण करते हैं और
किस के ध्यान में सदा रहते हैं। क्या आप
से बढ़कर कोई और ऊपर भी है। जिसका
आप ध्यान करते हैं। तो शंकर उत्तर देता है।
हे नन्दीगण सुनो! यह रहस्य है। तीन गुण
वाली श्री शक्ती नाम की शक्ती मेरे अन्दर
है उसी के बल से मैं इस संसार को पैदा
करता हूँ। पालता हूँ और उसी में लीन होता
हूँ। उसी के बल से मैं जगत, पहाड गंदियां
समन्द्र जो भी संसार में देखते हो। बनाता
हूँ। यह सब जगत उसी शक्ती का प्रकाश है।
उसी शक्ति का ध्यान करने से अर्त्त करने
से सब सिद्धियां प्राप्त होती हैं इसी लिए
इसी का सदा स्मरण करता हूँ। हे एक
मनुष्य मैं यह देवी रूप शक्ती हूँ। और
इस को ज्ञात करने की आवश्यकता है।

आपको मालूम होगा कि हम^{जब} बच्चे
 थे तो हमारी माता बच्चपन में हमको इसी
 शक्ती माता के स्वरूप का बीज डालती थी
 और कश्मीरी भाषा में हमको बार बार कहती
 रहती :— (कश्मीरी में) — “जेन माज
 जूनय, अंगन अंगन कथय तय जीव, यिम
 कस गनेयि, राय यस गनेयि, राय क्या द्युतय
 खसवुन गुर वसवुनय नाव, तयय कथय बंदुरा
 बं तुन कुनय, तति बुकुम कौटय मोटय
 मामनि हना, तमि द्युतनम न्यव टूर, सुय
 लौदस जजीरे, जजीर तंजिम नन्नने, काव
 लंगिण बुद्धिने, गान्ठ तंजिम अखने, सुकुस
 म्योः कौलु तारुकुय” — अर्थात् माता
 “जन्म प्रकाश जितना है। प्रकाश क्या है?
 अंग अंग में अर्थात् हर एक चीज में चित्त
 और जीव जानना है। वह किसको प्राप्त हो।
 जिसको राव अर्थात् खयाल की दृढ़ता ने क्या
 दिया, बढ़ने के लिए घोड़ा और उतरने के
 लिए किशोरी अर्थात् (प्राणायाम)। उसी किशोरी

से उतर गई। "तूने" यानी नार्मि (ना भिरम्यन्त) के तरफ वहां मैं ने देखा, बोंदी मोटी कुण्डलिनी, उसी ने मुझे "घी" बरतन में, दिया, वह मैंने अन्दर डाला और तुझको सारा जगत अपना ही स्वरूप दिखाई दिया। लोगों ने हंसा, यह कौन मेरा, जो मेरे कुल का तारक होगा माता अपने पुत्र को वचन से ही उसको यह ख्याल रुची बीज डाल देती थी। कि हे पुत्र तुम्हारा कर्तव्य है। अपने कुल का तारक बनना, यह उपदेश माता सबसे पहले अपने बच्चे को देती थी। ताकि यह बच्चा बड़ा होकर अपने कुल का तारक बनेगा। पञ्चरात्र की के पहले तब में दो श्लोकों में इसका निर्णय किया गया है।

यहां कश्मीर में शक्ति उपासना ही प्रचलित थी जिस समय श्री शंकराचार्य महाराज बुद्धमत को खखुन करते कश्मीर पहुंचे— तो उस वक़्त यहां श्री अभिनवगुप्त जी शक्ति मत के आचार्य थे। जब श्री शंकरा-

चार्य जी उनके पास शास्त्रार्थ करने आये ।
 श्री शंकराचार्य जी शिव के उपासक थे । शक्ति
 को नहीं मानते थे । श्री अभिनवगुप्त जी ने उन
 को कहा । यह जाग्रत शक्ती का विकास है । स्वप्न
 में शक्ती है । उस शक्ती का विकास ही
 यह सारा संसार है । पञ्चस्तवी के पहले तव
 के पहले तीन (३) श्लोकों में श्री कुण्डलिनी
 शक्ती का वर्णन किया गया है । साँड़े तीन
 बार लिपटी हुई वह छोटी मोटी कुण्डलिनी
 जिसको जाग्रत हो । तो वह जन्म मरण से
 छूटता है । उसको दूसरा जन्म प्राप्त नहीं हो
 सकता । वह मुक्त हो जाता है ।

श्लोक :- संसार कुहरादऽस्मात् निगन्तव्यं स्वयं
 पौषं यतनमाश्रित्य हरिणो वारि मञ्जरात् ॥

अर्थ :- योनि संसार की जैसी मंजु होर,
 पनुने बल किन्त्य हि नीरिथ
 पुरुषार्थ पनुनि यत्न सुत्थ, ह्यकान।
 विथु पंथ्य सुह पंजरु मंजु ह्य
 नेरान ॥

श्लोक :- सारेण पुरुषार्थेन स्वेनैव गरुडध्वज,
कश्चित्त इव पुमानेव पुरुषोत्तमतां गता॥

अर्थ:- पनुने पुरुषार्थ कि जैरु किन्थ,
जीव ति कुय पानु नारायण बनान।
पुरुषण मंज आसान खाल काहं पुरुष,
युस पुरुषोत्तम बावस प्यठ कुवातन॥
अपनी शक्ति के बगैर उपासक को परमात्मा की
प्राप्ति नहीं होती।

श्लोक :-

आपद्वनमऽननतोहा, परिप्लविता कृति ।
पुरुषार्थं क्रवच चिक्छन्नं, नैव भूयः परोहिलि॥

अर्थ:- आपदा रूपी युस अन्तु रोस जंगल,
फलमति शकलि युस बीजनु बिवोन ।
पुरुषार्थ कि लेन्नि सृत्य चट्थ चट्थ,
वि आपदा जंगल पत्तु कुबु खसान॥

“अयमात्मा शक्तिहीने लम्बः”

अर्थ:- शक्तिहीन को परमात्मा प्राप्त नहीं
होता और जन्म मरन से छूट नहीं सकता।

इसलिए शक्ति जी उपासना करनी चाहिए। चित शक्ति पूर्ण प्रेम स्वरूप है और सर्व व्यापक है। चित शक्ती के प्रसन्न होने के लिए स्वाहिदा, लोभ, क्रोध और अहंकार रूपी मस्त को मस्त रूपी तलवार से काटकर शक्ती माता के चर्म कमलों पर अर्पण करें। तमाम प्राणियों से प्रेम उत्पन्न करें। अपने स्वरूप का औरों में देखें और तमाम प्राणियों के स्वरूप को अपने में देखें। भेद भाव का हमेशा के लिए दूर दें। अपने जैसा औरों को आत्मवत् समझें।

बालक, यौवन, वृद्ध स्त्री, राजा, साधु, पापी, मूर्ख, विद्वान वगैरह सब के ऊपर प्रेम पूर्वक एक नजर से देखें। शुद्ध विचार को ही निरंतर अन्तःकर्ण में उदय होने दें, अशुद्ध विचार को पाद मत आने दें। शुद्ध विचार और शुद्ध-आचरण का पालन करने से शक्ति माता प्रसन्न होती है। शक्ति माता को ही प्रसन्न करना है। इसलिए शक्ति माता का ध्यान करें। उपासना करें। शक्ति ही जीवन है

शक्ति ही सत्य है। शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही सब कुछ है। शक्ति ही की सर्वत्र आवश्यकता है। शक्तिशाली बनें, मलबान बनें, वीर बनें, निर्भय बनें और स्वतन्त्र बनें।

इस मांस और रक्त रूपी जिस्म में जिसको शरीर कहते हैं। आपके लिए एक रथ है। जिस पर चढ़कर आप कहीं भी पहुंच सकते हो। इस शरीर रूपी रथ की काम में लावें। इस शरीर रूपी रथ के जरिये वैकुण्ठ पहुंच सकते हो। कायरता को डकर सजीव बनें। आपके अन्दर शक्ति का भण्डार है; आपके जीवन का उद्देश्य, विशेष जीवन को प्राप्त करने का है।

जिथालाल सराफ

(समाप्तम्)

प्रार्थना

मांज भवान्य छम में बड चान्य आश
 में ति बोजतम च्चु जारी।
 हुस पथर प्योमुत तुलुम थोद ,
 कासतम में लाचारी ।
 पाद्य सेवन करहावौन्य ब चोन,
 लगय पादन त्रे पारी ।
 द्यान दारु चोन हृदयस संज ज़न,
 बिहिध च्चु तिलकदारी ।
 वोन्य ब ग्यवु चान्य गोण तुलक्षण,
 काशिरिस संज सारी ।
 पादुन्य चान्यन ब लागय,
 लेलु पोश प्रार्थ्य च्चारी ।
 चानि दर्शन बापध में गोम,
 वच्चकाल प्रार्थ्य प्रारी ।
 हावतम मोख कासतम में जन्म,
 जन्मन हुज्ज खारी ।
 कोर में पञ्चस्तवी तरजम् ,
 काशिरिस संज जारी ।

ध्यान

सृष्टौ समस्थापनाय तु उपहरण विधौ
 सर्वेषामऽर्गतानाम् निज मोहमवशाद् मोहणे नौ ग्रहीषि,
 नित्यं क्रीडा प्रसक्ता रचयति सकलं
 स्वात्म शक्त्या प्रपंचतः ।
 सा नः स्नानाय मुयाद्ऽभिमत फलम्,
 भद्रकाली च काली ॥

یوسف پنهان کیا کنی کران ستر شئی تھیتی ستمہار
 یس روان موہ تمہ نشی یوت کران
 کریمہ روستے سارینے بنشدین یوسف
 مثر راؤنس پیٹھ چھ ساہر تھوان
 سوئے بدبر کالی کس بیان سورویہ سوئیں
 رچھتن اسہ گانچھمتی کھل آسوتن اسہ دوان
 یوس پنانی نہیما کینہ کران
 سृष्टी धेती संहारः
 युख दिवान मोह तम् निश पोत कडान,

क्रमु रोस्तुय सारिनुय वंदिशान योसु
 मुचरावनस प्यठ द्वय साम्रथवान,
 सोय भद्रकौली कल्याण स्वरूपु सौस
 रङ्कितन असि काङ्कमुत्य फल आस्यनन असि
 दिवान ॥



ओं नमः त्रिपुर सौन्दर्य ॥

—१ लघुस्तवः १—

ॐ ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती
 मध्ये ललाटं प्रभां,
 शौक्तीं कान्तिमनुष्णा गौरिव
 शिरस्यातन्वती सर्वतः।
 एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः
 सदा हः स्थिता ।
 बिन्द्यान्नः सहसार्पदैस्त्रिभिरधं
 ज्योतिर्मयी बाङ्गमयी ॥१॥

یمنہ از منبرے کان پیش دفن منبر لائیں دارانی

تَرْدِ مَسِّ بِشِشِ سَفِيدِ دَرَنِ دَفْتِ - شِیرِ سِیْطِ لَوِ سِهِ حَمَکَانِ
 ہِزِ لَیْسِ یَمِیسِ سِرِیَہِ سِنْدِ یَا تَحْطِ، حَمِکَہِ دِنِ دَفْتِ رَوِزِ آتَنِ
 سَوِے تَرِ لَیْزِ سِنْدِ رِ سَانِسِ ہِزِ لَیْسِ مَشْرِ رَوِزِ تَنِ
 سَوِے جَوِی سَوِ رُوپِ سِرِ سَوِی سَوِ رُوپِ تَحْطِ اِہِ تَحْطِ تَنِ
 تَرِ نِ پِلَکِنِ مِہِشِدِ اَشْکِ تِہِ کِنِ، تَرِ دِ دِ پَآپِ اَسِہِ تَرِ تَنِ

येन्द्राज सृज हिश कसान कख दारबुन्य ही भवानी
 मंज ललाटस गहु चै चमकान दिप्ति चै शूबानी ।
 सासुबद्य सिरिधि वेवि चन्द्रमु जन चै फौल्यमुत्थ ज्योपारी,
 त्रिमवनस योहय चोन जोति रूप कासि प्रथ
 कांसि खारी ।

योहय ध्यान चोन माता ज्योपराधि हृदयस
 मंज मे रज्जयतन ।

युथ बं बनूहा परिपूर्ण सथ चित्त आनन्द गण ।
 वंशितनम पापन म्यान्यन कर्धतनम तिक्र
 मे जानी ।

सरस्वती हुन्द प्रसाद बन्धतनम, युथ मे
 खुलिहे बाणी ।

या माता त्रपुसी लता तनुल सत्तन्तुस्थिति स्पर्धिनी,
 वाग्बीजे प्रथमेस्थिता तव सदा तां तन्महे ते वयम्।
 शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा,
 ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पर्शन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नराः॥२॥

لو سے زاده تیر یله لئیجه شیشه تاریش بخه حقه حقه حله
 ساز ترو آره زاده و لیه لیس کند تینی تشکستی چقه ناو
 بیز اچس منز کلا لوسه شیکت چیه آسانی
 سوه کلا زگت یاد کر لیس بیجه آسونی دیوگی
 امه کئی دیات لیس منیش زانه کر سنا کر شه سپرش
 گر بجه باوس شری باوس او کر بجه سپرش

युसु जाविजि तोरेलि लंजि हुंजितारि हिश यथ कु कल्लव,
 शाद्वुतार जाविज वलिथ यस कुण्डलिनी शक्ती
 बीजु अवरथ मज कला योसु ठीकिथ कु नाव ।
 सोय कला जगथ दादु करुतस आसुतुन्य कय
 अमिकुय दान दुस ननुय जावि, कर लुना वयग्री॥
 गरि सु सार्श,
 गम बावस मुय बावस अदु कर वनि जेयि अनुय॥

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तु सहसा

ऐ ऐ इति व्याहृतं ,

येनाऽऽकृत वशादऽपीह वरदे

बिन्दुं विनाप्यहारम् ।

तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे,

वाचः सूक्तिं सुधारसद्वस्तु ये निर्व्याप्ति वक्ष्यान्कुजा

ہی دیوی یو د کاہ کہو کہنا کہ چیڑ
کری، اسے اسے بند رہے نہ دی طلب
بیر خیرا لسی تہ فستہ بہتہ تیس خون انگیر
نیر وانی لہیر سے لہیر تھنہ امرہ بہتہ کہ شہ شریہ

ही दीवी योद काह खोफनाक चीज़

बुद्धिथ जल जल,

करि ऐ ऐ बिन्दु रंस्तुव सपदि

तस ती हल ।

यिधि मुजरा तलति यन्त्र वनि तस चीन अनुग्रह,
नेरि वाणी तसुन्दि मोखु निशि हृदि असद्यतकुय

०

सु श्रह ॥

यन्नित्ये ! तद कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं,
 तत्सारस्य तन्नित्येवेति विरलः कश्चिद्व्युदधश्चेद्वि।
 आख्यानं प्रतिपदं सत्य तपसी यत्कीर्तयन्तो हिनाः
 प्राप्स्ये प्रणवारूपदं प्रमदितं
 नीलोच्चरन्ति स्फुटम्॥१॥

ہی نہتہ روئی دویم منتر جون کامہ راجہ ناواپہ ون
 منے منتر تیشکل نہتہ کا نہتہ پرتھوی پیٹھ چھ زانہ ون
 سے گو سار سو نہ بینز اکہر میت تی ہی ریشی جی پران
 دو تم پر ون پیٹھ تر من امیک ویا کھیان چھی کران
 وانہ ناوتھ او چھ جا یہ پیٹھ ہی منتر استیا ان کران

ही नित्यरूपी दौयुम मन्त्र चोन कामः राज नाव
 आसुवन।
 सुय मन्त्र निष्कल वनिध कां ह पृथ्वी प्यठकु जानुवन,
 सुय गव सारसोत बीजु अक्षर सततप ही शेष
 द्वि परान।

बोतम परवन प्यठ ब्राह्मण अभ्युक्त व्याख्यान
 द्वि करान,
 वातुना विथ ओं चि जायि प्यठ यी मन्त्र उश्चारण
 करान॥

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्तिकरणे दृष्ट प्रभावं बुधै,
 स्तातीर्थीकमह नमामि मनसा त्वद्गीजमिन्दु प्रभम्।
 अस्त्वौर्वोपि सरस्वतीमङ्गुगतो जाड्याम्बु-
 विच्छिन्नये १

गौः शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं
 विनासिद्धिदः॥

ترتیمہ بہر اکھرک مہا وانی کھلنس سپٹھ گاٹلی وٹھان ۶۶
 تھہ اکھرکس ترندہر دفتہ سو ستس جھیس بے مہیہ کتی تر نام کران
 سوروپ تھہ سہ لوگ دار نایہ سوتے ستیدی دوان
 مورکھ روپی پاپیس گالنے باپتھ واڈو نامی اگن بنان

त्रेयमि बीज अक्षरक महिमा वाणी सुतुनस प्यठ
 दाना बुद्धान,
 तथ अक्षरस त्रन्दुर दिफति सोसतिस कुस वमन,
 किच्य प्रणामकरण
 सोरूप बनिध सु योग दारनायि रोसतुय सेदी
 दिवान,
 मूर्ख रूपी पापियस गालन बापथ वाडव नामी
 अंगुन बनान ॥

एकैकं तव द्रवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वास्थितं
व्युत्क्रमात्॥

यं यं काममऽपेक्ष्य येनविधिना केनापि वा
चिन्तितम्,
जप्त वा सफलीकरोति सहसा तंतंसमस्तं नृणाम्॥
(६)

ہی دپوی لیس پر چون بیزا چھر یو دکتے
دوشہ رؤس یا دوشہ سوس یا ولطہ شیہ دیون یو
ییمہ شیمہ کامناہ با پتھ لیس منش آسہ زیان
تمس منشس بوئرس منر ساری مطلب چھی نیران

ही दीवी युस परि चोन बीजु अक्षुर
यौद कुनुय,
दूषि रौस या दूषि सौस या बुलटु स्यौद या
ब्यौन ब्यौनुय॥

येमि येमि कामनायि बापथ युस मनुश आसि जणान,
तमिस मनुशस बवुसरस मंज सारी मतलब छी
नैरान ॥

वामे पुस्तक चारिणीमऽभयदां साक्षस्त्रजं दक्षिणे,
भक्तेभ्यो वरदानपेशतकरांकरूपर कुन्दोज्ज्वलाम्
उज्जृम्भाम्बुज पत्रकान्त नयनस्निग्धप्रभातो-
किनीं,

ये त्वामऽस्य न क्षीलयन्ति मनसा तेषां
कवित्वं कुतः॥५॥

قہوریں اٹھس ٹنڈر تے پوٹک دور مت ہی بوآئی
 دُچھنس اٹھس نہ پال بیہ رستے اُجھے دوآئی
 بیاکھ اٹھ چوں پیوش زن بکھتیں وِہ دوآئی
 پیوڑ امتی سمبوشہ نیترو زن تہ بکھتیں وُچھائی
 یس یہ دیان کر چوں اسیا من آس پر سن بنائی
 آسہ کا ہنہ سہ پیچھ نہ گتس ٹنڈر تے چھ وانا وائی

खोवशिष अथस मंजं चै पोस्तक दोरमुत ही भवानी,
दंदिनिश अथस जपुमाल वैयि सुत्य अभय दिवानी।
ब्याख अथु चीन यम्पोशि जन बखत्यन वर दिवानी,
पोत्यसुत्य यम्पोशि नेत्रव जन च्चु बखत्यन बुद्धानी।
युसयि ध्यान करि चीन अम्पहा मन तस प्रसन्न बनानी
आसि कांह सु यथ जगतस मंजं तस किदानी बनानी।

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीकपटल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
 सिञ्चन्तीमऽमृत द्वौरेव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।
 अश्रान्तं विकटस्कण्डाक्षर पदा निर्वाति वक्त्राम्बुजा,
 तेषां भारति! भारती सुर सरितकत्तोलने लोमिवत् ॥
 (८)

یہ سفید پوش و لبہ پٹھ خوش ترے دیتی دھانی
 و رشن کران امریتہ کے ترھٹھ تمہ جے یو آئی
 یس یہ دیان کر برہانڈس مشہر چہ تیس نیرانی
 بے روک پامھی لشہر مون کہ لشہر سرسوتی ہنر وانی

युस सफेद पम्पोश डल पाव्थ
 खोश चै दि कती बुझानी,
 वर्शुन करान अमरथतुकुव कट,
 तमिचै चिवाणी ।
 युस यि ध्यान करि ब्रह्माण्डस
 नज छितस नेरानी,
 बे रोक पाव्थ तसुन्दि मोखु निशि
 सरस्वती हुंज वाणी ॥

ये सिन्दूर पराग पुञ्जपिहितां त्वत्तेजसां द्यामिमा,
 सुवी चापि विलीनयावकरस्य प्रस्तारमऽग्रामिव।
 पश्यन्ति ह्यममऽप्यऽजन्ममनसस्तेषामऽनङ्ग उदर,
 कलान्तस्त्रस्त कुरङ्ग शावकदृशो वश्या भवन्ति स्फुटम्
 (६६)

چانه تپیز کی نیس اکھا وچھ سیںدیر بری تھے آکاش
 پر فتویٰ لاچھ رنگہ فٹسہ وچھ آستس منس باس
 نہ ڈلے وئی کھینہ ماترس لیس یہ دیان دارانی
 سارے شکھتی تیر یہ روپ بہتہ تمن چھ قبولو آنی
 تیر شکھتی یمن کامہ دلپ تیر ستر ستر کیر آنی
 تیر پاٹھی بہتہ کھو تر مت مرگہ بچہ کاتہہ چھ رٹانی
 (۹)

चानि तीजु किन्त्य युस अखा बुद्धि सेंदरि बयंथुय आकाश
 पृथ्वी लाद्धि रंगु फंदमुत्त बुद्धि आस्यस मनस बास।
 न उलुबन्त्य ह्यणु मात्रस युस यि द्यान दारानी,
 सारुय शखती त्रयि रूप वनिथ तिमन द्विकोबू यिवानि
 तिमु शखती यिमन कामदीव तीर सुत्य बन्द करानी,
 तिथु पाठ्य विथु खूचमुत मृगु बचि कांह ह्युय रटानी।

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलाऽङ्गुदधरामाऽब्जकाञ्चीस्रजम्
 ये त्वां चेतसि तद्गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितम्।
 तेषां वेश्मसु विभ्रमादऽहरहः स्फारीभवन्त्यशिचरं,
 माद्यत्कुञ्जरकर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः॥
 « २० »

چمک دین سوئے موخته کنه واجه منتره بشتر لاگانی
 سوئے سنتر تاگر پترله وئی چمکه تر کس گند آنی
 لیس یر دیان چون منتر منس تیشی پیچ لیس لاگانی
 تس روزر بشان شوکت گرس تریر تامنه لخمی
 سوئے لخمی یوسه مد شو کنه چه خسر کتر پاتش تر تر لانی
 سار یی سمدید ایس لیس پور شس قرار کره چه روزانی
 « 10 »

वसकवनि सोनु मोरवतु कनुवाजि नहुबंद चुलागानी,
 सोनु सजं तागुर प्रजलबुन्य छख चु कमरस गंडानी।
 युस यि द्यान चीन मजं मनस तथ्य प्यठ दुसलगानी,
 तस रोजि शानु शौकत गरस चेर तामथ लहमी।
 सो लहमी दोसु मद हंस्य कनुचि हस्काच पादव चञ्चल
 लारेय सस्पायि तस पुरुषस करार करिथ छि रोजानी।
 आसीनी

आर्भक्याशशि खण्ड मंडित जटाजूटां नृसुण्डखजं,
 बन्धूक कुसुमारुणाम्बर धरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
 त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनानाऽपीनतुङ्गदतनी,
 मध्ये निम्नवलित्रयाङ्किततनुं त्वद्रूप संवित्तये ॥२१॥

شَوْبِه پُونِه چَانِه جِطِه مَكَلِه نَالِي مَنَشِه كَلِه مَالِه سَوَس ۴۴
 بَنَدُو كِه پَوَشِه رَنگِه سَوَرخ پَوَشَا كِه تَلِه مَوَر دَاسَنِه سَوَس
 كَمَرَس تَاگُر گَنْدِث تَوَتُر بَوَز تَر تِه نِيَقَر دَارَانِي
 چُون سَوَر رُپ رَانَنِه بَا پَتِه يِه دِيَان كِه جِي سَوَرَانِي

॥१॥

शूबुनि चानि जटु सुकटु नाल्य मनशि

कल, माल, सौस, ४४४

बन्दूकु पोशि रंगु सोरुख पोशाकु

तल, नोरदु, आसनु सौस।

कमरस तागुर गन्डिथ चौतरबोज़

त्रै नैथुर दारानी,

चोन सोरुप जानु बापथ यि

द्यान बंखती छि सोरानी॥

जातोऽप्यल्प परिच्छेदे क्षितिभुजां

सामान्य मात्रे कुले ।

निःशेषावनि चक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापीकताः

यद्विद्याधर वृन्द वन्दित पदा श्री वत्स रत्नी

देवि ! त्वच्चरणम्बुज प्रणतिजः सोऽयं

प्रसादीदयः ॥ ३२ ॥

काहे राजा मोमूली कोलस सज आसि जा भूत,

कुल पृथ्वी प्यठ करान आसि राज

तस चक्रवर्तस पादन दीबता द्वि पूजानी

॥ ३२ ॥ दु सहिमा तस चानि पादि पूजायि हन्नज

मेहरवानी ॥

आरुत प्रेस भू ।

०

चण्डि! त्वञ्चरणाम्बुजनिर्विघ्नो बिल्वी दलोत्सुष्ठः।
 त्रुत्थत्कण्टककोटिभिः परित्यक्तं येषां न जग्मुः कराः॥
 ते दण्डाडकुशा चक्रवाचकुल्लोकाश्चीवत्स मत्स्याङ्गितै-
 जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवाम्भोजप्रभैः पाणिभिः॥
 «२३»

ای ژندی چانی ژرن پوزایر سیچ لیس آتانی
 بیل لیش ژر فیند ژر کندی آتانی لیس چر چینی
 لوانگ تیر کمانه بیست لیس کندی خسته ستی و سانی
 تتهی آتانی سوس پورش بیته زخمه راجه باراجه آتانی
 (۱۳)

ही दण्डी चान्यचरणं पूजायि प्यठ युस अनानी,
 व्यल पोश त्रुत्थ त्रुत्थ कण्डि सूत्य अद्य
 यस द्वि द्यनानी ।
 हांग नु तीर कमनि हुत्थ यस कण्डि खशि
 सूत्य वसानी ,
 तिद्य अद्य सोस पोरुष बैयि जन्मु राजि
 महाराजि बनानी ॥
 (13)

विप्राः क्षोणि मुजो विशस्तदितरे क्षीराज्य मत्वा सवैः
 त्वां देवि! त्रिपुरे! परापर मयीं संतर्प्य पूजाविधौ।
 यां यां पार्थयते मनःस्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवम्,
 तां तां सिद्धि मऽवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैर्बिघ्नीकृताः॥
 ॥२४॥

برہمن راجہ ویش یا شدہ چانی لہذا کرا آئی
 دو دگہو، ماچھ، شراب، پوزایہ کنی تھے این کرا آئی
 شروایہ کنی یہ کیشترھا منگن چھا کہ ضرور کن دیوانی
 بہ راک یا بھو وگنہ روئے سیدی سہ پراوانی
 ॥۱۴॥

ब्रह्मण राजिवेश या शुद्ध चानी पूजा कराणी,
 दोद, श्यव, माछ, शुराब पूजायि किन्त्य
 चै अर्पन करानी।

श्रदायि किन्त्य यि केका मंगन क्वख
 जोरुर तिमन दिवानी,
 बे रोक पाठ्य बैगन, रोस्तुय सेदी
 सु प्रावांनी ॥

शब्दानां जनी त्वज्ज सुवने वाग्वादिनीत्युच्यते,
 त्वतः केशवदासः प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति सफल्
 लीयन्ते क्षणं च कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेष्वमी,
 सा त्वं कानिहोपि नय रूपमीहिया शक्तिः परा-
 गीयसे ॥२५॥

५। माता त्वं लोत्सु मन्त्रं शब्दं रूपं च आसानी,
 जगत्सु मन्त्रं नाव चोमुय सरस्वती द्वीवनीनी ।
 जैन निशे केदार, यन्द्वाज, दीवता प्रकट वनीनी,
 कल्प अन्तरा प्रहादिक चैव निशि लव गङ्गाणी ।
 कोरुतान्य न सोरना सोहया सोलतिस थंज
 शक्ती द्वीवनीनी ॥२५॥

ही माता विवववस मन्त्र शब्द रूप च आसानी,
 जगत्सु मन्त्र नाव चोमुय सरस्वती द्वीवनीनी ।
 जैन निशे केदार, यन्द्वाज, दीवता प्रकट वनीनी,
 कल्प अन्तरा प्रहादिक चैव निशि लव गङ्गाणी ।
 कोरुतान्य न सोरना सोहया सोलतिस थंज
 शक्ती द्वीवनीनी ॥२५॥

देवाणां त्रितयं त्रयी हुंत भुजां शक्ति त्रयं त्रिस्वरा-
 स्यैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करसथो त्रिब्रह्मवर्णाश्च यः॥
 यद्विष्णुश्च जगती त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं,
 तदसर्वं त्रिपुरीति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वता॥
 (१६)

دلپوش منتر تر تریے، اکن منتر تر اکن تریے
 شکستی منتر تر شکستی تریے، سورن منتر تر سورن تریے
 ورنن منتر تر ورنن تریے، جرن منتر تر جرن تریے
 بلو، بلو، سوہ گایتری تریے، است تر تریے
 بیرکیشتر صا، نیم تر گون سورن وریے، سورن تریے
 لیکن تریے - (۱۶)

दीवन मंज अनवध दीव चय, अग्नित मंज त्रुअग्नचय,
 शक्ती मंज त्रु शक्ती चय, स्वरण मंज त्रनुवलस्वरचय।
 वर्णन मंज त्रु वर्ण चय, गंगा, जमना, सरस्वती चय,
 नू, भवा, स्वाहा, गालत्री चय, लत चय ध जान न्दु चय।
 यि केंद्रा नियम त्रिगोण स्वरूप, सोल्य पंत,
 पतु पकान चय ॥ 16 ॥

लक्ष्मीं राज कुले जयां रणभुवि ह्येमङ्करीमध्वनि,
 क्रव्यादद्विप संपभाजि शवरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
 भूत, प्रेत, पिशाच, जम्बुकभये स्मृत्वा महाभैरवी,
 व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विषदस्तारां च तोय
 पत्वे ॥१७॥

राजग्नं मंजरीं लोमि, जे ते मंजरीं लोमि
 वल्लभ वल्लभ कलियान रूपा खोफनाक जानुवरन
 कोमल सैष्ठ्य चिके न्द्रगा, पिशाचन निशि
 मंजरीं जायन दान चोन स्वरन, तिमिर आदुर
 करानि

॥१८॥

राजग्नं मंजरीं लोमि, जयचे मंजरीं लोमि
 वल्लभ वल्लभ कलियान रूपा खोफनाक जानुवरन
 मंजरीं शिकारि चय।
 कोमल प्यठ करव च दुर्गा, पिशाचन निशि
 भैरवी।

मंजरीं जायन दान चोन स्वरन, तिमिर आदुर
 आयदा दूर करानि

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी,
सातङ्गी विजया जया भगवती देवि शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्कर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमवी माता कुमारी त्वसि ॥
(१८)

माया तू है, कुण्डलिनी तू है, क्रिया तू है, मधुमती तू है,
काली तू है, कला तू है, मालिनी तू है, सातङ्गी तू है,
विजया तू है, जया तू है, यखतिधार वाज्ज्य तू है,
त्रिपुरा तू है, परा तू है, परमवी तू है, माता तू है,
कुमारी तू है, त्वसि तू है, भैरवी तू है, शक्ति तू है,
शङ्कर तू है, वल्लभा तू है, त्रिनयना तू है, वाग्वादिनी तू है,
भैरवी तू है, ह्रींकारी तू है, त्रिपुरा तू है, परा तू है, परमवी तू है,
माता तू है, कुमारी तू है, त्वसि तू है ॥
(१८)

माया चूय, कुण्डलिनी चूय, क्रिया मधुमती चूय,
काली चूय, कला चूय, मालिनी सातङ्गी चूय !
विजया चूय, जया चूय, यखतिधार वाज्ज्य चूय,
त्रिपुरा चूय, परा चूय, परमवी चूय, माता चूय ॥
कुमारी चूय, त्वसि चूय, भैरवी चूय, शक्ति चूय,
शङ्कर चूय, वल्लभा चूय, त्रिनयना चूय, वाग्वादिनी चूय,
भैरवी चूय, ह्रींकारी चूय, त्रिपुरा चूय, परा चूय, परमवी चूय,
माता चूय, कुमारी चूय, त्वसि चूय ॥
(१८)

आई पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रि क्रमाद्यक्षरैः ,
 काद्यैः हान्तगतैः स्वरादिभिरथो हान्तैश्च
 तैस्तैस्वरैः ।

नामानि त्रिपुरे ! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
 तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥
 (१६)

अ' प्यठु सारिनुय अहरन दोयि त्रैयिक्रानु मिलनविध
 'क' प्यठु 'क्ष' तान्य शब्द रत्नाविध नाम
 ही त्रिपुराय बृह (२०) सास नाव चान्य रहस्य
 रूप बनानी १
 ही भैरव पत्नी तिमन रहस्य नावन ब
 प्रणाम करानी ॥
 (१७)

बोद्धव्या निपुणं बुधैःस्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्धृतं,
 भारव्या त्रिपुरेत्यनन्य मनसी यत्राद्यवृत्ते स्फुटम्।
 एक द्वित्रिपदक्रमेण कथितं स्तवत्पाद संख्याद्वारे-
 सन्त्रोद्धार विधिर्विशेष सहितः सत्संप्रदा -
 यान्वितः॥२०॥

نوائے چھ گائیں سی توڑے کن من لاوتھ ۱
 چاہن پاؤن ہند شمار کتوا چھ سو کوئی نہ ناوتھ
 گوڑنیکہ دویمہ تریسیمہ یکہ کریمہ منتر و دار مناوتھ ۲
 رتنہ پیمرا دایہ سو سراپی تو پاؤن مئےڑے کن من ٹھیکراوتھ

॥२०॥

ज्ञाननुय द्युय गादृत्यन यी तवु चै कुन मन लगविथ,
 चान्यन पादन हुन्दि शुमार क्यो अइरव किन्य
 निलुनाविथ।

गोडुनिकि दोयिमि त्रैयमि पदु क्रमु सन्त्रोदार
 बनाविथ ;

रुति सत्संप्रदायि सोस यी तवु ओन मे चै कुन मन
 ठीकराविथ॥
 ०
 ॥२०॥

सावद्यं निरवद्यंऽस्तु यदि वा किं वावया चिन्तया
 नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त
 सचिन्तयापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जावमान
 त्वद्वक्त्या सुखरी कृतेन रचितं यस्मिन्यापि ध्रु
 (२२)

نيسند يايه سوس يانيسند يايه روس فکرا ايج تراوخته
 ليس يه ستوتر سکا شيه منش پير سوس بکعتي چاني
 پشمن يالنس لوتير زانته عني ته ورتا پير اوم
 چانه بکعتي هيند زور بکواسي هيند يه توف تانبا اوم
 (۲۱)

मैन्धादि होस वा मैन्धादि होस फिकिरा अनिच
 नोविथ
 वुस यि स्तोत्र काहे मनुष्य परि आस्य भवती
 जोनी
 पनुनिस पानस लोचर जानिथ मे ति दृढता
 प्रावुन
 जानि भक्ती हुन्दि जोर वकवांस्य वनिधयि तोता
 कवांस्य
 (२१)



चर्चास्तवः

—ॐ नमः त्रिपुर सुन्दरै—

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं,
 मौली हृदेन निहित महिषासुरस्य ।
 पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
 मञ्जीर शिञ्जत मनोहरमऽम्बिकाया ॥६॥

पाद चान्द सोन्दर आनन्द दायक चन्द्राङ्गन मोव यथ
 मोखतु माल ,
 येमि सत्यजीर दिव्य महिषासुरस्य दण्ड मात्रस मञ्ज
 वोत सु पाताल !
 सुख रोनि पाद चोन रुज्ज्वलन मे हृदयस ,
 युथ व अम्बिकाय वोजु श्रोनि श्रोनि ताल ॥
 सुख मनोहर पाद वन्यतन मे ही तो जे जे वाहक मे
 होव्यतन कमाल ॥

सौन्दर्य विभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-

संपत्ति कल्प तरुवस्त्रपुरे ! जयन्ति ।

एते कवित्व कुसुद प्रकरावबोध ,

पूर्णेन्द वरः यिजगज्जननि प्रणामाः ॥२॥

॥ १ ॥ प्रथम सुन्दरिका विलासिका
 त्रन लोचन भद्राज समिदाये भद्रिका
 प्रथम कुतयाये रूपाय लोचन भद्रिका
 ॥ २ ॥ अग्रेष्ठ रूपाय लोचन भद्रिका
 ॥ ३ ॥ अग्रेष्ठ रूपाय लोचन भद्रिका

यिस प्रणाम सौन्दर्यकि विलासिका जाय वनिध

थंय शुमारकरनु यि

त्रन बवनन हुन्दि राज संपदायि हुन्ध्य कल्पवृक्ष

हिन्ध्य विस प्रणाम कीव

यिस प्रणाम कवितायि रूपा कुसुद पोश फौलरावन

बावथ चन्द्रमूकी बनान

हीजगथ जननी वातनय नै म्यान्व यिध्य हिन्ध्य प्रणाम

० हुस वचैय कुन करान ।

देवि ! स्तुतिव्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते,
 वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति ।
 तस्मान्निसर्ग जडिमा कतमोऽहमत्र,
 स्तोत्रम तव त्रिपुरतापन पत्नि ! कर्तुम ॥३॥

چاڙي تو تاڪرئس ڀڄڻ ڇڏي نه سامر ته
 ٻي سڀيت ته دلوتاجڻ بنا ٿي !
 هي ترن تاپن گالوني محيس مؤرڪه به آهسته
 کٽه سامر ته به ڪر تو تاجاڻي -
 (۳)

चान्य तोता करनस प्यठ कुनु सामर्थ,
 ब्रह्मपत तु दीवता जड बनानी !
 ही त्रन तापन गालुबुध्य खुस मुख
 बे आसिथ,
 कति सामर्थ बे कर, तोता चानी ॥०॥

मातः ! तथापि भवतीं भवती व्रताप,
विच्छिन्नवेस्तुति महार्णवकर्णधारः ।
स्तोत्रं भवानि ! समवच्चरणाविन्द,
भक्ति ग्रहः किमपि सां मुखरी करोति ॥४॥

ہی ماما زائتہ یہ سمسار کھٹی دوکھ
ژڑنہ باپتہ کرم تو متا یہ چانی
یہے تو متا سمسار ساگر س
بہنو میانی بیہہ پائز میانی
چانہ پاؤ کملہ کے لولچہ آوشر
بکواسی بیٹو چھٹے تو تا کر آنی
«۳»

ही माता ज्ञानिथ यि सम्सार कठिन्य दोख,
ब्रह्मबापथ करुण तोतायि चानी ।
यिहय तोता सम्सार सागरस,
बनि नाव म्यान्य बैयि हान्ज म्यानी ॥
चानि पादि कमलु के लोलुचि आविशि,
बकवास्य ह्युव छुसय तोता करानी ॥

سُوئے جگمگتی بھبھتی بھبھتی,
 جاگرتی تاتھایکھوتی بھبھتی بھبھتی ।
 موہن بھبھتی بھبھتی بھبھتی रुणद्धि ,
 लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः ॥
 (५५)

بڑھا روپیہ زنگتس کران یاد ترے
 ویشنور روپیہ سٹائن کران ترے
 روڈر روپیہ سٹہار آخرس کران ترے
 مہ دیوان تہ بیہ تہہ تہہ گالان ترے
 لیلایہ پیہ چاہے چھس دھیان رنگہ رنگہ
 ہے ہے کار آسے چاہے لیلایہ (۵)

ब्रह्मा रूपु जगतस करान पादु चय,
 वैष्णू रूपु पालन करान चय ।
 रौदर रूपु समुहार आखरस करान चय,
 मुह दिवान तु बैधि तथ ति गालान चय ॥
 लीलायि यिसु चानि ब्रुस बुद्धान रंगु रंगु,
 जय जय कार अस्य नय चान्यन लीलायिन्य ॥

यस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुज पत्र गौरि,
 गौरि! प्रसाद मधुरां दृशमादधासि ।
 तस्मिन्निरन्तरमऽनङ्ग शशव कीर्णा ,
 सीमन्तिनी नयन संततयः पतन्ति ॥६॥

ہی گوری پمپوشہ رنگہ صفایس
 امریتہ نظر چھکھہ تر تراوانی
 تس پہٹ نہتہ نیمہ ساریے یوگنہ
 کامدیوہس زن چھ و ش گڑھانی
 «۴»

ही गौरी पम्पोशि रंगु सफ़ा यस,
 अमरयत् नजर छख चू त्रावानी ।
 तस प्यठ नैति नेमु सारेय यूगिनीयि,
 कामदीवस जन छि वश गङ्गानी ॥

पृथ्वी भुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य,
 विद्याधर प्रणति चुम्बित पाद पीठः।
 यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणयः स एष,
 स्वत्पाद पंकजरजः कणजः प्रसादः॥
 (७)

أدين راحس كهر او سپه گران میطی
 و دیادر تہ دلپوس جی آدین
 چکرورتی عوید اوس تمی پرومست
 چیانہ یاد گر دمسند انو گزیہ ستی

((6))

उदयन राजस ख्रावि प्यठ कणन मीर्य,
 विद्याधर तु दीव तस क्खी ओदीन।
 चक्रवर्ति ओहदु ओस तस्य प्रोवमुत,
 चानि पादु गरदि हुन्दि अनुग्रेह सत्य॥

((7))

त्वत्पाद पङ्कजरजः प्रणिपात पूतै ,
 पुण्यैरऽनलपमऽतिभिः कृतिभिः कविन्द्रेः॥
 क्षीर क्षपाकरदुकूल हिमाऽवदाता ,
 कैरपिवापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्तिः ॥
 « ८ »

मी دلوی چائین پیکو شہ پادن
 بشنر گر دیپٹہ کور نیمو سپر نام
 تم بنے یہ وہ تم تپنر بوز سوس
 دانا وہ تم کوی پروو تمو نام
 دو در ندر مو رشیم و ستر بیہ شینہ یو
 صفا بنہ ترن بوئن مشر بنیمہ نیمام
 (۸)

ही दीवी चान्यन पस्पदोशि पादन ,
 हुंजि गरदि प्यठ कौर यिमव प्रणाम ।
 तिम बनेयि दोतम तीजु बोज सौल ,
 दाना वोतम कवी प्रौव तिमव नाम ॥
 दोद चन्द्ररमु रीशिम वस्त्र बेयि शीनु पाठ्य ,
 सफा बनिध त्रन बवनन मन्जु बनेयि नेकनाम ॥

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा,
 मुद्रीपित प्रियतमामदरुक्त गीतिन ।
 नित्यं भवानि ! भवतीमुपवीक्ष्यन्ति,
 विद्याधराः कनकशैल गुहाहेषु ॥
 « ६ »

کلبه و رنگه پوشو سستی چانی پوزا ۱
 نیت سستی چیم گیوان چانی گیت
 نیت سستی گفاری گران منتر
 وایان و دیادر سوز به ساز کستی
 « ۷ »

कल्पवृक्ष पेशव सूर्य चान्द्य पूजा,
 लोल सूर्य कि ग्यवान चान्द्य मोत ।
 न्यथ समीरके गुफा रूपी गरन मङ्ग,
 वायान विद्यादर खोज तु साज
 कुर्य

लक्ष्मी वशी करण कर्मणि कामिनीना,
 माऽकर्षण व्यति करेषु च सिद्धमन्त्रः।
 नीरन्ध्र मोह तिमिरच्छिदुर प्रदीपो,
 देवि ! त्वदऽङ्घ्रि जनिता जयति

प्रसादः ॥
 (१०)

چانه ژر نه کمايه سپوايه ممشه پړ ساد
 وش کړان لڅي مې ته بيه سيدين
 شکهي سته پړاوان مېه روڼي گيښه
 انه گڼه گالان ژانگه سته تړن
 (۱۰)

चानि चरण क मत्तु सीवायि हुन्द प्रसाद,
 वशी करान लक्ष्मी तु बैयि सैदियन।
 शक्ती सु प्रावान मुहु रूपी गैनि,
 अनिगट गालान चांगि सत्य जन ॥

(10)

देवि! त्वदंघ्रि नखरत्न भुवो मयूरवाः
 प्रत्यग्र मीलिक रुचोमुद मुद्वहन्ति।
 सेवानति व्यतिकरे सुर सुन्दरीणां,
 सीमन्त सीसि कुस्मस्तव कायितं यैः॥
 « ११ »

ماج بوآنی چاين تر تن بهندي نه زتن
 موخته ريفتي داران زن کړن
 يو گنیه ييله پرن پيوان تر تن بهندي
 تمه چيکه پړ ز لان مس ته سمه تمه
 « ۱۱ »

शोज बवान्य चान्यन चरनन हुन्द्य
 नमु रत्न,
 मोख्त् दिप्ती दारान जन किरण।
 दूगिनियि यैलि परन प्यवान चै
 चरनन प्यठ,
 नमु चमकि प्रजलान मस तु समुतिमने॥
 « ११ »

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीक्षी दीप्ति
 दीप्तं ,
 मध्ये ललाटमऽकरायुधरश्मि चित्रम् ।
 हृच्चक्र चुम्बि हुतभुक् कणिकानु-
 रूपम् ,
 ज्योतिर्यदेत दिदमम्ब ! तव स्वरूपम् ॥
 (१२)

۞ مآثرے مشک شہر زن پز زون
 ۞ رام رام بندہ فی دوتی محسوس
 ہر دلیں مشتر الہی جیوتی سورویہ زن
 مآج چون سورویہ چھے پرکاش آسون
 (۱۲)

साता है नरतक ब्रन्दुर जन प्रजलवुन ,
 राम राम बंदरुन्य दन्य चनकवुन्य ।
 हृदयस मज अग्री ज्योती सौरूपजन ,
 माज चीन सौरूप हुय प्रकाश आसुन ॥

सिन्दूर पांसु पटलचकुरितामिव द्यां ,
 त्वत्तेजसा जतुरम स्नपितामिदोर्वीम् ।
 यः पश्याति क्षणमापि त्रिपुरे विहाय,
 ब्रीडां मृडानि सुदृशस्तमनु द्रुवन्ति ॥
 (१३)

सैन्दूरि गरदि सोस्तुय जौरमुत आकाश

लाहि रंग पृथ्वी श्रान करिथ जन ।

युस बुद्धि क्षण मात्रस लाज जाविथ,

तस सैदी माज बवान्य पतु दोरान ॥

॥१३॥

सैन्दरि गरदि सोस्तुय जौरमुत आकाश,
 लाहि रंग पृथ्वी श्रान करिथ जन ।
 युस बुद्धि क्षण मात्रस लाज जाविथ,
 तस सैदी माज बवान्य पतु दोरान ॥

(13)

माताः। मुहूर्तमर्पि यः स्मरति स्वरूपं,
 लाक्षारस प्रसरतन्तु निभं भवत्याः।
 ध्यायन्त्यनन्य मनसस्तमनङ्गतप्ताः,
 प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्वगुणं तरुण्यः॥
 « २४ »

ہی مائیں مہرورس دیشان کری
 چون سورूप لاکھ رنگ تارِ سماں
 سوندھ جوان اثر نہ رہے نہ ڈلو نہ غنہ
 کامناہ تارِ نثر تفس چھ سحران
 « ۱۳ »

ही माता युस मुहूर्तस ध्यान करी,
 चोन सौरूप लार्छि रंग तारि समान।
 सोन्दरजवान अरु रहु न डलवनि मनससु
 कामनायि ताविमत्तु तस छि सुमरान॥

आधार मारुत निरोध वशेन वेषां,
 सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि ।
 दीप्तं हृदि स्फुरति देवि ! वपुस्त्वदीयं,
 ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्या ॥
 « १५ »

मूलादारक पिरान भूत कर्तृ भूत
 सैन्दरि सत्य रंगमुत परपोश जन ।
 हृदयस मंज अथ परपोशस प्यठ ,
 चीन स्वरूप बासान राथ क्यो द्यन ॥
 तिमनुय पोरशन हुन्द छि ध्यान दारान ,
 सैद्य सादु दीवताह दु बैयि सथजन ॥
 « १५ »

मूलादारक प्राण बन्द करिथ विमन ,
 सैन्दरि सत्य रंगमुत परपोश जन ।
 हृदयस मंज अथ परपोशस प्यठ ,
 चीन स्वरूप बासान राथ क्यो द्यन ॥
 तिमनुय पोरशन हुन्द छि ध्यान दारान ,
 सैद्य सादु दीवताह दु बैयि सथजन ॥
 « १५ »

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति,
 रूपं त्वांऽम्ब ! नवधावक पङ्क्तिपङ्क्तम् ।
 तेषां सदैव कुसुमायुध बाणभिन्न -
 वक्षः स्थला नृगदृष्टो वशगा भवन्ति ॥
 (१६)

सिरि पिरुन्तु लिके प्रकाशे वोजलि रंग सोस
 लाकि रंग सोस यिम चीन द्यान दारान ।
 कायदीव सुन्द तीरु चचमाचि वक्कि सोस,
 अक्कु रक्कु तिमन सातहत कि रोजान ॥
 (१५)

सिद्धयि मण्डलकि प्रकाशि वोजलि रंग सोस
 लाकि रंग सोस यिम चीन द्यान दारान ।
 कायदीव सुन्द तीरु चचमाचि वक्कि सोस,
 अक्कु रक्कु तिमन सातहत कि रोजान ॥

(16)

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौर,
मणालोकते मनसि वागधिदैवतं यः ।
निस्सीम् सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य,
तस्य प्रसाद मधुराः प्रसरन्ति वान्वः ॥
(१७)

ایک نہ ریش منس منتر ز شدر مہ ہو چکے وں
سر سوتی رؤیہ چون دیان دارن
حد رؤس وانی مؤدرا امرتہ ہری سچھے
نیر تین نیر مل پسری واہ ہیوزن

((14))

विम पीरुश मनस मजं चन्द्रम् ह्युव चमकुल,
सरस्वी रूपं चोन द्यान दारन ।
हदु रीस वानी मौदुर अमर्यथ वर्यथुय,
नेरि तिमन न्यरमल प्रवाह ह्युव जन ॥
(17)

शर्वाणि ! सर्वजन वन्दित पाद पदमे,
 पद्मच्छद च्छवि विडम्बित नेत्र लक्ष्मिः ।
 निष्पाप मूर्तिं जन मानस राज हंसि,
 हंसि त्वमाऽपदमऽनेक विधां जनस्य ॥१८॥

ہی پاپ گاہِ پونی تریے یادِ کملن
 ساری زیلو بھی پر نامِ کراہی
 پمپوشہ بے رنگ کے دیتی ہندی پاہی
 جانی تیرے کمال چہرے شوبانی
 شود منشش چمکے تہہ سارے شہر
 رازِ ہنس بہش زن تہہ روزِ آہی
 تہہ چمکے ساد کس نانا پر کار کی
 دھوکہ تہہ داری آپد اور کراہی
 (18)

ही पाप गालुवन्य चैव पादिकमलन,
 सारी जीव ह्यी प्रणाम करोती ।
 पम्पोशि बरगुके दिप्ती हुन्द्य पाठ्य,
 चान्य नेत्र कमल छि शूबानी ॥

शोढ मनशस कख प्यथ सागुरस मज्ज,

राजु हन्स हिश ज्ञन नु रोज्ञानी ।

चुय कख सादुकरस नाना प्रकारुक्य,

दोष न दोष आपदा दूर करानी ॥

॥१८॥



इच्छानुरूपमऽनुरूपे गुण-प्रकर्षं,
संकरषणी । त्वमनुमृत्य यदा विमर्षि ।

जायेत स त्रिभुवनैकगुरुस्तदानीं,

देवः शिवोपि भुवनत्रय सूत्रधारः ॥१९॥

ہی سنکرشتی پنے لے یثصایے
ییلہ چکھ ترگین سوروپ پانہ داران
تیلہ ی دیوی ترین یونن ہند
کیول گورؤ شیونامہ چھو پیران
اوسے شومبو ترن یونن ہند
نومود پامھی سوتر دارمہ نان

॥१९॥ ही संकरषणी पनुने चक्याये ,

यैलि कख त्रुगोण खरुव पानु दारान ।

तेलि ही दीवी जन खवनन हुन्द ,
 केवल गौर शेषनाथ कु बोपदान ।
 अद सुय शोम्बू जन खवनन हुन्द ,
 नौसूद पाठ्य सूत्रदार बनान ॥१७॥

योयं चकास्ति गमनार्णव रत्नमिन्दु—
 र्योयं सुराऽसुर गुरुः पुरुषः पुराणः ।
 यद्वाममऽर्थमिदमऽन्धक सूदनस्य ,
 देवि ! त्वमेव सदिति प्रतिपादयन्ति ॥२०॥

آگاه شدہ سؤدس منہ رتن یوسف
 شویا ژندرس چھے آسانی
 دیون تہ اسرن یس گور و چھے آسہ وئے
 نگوانس شکفتی یس دوا خے
 یوسف بہا دیو ستر چھے اردانگی سہ
 چھکھ تہے یر چھے مارج سید بنانی

आकाश सोदरस मंज रत्ननयोस,
 शूबा चन्द्रमस कथ अनानी ।
 दीवन तु असरत युस गुरुकु आसवनय,
 भगवानस शक्ती योसु दिवानी,
 योसु महादीव सुज द्वि अर्दीङ्गीसीय,
 कख चुय यि कु मांज स्थद बनानी ॥

—०—

॥ २० ॥

ध्याताऽसि हैमवति ! येन हिमांशुरशिम-
 मालाऽमलद्युतिरऽकल्मषः मानस-
 तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमऽनल्प कल्पः,
 मऽल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि ! वाग्विलासम् ॥

॥ २१ ॥

لیس سوہرہ چوں دیاں نہر مل کر تو سوہرہ
 تر نذر مس سمان اُندہر شود منہ کہنی
 ہی سندرہ می تہ چھٹ پٹ کران پاد
 سر سوئی ہند و لکاس انو گزیہہ کفر

॥ २१ ॥

युस सोरि चीन द्यान न्यरमल किरणव सौस,
चन्द्रमस समान अन्दर शोदु ननु किन्या
ही सोन्दरी तस च जह पट करान पादु,
सरस्वती हुन्द व्यकास अनुग्रह किन्य ॥
« 21 »



त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति,
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललितेत्यऽपराजितेति,
देवि! स्तुवन्ति विजयेति जयत्युमेति ॥
« 22 »

सारी से वाँतह्ने तर कामना दायक
लक्ष्मी, कला, बैँय माला रूप ।
दुश्मनस प्यठ जयि सौस चय ललिता,
छी वनान चैय जया चैय वोमा रूप ॥

सौँसुय वाँतिथ च कामना दायक,
लक्ष्मी, कला, बैँय माला रूप ।
दुश्मनस प्यठ जयि सौस चय ललिता,
छी वनान चैय जया चैय वोमा रूप ॥

उद्धाम काम परमार्थ सरोज षण्ड—
 चण्ड द्युति द्युतिमपासित षट्प्रकाराम्।
 मोह द्विपैतद् कदनौद्यत बोधसिंह—
 लीला गुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥
 « २३ »

یوسف کامراجی بیجاہر پش ڈلہ کے
 چھو لنہ باپتہ ستویہ روپ روزانی
 مولادار پتہ شش کرش مشہر
 وہ پاشی روپ یوسف تہ آسانی
 یوسف مہر شہی نس گالینہ باپتہ ۶
 گیانہ روپ ستہ گوچر چہ روزانی
 تہی سے بگوئی ماما ترہ برابہ کن
 گلی گنڈتہ نس پش پر نام کرانی

« ۲۳ »
 योसु कामराजि बीजाहर पश्योश डलुके,
 कोलनु बापथ सिचयि रुपु रोजानी।

मलाधार प्यठ षठ चकरस मन्ज,
 बीपासी रूप युस तति आसानी ।
 घोसु सुहु हस्यदिस गालुनु बापथ,
 झानु रूप सुहु गोफि छि रोजानी ॥
 तस्यसुय मगवती माता जेपरायि कुन,
 गुल्यगेनिडथ तस हुस प्रणाम करानी ॥
 (२३)



गणेश वदुकस्तुतारति सहाय कामान्विता,
 स्मरारिवर विष्टराकुसुमबाण वज्रैर्युता ।
 अनङ्ग कुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः,
 कदम्बवन मध्यगा त्रिपुर सुन्दरी पातुनः ॥
 (२४)

گنیش تہ بیرون چھے تہ تائے گریہ
 رتی سان کا دیلو تے سیوا کروں
 شوناختہ پانہ چھے آسن چو تے
 کا دیلو پوشہ پانن سہ دارون
 آننگہ آگر تسمو بیہ تر ییو سید یو تہ و ہر
 کد مہ جگلس مشر تہ روز آ فی

فيم روي عن ماج يتر لير موني نوري
 كنان في كبري تسم تة راجح عياني

॥२८॥

गणेश तू बैरुवन दूय तोला चैकरमुन्न,
 रंती सान कामदीव चै सीवा करवुन ।
 शिवनाथ पानु छुय आसन चोनुय,
 कामदीव पोदि बानन सु दारवुन ॥
 अनङ्गु कोससव दोदि त्रैयव सैदियव च
 वजिसुच,

कदम्ब, जंगलसु मंज च रोजानी ॥
 सुय रूप चीन माज ही जै पूरु सोन्दरी,
 कल्याण मे कै र्यतनम तु राहु म्यानी ॥

॥२९॥

त्वामैन्दवीमिव कला मनु भगल देश,
 मुद्रासिताम्बर तलामऽवलोकयन्तः ।
 सद्यो भवानि ! सद्यः कवलो भवन्ति,
 त्वामभावनहितर्धियां कूल कामधेनुः ॥
 ॥३०॥

ہم سنا کہیں غنڈہ تھے ٹنڈیرہ کلاہن
 وچ چھوڑا دی ہتی اکا شہ سٹوس
 ہن لوی جلدے چھی تم بنان دانا
 بیٹہ کو پتا پیر سوس
 چھوڑن دیوان تھے سارے مطلبین
 چانہ باو سا پیر کنی تم نہر مل بوڑھوس

(120)

यिम मस्तकस मजं चै चन्द्रसु कलाहिश,
बुद्ध चमकाव्य मुत्य आकाशि यौस ।
ह्री दीवी जल्दय ह्री तिम बनान दावा,
बैयि बडि कावितायि सौख्य ।
हृख तिमन दिवान चुय सारिनुय
मत्तलबन,
चानि बावुनायि किन्य तिम
न्यमल जेजसोय

उत्तमहेमरुचिरे ! त्रिपुरे ! पुनीहि ,
 चेतश्चिरन्तनमऽद्यौघ वनं लुनीहि ।
 कारगृहे निगड बन्धन पीडितस्य,
 त्वत्संस्मृतौ मृदिति मे निगडास्त्रटयन्ति ॥
 (२६)

तुमहेमरुचिरे ! त्रिपुरे ! पुनीहि ,
 चेतश्चिरन्तनमऽद्यौघ वनं लुनीहि ।
 कारगृहे निगड बन्धन पीडितस्य,
 त्वत्संस्मृतौ मृदिति मे निगडास्त्रटयन्ति ॥
 (२६)

तोवन्तुत सोन जन च चमकान त्रौपराय ,
 शोद कर नन में पायु खिल म्हाय्य लोन ।
 समसार रूपी जेलस मजं कुस ब ,
 कामनायि बेड्यन हुन्द कुम में बोर ।
 चानि सुमरनि किन्त्य जलद जलद कुथन में ,
 यैलि आसि आरतिस में अनुग्रह चोन ॥ २६ ॥

रुद्राणि ! विदुम मर्यां प्रतिमाशिव त्वां ,
 ये चिन्तयन्त्यऽरुणकान्तिमऽनन्य रूपास ।
 तानेत्य पक्षमलदृष्टः प्रसभंभजन्ते ,
 कण्ठाऽवसक्त मृदुबाहु लतास्तरुण्यः ॥

« २७ »

ہی رُودِ رانی نیس چائیس سورُ لیس وُجیر
 رُودِ رُتکلمِ بیری بیری سندی پانچمِ چیکان
 اُلو رُی رُولیس بیتی بیری دیان کر
 سوئدر نظرِ سوئس اڑد زردِ جوان
 زردِ سستی سب گرونی سب اکت تراوی تراوی
 انڈا نڈی رُودِ رُتکلمِ سوکران

« ۲۷ »

ही रौदरानी युस चानिस सौरूपस बुद्धि ,
 रौदरु शकलि सिरियि सुन्ध पाठ्य चमकान ।
 अपूरव रूपस विधय सुय ध्यान करि ।
 सौन्दरु नजरव सौस अरु रहु जवान ।
 जोरु सत्य तमि गदिनि प्यठअथ त्रान्यत्रान्य
 अन्ध अन्ध रुजिथ तस हीवा करान ॥

त्वद्रूपमुल्लसित दाडिम पु
मुद्गावयेन्मदन दैवतक्षरं
तं रूपहीनमऽपि मन्मथ
माऽलोकयन्त्युरु नितम्ब भरास्तरुण्यः ॥
«२८»

یُس چوں دِیان کَر دَآن پُوشِہ زَنگِ سوس
اَو ناستِہ کاغزِ اجبہ بِہِزِ اکھِہ سوس
یو دَوے روپیہ کئی آسِہ سے پیدِ شکل
اَزہ زَرہ وُچھِن نَرَن کاہِ لُپوش

«۲۸»

युस चोन द्यान करि दान पोशिरंगु सोस,
अविताशि कामराजि बीजु अक्षरस ।
योदवय रूपु किन्य आसि सुय
बदशकुल,
अद्धु रद्धु वुक्कन ज़न कामदीव तस ॥
«२८»

रुद्राणि ! विदुम मयीं प्रतिमाशिव त्वां ,
 ये चिन्तयन्त्यऽ रुद्रकान्तिमऽनन्य रूपास ।
 तानेत्य पक्षमलदृष्टः प्रसमंभजन्ते ,
 कण्ठाऽवसक्त मृदुबाहु लतास्तरुण्यः ॥

« २७ »

ہی رُودِ رانی نیس چائیس سورولیس وُجیر
 رُودِ رُودِ شکلی سیری سیری پائیک
 آپور رُودِ رُودِ نیس بیچی ہے دیان کر
 سوندر نظر سوس اڑے زرخ جوان
 زور سستی گرونی پیچھے آئے تراوی تراوی
 انڈا نڈی رُودِ رُودِ نیس سیوا کران

« २८ »

ही रोदरानी युस चानिस सौरूपस बुद्धि ,
 रोदरु शकलि सिरियि सुन्ध पाठ्य चमकान ।
 अपूरव रूपस यिष्ट्य सुय ध्यान करि :
 सौन्दरु नजरव सौस अह्नु रहु जवान ।
 जोरु सत्य तमि गदिनि प्यठअथ त्रान्यत्रान्य
 अन्ध अन्ध रुजिथ तस सीवा करान ॥

त्वद्रूपमुल्लसित दाडिम पुष्परक्त,
 मुद्गावयेन्मदन दैवतहरं यः ।
 तं रूपहीनमऽपि मन्मथ निर्विशेष -
 माऽलोकयन्त्युरु नितम्ब भरास्तरुण्यः ॥
 «२८»

یُس چون دِیان کر دآن پوشه زنگه سوس
 او ناسته کاغذ راجه بینر اکھر سس
 یو دوسے روپہ کنی آسہ سے ید شکل
 اترہ زترہ وچین زن کا دلپوش

«२۸»

युस चोन द्यान करि दान पोशिरंगुसोस,
 अविनाशि कामराजि बीजू अहरस ।
 योदवय रूप किन्य आसि सुय
 बदशकुल,
 अह्नु रहु वुवन जन कामदीव तस ॥
 «२९»

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धोदशो-
 स्त्वद्गुण
 ग्रामाऽकर्णानरागिताश्रवणयो स्त्वत्संगमृति
 श्चेतसि।
 त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कार्त्तनं
 वाचि मे ,
 कुत्राऽपि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि
 सा प्राप्स्यतु॥
 (२६)

ہی دلپوی چاہہ در شنگ ابلش
 ہر دم شیرازی نے منہ سے روزی تن
 چاہی گون بوزنگ تمناہ مئے آسوتن
 ہر روزی تن میں امن کسوتن
 نامہ سمرن تر ہنس منہ سے برگر
 چاہی پاد لوزامہ

چیت کہرتن کرہ روزی تن سے والی
 وہ پاسنا چاہی کم منہ سے گشتن

ही दीवी चानि दर्शनुक अबिलाश,
 हरदम नैत्रनुय मंजु में रखवतन ।
 चान्य गोण बोजुनुक तमना में आस्यतन,
 हरदम रखयतन म्यान्यन कनन ॥
 चोन नामु सुमरन च्यतस मंजु गरि गरि,
 चान्य पादि पूजा म्यान्यन अथन ॥
 चोन कीर्तन करवुन्य रखयतन में वानी,
 वापासना चान्य कम मतु में गंक्कयतन ॥

—०—

《29》

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्रत्र रश्मि ,
 स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै ।
 वागीश्वरी ! त्रिभुनेश्वरि ! विश्वमात-
 रन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥३०॥

سرسوتی تریلور سمندر زکاتہ ماما
 بیوتی شوری حاکم آسمانی ہے
 برہما شندر روڈر مریہ ژند رہ سگار
 ویشنو گیش حچے پوزان ژریہ
 شندر شیری واکتہ ژند بولس سارہ مریہ
 شکی گنہ مریہ میوت پرنام والیہ شیریہ

सरस्वती त्रुपूर सोन्दरी जगद्य माता,
 बवनेश्वरी वृष आसुदुन्य च्युय ।
 ब्रह्मा रोदुर यन्दुर सिधयि चन्दरमुकुमार,
 वेङ्गो गणेश ह्युय पूजान च्येय ॥
 अन्दरु नेवरु वातिथ त्रौबवनस सायंसुय,
 गुत्य गन्डिथ म्योन प्रणाम वातिनय च्येय ॥
 —०—

॥ ३० ॥

यः स्तोत्रमेतदनुवासरमीश्वरा याः,
 श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
 तस्यैषितं फलति राजनिरीड्यतेऽसौ,
 जायते स प्रियतमो हरिणेक्षयानाम् ॥ ३१ ॥

ليس به حيون ستوتير ترثه دونه لولسان
 يالكو بو زاد بنه ائس كلان
 حكر ورت راجه ليس كرسن لوزا
 سارري مطلب ليس چه نيران
 منج كامنا سيدتس چه سيدان
 سمه چه لوكنين من زيا د لوط بنان
 (३१)

युस यि चीन स्तोत्र परि प्रथ दोह लोलु सान,
 या कनव बोजि अदु बनि तस कल्यान ।
 चक्रव्रत राजि तस करन पूजा ,
 सारी मतलब तस छि नेरान ॥
 मनुच कामना स्यद तस छि सपदान,
 सुय छु यूगिनियन हुन्द, ज्यादु टोठबनान ॥
 (३१)



ॐ नमो महामायायै
 (अथ घटस्तवः) [तीसरा स्तव]

देवि ! त्र्यम्बक पत्नि पार्वती सति
 त्रैलोक्य मातः शिवे !
 शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे
 रुद्राणि कात्यायनि !
 भीमे भैरविचण्डि शर्वरि कले ! कालक्षये शूलिनि !
 त्वत्पाद प्रणतानऽनन्य मनसः पर्याकुलान्पा-
 हिनः ॥ ३॥

ہی دہلوی چھکھ تر تر مسکہ پتی
 ترے وِنان سستی ترے بارو تی
 ترے لیو کی منہ نہ مانا کھ گوتی
 ترے وِردِ دوان ترے محکمہ سر دانی
 ترے ترے پور سو ندری ترے رو درانی
 ترے بھیا نک روپ ترے شری
 ترے چٹھی ترے تر شول دارانی
 ترے کھ کالس ناش کرانی
 آئے سترن ترے یادن دینے کنی چھ ترے
 دیا کھتا یہ منہ نہ مانا کھ ترے

ہی دیوی کھن جو جرنک پلنی ،
 چے وِنان سستی چے پار وِتی ।
 چے لکھی ہنن ماٹا مگ وِتی ،
 چے ور دیوان چے کھن سڈانی ।
 چے ترپور سوندری چے رند رانی ،
 چے مہانک رپ چے شری ۔
 چے چٹھی چے تر شول دارانی ،
 چے کالی کالیس ناش کرانی ।

आय शरण चै पादन व्यनुकिन्य चै नेम्यधुव,
 व्याकोलतायि मन्जु रतिरह नृप ॥
 उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक मूढा इव,
 प्राप्त प्रौढमदा इवाऽतिविरह ग्रस्ता इवाऽतः क्षा-
 ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
 र्योक्तोपाधि विवृद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभुवः
 ॥२॥

مُتَرَاهِ تَهْ بَرَاهِمِ سَوَسِ زَمِرِ كُنِي مُوَرِحْتَهْ نَشَبِ سَوَسِ
 دِرِ سَنِ تَرِ تَرِ تَرِ چَانِهْ اَرْتَرِ تَرِ سَوَسِ
 هِي بَهَالِهْ نَيْتِرِي يَمِ كَرْنِ چُونِ دِيَانِ
 تَمِ آسَهْ دِرِ تَرِ تَرِ سَبْطِهْ مَبَاكِتِهْ دَانِ
 اَرْتَرِ تَرِ تَرِ اِيكَ اَرْتَرِ تَرِ تَرِ اَوِيَادِرِ رَوَسِ
 رَاگِهْ سَوَسِ تَرِ تَرِ دِيَانِ چِيهِ دَارَانِ - «آسِ شَرِنِ»

मचुराह त प्राहु सौस जहरु किन्त्य मूर्खि नशि सौस,
 विरहन च द्यनत्य चानि आरनरु, सौस ।
 ही हिमाल, पुत्री यिम करन चीन दयान,
 तिम आसुबुन्य द्वि स्थठा भाग्यवान् ।
 अक्षुरह् एकाग्र वनिध उपाधि सौस ,
 रागु सौस तसुन्दुय द्यान द्वि दारान् ॥ (उगल करन)

देवित्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभूत स्तं नम
न्त्याऽजन्म स्फुरदङ्घ्रिपीठ विलुठत्कोटीर
कोटिच्छटाः

यस्तु वासऽयति शोच्यते सुरगुणैः यः स्तूयते
न स्तूयते ।

यस्त्वां ध्यायति तं स्मरति विधुरो द्या
यन्ति सिद्धाङ्गनाः ॥३॥

لیس پوریش اکہ لٹہ کر ترے کن پر نام
 تہنہ کھراو سپہ راز مکتبہ و کوان
 لیس پوریش کو لہ کنی کبر چانی پوزا
 تہی پوریش تہس پوزان دیو کھل
 لیس پوریش کران آسہ چانی تو تا
 دیوتا تہنہ استوتی کران
 لیس پوریش منہ کنی کر چوئے دیان
 سہر گچہ آثرہ رثرہ تہس چہ پوزان
 ((۳))

युस पोरुश अकि लटि करि चै कुन प्रणाम,
तसुजि खावि प्यठ राज, मुकट दुलवान ।

युस पोरुष लोलु सान करि चांकी पूजा,
 तस पोरुषस पूजन दीवु खिल ।
 युस पोरुष करान आसि चांकी तोता,
 दीवता तसुनजुय अस्तोती करान ।
 युस पोरुष मनु किन्य करि चोनुय ध्यान,
 होरगुचि अकु रकु तस द्वि सुमुरान ॥ ३ ॥
 (आयशरण)

ध्यायन्ति ये ह्यणमऽपि त्रिपुरे ! हृदि त्वां,
 लावण्य यौवन धनैरऽपि विप्रयुक्ताः ।
 ते विस्फुरन्ति ललितायत लोचनानां,
 चित्तैकभित्ति लिखित प्रतिमाः पुसांसः ॥ ४ ॥

ہی تزلزلور ستوندری ایس کر دیان چون
 منہ ز فتنش اکی سے کھینہ ماترس
 یو دوے سہ آسی سوئندرتایہ رؤس
 بیہ جو آئی رؤس بیہ نہر دن
 آتشہ سیدی لش منہ سے لبہ پیٹہ
 شکہ کھنن تشدے دیان سورن
 (دے شرن) (۱۶)

ही त्रेपोरु सोन्दरी युस करि द्यान चोन,
 मज्ज मनस अकिसय हाणुमात्रस ।
 योदवय सु आसी सोन्दरतायि रोस,
 बैधि जघानी रोस बैधि न्यरधन ।
 अष्टु सैदी तस मनचे लबि प्यठ,
 शकलु खनन सुय द्यान सोरन ॥ ४ ॥
 —०— (आस शरण०)

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्क-
 मङ्गैर्निजैः ।
 किं वाऽमुं निबलाम्यऽनेन सहसा किं
 वैकतामाऽश्रये !
 तस्येतथं विवशी विकल्पघटना कूतेन योषिभ्यः
 किं तद्यन्न करोति देवि ! हृदये यस्य त्वमाऽऽवर्तते ॥
 ५ ॥

پنجس نورشس کر لہ بریش نظری سہی
 از عتلا اہم سہدین و ستخانہ
 کیا سنانہ کلچہ گزہ نا اہم سہی
 کہنے کہی یا نس سہی ریشہ
 ازہ رزہ سہو ندر گر گر تہس کن

بے روک یا تمہی آدین سیدن
سنا رس منکر کیا ہجہ دو رلب تس
ہر دیکس منکر تس تر پانہ پھیلن

«(۵)» ییधिस पोरुषस करुहां प्रवेश नजरी सत्य,
अचुहां अम्यसुन्धन वुस्तखानन ।
कथा सना न्यन्गुलिथ गङ्गना अमिससत्य,
कुनिकिन्य पानस सत्य रदुहन ॥
अरु ररु सोन्दर गरि गरि तस कुन,
बे रोक पादय आदीन सपदन ॥
संसारस मजं कखा कु दोलब तस,
हृदयस मजं यस च पानु फेसन ॥ (५)
— — — (आवि शरण)

विश्व व्यापिनि ! युद्धवीश्वर इति स्थाणावऽनन्या-
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि ! त्वयैव तथ्य-
इत्थं सत्यपि शवशुवन्ति यदिमा सुद्रा रुजा वाधितुः
त्वद्भक्तानऽपि न ह्निणोषि च रुषा तद्देविचित्रं
महत ॥ ६ ॥

ہی زگتہ ویاپنی سیتہ شیوناقس
ایشترنا و زگتس منکر و نان

تَقَّهْ بِأَعْيُ مَاجِ بُوَأَنِي ثَرَّيْ زَكَّيْ مَنَزْ
 شَكَمَقِي مُنْشِدْ نَاوِجْهُ ثَرَّيْ شَوْبَانِ
 لِيُودَوْعِ الشَّرِّ بَكْصَتَيْنِ سَمْسَارِ سَمْنَزْ
 مَاجِ كُنَيْ كُنَيْ دَوَّ كَهْ جِيْ دِيَوَانِ
 آشَرِ جِيْ مَاجِ چُونِ كَرُوْدَسِ سِيْطَهْ جِيْ كَصْنَهْ
 بِنَهْ نَيْنِ بَكْصَتَيْنِ دَوَّ كَهْ ثَرَّ مَآوَانِ - «۶»
 «آئے شَرِّ»

ही जगद व्यापिनी युध शेवु नाथस,
 ईशरु नाव जगतस मन्ज वनान ।
 तिथय पाठ्य माज बवान्य च्य जगतस मंज,
 शक्ती हुन्द नाव कुय चै शूबान ॥
 यौदवय ईशर बखत्यन सम्सारस मंज,
 माज कुनि कुनि दोख कु दीवान ॥
 आश्चर कु माज चोन क्रूदस प्यठ ति कुखनु,
 पनुन्य बखत्यन दोख च्चु हावान ॥ 6 ॥
 — (आयशरण०) —

इन्दोर्मध्यमतां मृगाङ्कः सदृशच्छायां मनोहारिणी
 पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासन गतां स्निग्धप्रदीपच्छविम् ।
 वर्षन्तीमऽमृतं भवानि । भवतीं दद्यायन्ति ये देहि-

स्तेनिर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झति तान्दुरतः।

ترندرمس ہیش صفا ترندرم گہہ سوس

﴿۷﴾

پھولی متیں پیمپوشس پیٹھ ترے

خوش یونہ پیر کاشہ گہہ سوس تر آسونی

یو سہ کران ورشن امر جتہ کے

ہیم یہ دیان کران تم بہار روس روزان

آپلا چھ تہینہ دور سیدان ﴿۷﴾
(آء شرن)

चन्द्रमस हि श सदा चन्द्रम गह सोस,

फौल्यमृतिस पम्पोशस प्यठ चुय ।

खोश यिवनि प्रकाशि गह सोस च आसुवुन्व,

योस करान वरशुन अमर्यतकुय ॥

यिम यि द्यान करान तिम व्यमारि रोस

रोजान

आपदा छि तिमनुय दूर सपदान ॥ (७) (अंयशरष)

पूर्णेन्दोः शकलै रिवान्निवहलैः पीयूषपूरैरिव,

ह्रीराब्धेर्लहरी भैरैरिव सुधा फट्कस्य पिण्डैरिव ।

प्रालेयैरिव निर्मितं वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया,

चित्तान्तर्निहितार्तितापविपदस्ते सम्यदं विभ्रतिः

پسیم ترند ز من امر پسته پرواه زن
 گنج سپید کعبه سودر چهر لهر زن
 شبنم شبنم صفا چون سوز پنا و ده
 کس کردیان تنه مننه لوله کس
 تس چهر دور گز خان دوه که آر تر رسته آید
 ستمپدا ستم پروان ز نهمه ز نس
 «آئے نشین»

मुनिम चन्द्रमुज्जन अमरुत्तु प्रवाह जन,
 गण पिण्ड ह्रीरु सोदरु च लहर जन ।
 शनस ह्यन सफा चोन सौरप बनाविथ ,
 युस करे द्यान तनु मनु लोल किन्थ ॥
 तस धिदूर गह्वान दोस आरखरत आपदा ,
 सम्पदा सु प्रवान जन्मु जन्मान ॥४॥

(आयशरण)

ये ते नरन्ति तरला सहसो ब्रह्मन्तीं,
 त्वां जन्म पञ्चकाभदे तरुणां शौणाम् ।
 जगदीश्वर बहुलरागिणि मञ्जयन्ति,
 कुरुते जगद्व्यति चेतसि तान्मुगाक्षयः ॥५॥

یس سادک کر دیان چون باسہ ون
 زنی نزل نہ تماشہ سوس بجلی میان
 باثرہ دل زنی تھے بال ستری یہ شدی پاکی
 ووزلہ رنگ سوسنتے زن ز جہان
 رنگ سودر سن منتر کھومت سورے
 زگفتہ زن رنگہ کنی سوسخی سان
 یس یہ دیان کر تس بوی گنی زہ تفس منتر
 تشندے گر کر دیان چھہ داران ۹۱
 (آئے شرن)

युस सादुक करि द्यान चीन बासुवन,
 जन्मल जकाशि सौस बिजली समान ।
 पांछु दल चंद्रयथुय बाल सिर्घयि संच पांछु,
 बोजलि रंगु सौस्तुथ जन चमकान ॥
 रंग सोदरस मन्ज फोटमुत सोरुथ
 गाय जन रंगु केन्ध होरुखी लंग
 युस यि द्यान करि तस युगिनी द्यतस मज,
 तसुन्दुय गरि गरि द्यान कि दारान ॥ १॥
 —०— (आय शरण)

लाक्षारसस्नापित पङ्कजतन्ततन्वी,
मऽन्तः स्मृत्यऽनुदिनं भवतीं भवानी ।
यस्तं स्मर प्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा,
नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति ॥ १० ॥

لا چھ سستی رنکو منہ نہ پوشتہ تارہ ہو
پرخہ دہہ یس داری جوئے دیاں
تس کا مدیورہ انتھ کہہ یو گنسی ،
نیتیر روپیہ یو شو چھ یو زاکر ان - (۱)
(آئے شر)

लाक्षि सत्य रंग्य मुति पम्पोशि तारि ह्युव,
प्रथ दोह युस दारि चोनुय द्यान ।
तस कामुदीव जांनिथ कमू यूगिनी,
नेत्ररूपु पोशव दि पूजा करान ॥ १० ॥
(आय शरण)

सुमस्त्वां वाच्यमऽव्यक्तां,
हिमकुन्देन्दुरोचिषम ।
कदम्ब मालो विभ्राणा -
माऽऽपादतललम्बिनीम् ॥ ११ ॥

تو تا کران تجی اسی ترے وا کھدی لوی
 ترے ترے سنس کوئی پویششیں پویشہ چھے دھما
 شو بہ وئی کد مہ مال مانج چھکھ ترے دار پوئی
 نالی چھ ترے ترے پیٹ پادن تانجی
 (آئے سترن)

तोता करान की अस्य चै वाखदीवी,
 कन्दरमस कोन्द पोशस हिश यो स
 दिष्टिमान् ॥
 शबुबुन्य कदम्बु माल मान् छल च दारुन्य
 नाल्य छय चै शेरु प्यठु पादन तान्य
 —०— (आयशरण)

मूर्त्तीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डु-
 वर्षन्तीमऽमृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपि रिन्देऽपि च
 अचिक्कनाच मनोहराचललिता चाऽपि प्रसन्नाऽपि
 त्वामेव स्मरतां स्मरारिदचिते वाक् सर्वतो वल्लभाति ॥
 (१२२)

کس پیٹ شو بہ وئی ترے ترے دھما
 پمپوششیں پیٹ ترے دھما

چھکھ تہ شو بہ وئی تہ بہمہ رندس مشر
 امرتہ تھٹان بڈ شو باہ سوس
 یس یہ دیان کر چون ہی دلوی تس
 سرسوتی شیر حکمہ بڈ ویکاسہ سوس (۱۲)
 (آکے شرن)

कलस प्यठ चन्द्रसु शबुवन चै दामुत,
 पम्पोराय प्यठ च दिकती सोस ।

बिहिथ करु च शबुवन्य ब्रह्म रोन्दरस
 अमर्यथ छटान बडि शुबाचि सोस ।
 युस वि ध्यान करि चोने ही सीवी तस
 सरहवती नेरि मोखु बडि व्यकासु सोस
 — (आय शरष) ॥

ददातीष्टानभोगान्द्वयति रिपून्हन्ति वि
 दहत्याधीन व्याधीन् शमयति सुखानि प्रत
 हतादऽन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टी र्बिरहं
 सकृदध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कर
 ॥ १३ ॥
 مطلب چھکھ دوان دشمنین تہ گالان
 آپ تہ این چھکھ تہ ناش کران

آرین زالان و یارین شو مراوان
 سیکه تہ ستمدا چکھ تر و لیستاران ۶
 اندر می دیکھ تہ وادتی بزیه وره تره گالان
 یم اکہ لکھ مآج دیاں چون کران
 تم اد کمرہ نیا پیہ نشہ چھی موکلان
 یم اکہ لکھ مآج دیاں چون کران ۷
 (آئے شیران)

मतलब छख दिवान दुश्मनन नु गालान,
 आपदायन छख नु नाश करान ।
 आदियन जलान व्यादियन शो मुरावान,
 सोख तु सम्पदा छख नु व्यस्तारान ।
 अन्दरिम्ह दोख तु दांघ प्रेयि विह नु गालान,
 यिम अकिलटि मांज द्यान चोन करान ।
 तिम अदु कमि नु दापु निशि छी मोक्कलान,
 यिन अकिलटि मांज द्यान चोन करान ।
 —०— (आयशरण) (॥१३॥)

यस्त्वां प्यायति वेति विन्दति जपत्यलोकते
 त्वेवेति परित्यजते कलयति स्तोत्रा श्रवत्यर्थी ।

यश्च ऽयम्कवल्लभेः तव गणानाऽङ्गीयत्यादरा-
तस्तव श्रीमं गृहादपैति विजयस्तथाग्रतो-

आवृत्ति ॥ २४॥

لیس چون کر سمن بوز سستی لیس زانہ
ویدا یہ کہی تاج لیس ترے پہاوی
شہر و شہر تو نہ یہ ناو چون گر گر
لو کہ شہر تو نہ یہ لیس و شہر
شہر و شہر تو نہ یہ لیس و شہر
شہر و شہر تو نہ یہ لیس و شہر
گون گون جانی لو کہ سان دین تہ راکھ
شہر و شہر تو نہ یہ لیس و شہر
شہر و شہر تو نہ یہ لیس و شہر
شہر و شہر تو نہ یہ لیس و شہر
شہر و شہر تو نہ یہ لیس و شہر
(۱۱۱)

युस चोन करि समस्तबीज सत्य युस जानि,
विद्यायि किन्थ माज युस ते प्रावी ।
शोदि मनु किन्थ जपि नाव चोन गरि गरि,
लोल् नेत्रव सत्य करि दर्शुन ।
अवणु किन्थ मनलु किन्थ युस व्यचारि,

हर वक्तु तोताचि चान्य बेयि पूजा ।
 गोण गैवि चानी लेलु सान दान तु राधा ।
 लखि रोस्तुन दुख न, रोजि अख साध ।
 लक्ष्मी छनु तसुन्दि गरि निशिनेरान,
 जय तय प्रथ वक्तु ब्रौन्ह कु दोरान ॥५॥
 (अध्याहार)

किं किं देखं वनजबलिनि! क्षीयते न स्मृतायां,
 का का कीर्तिः कुलकमलिनि! ख्यायते न स्मृता-
 का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यति नाचितायां याम् ।
 कं कं धीर्गं त्वयि न चिनुते चित्तमात्मिकायाम् ॥
 (६५)

کَم کَم دیکھن گالہ و فر
 کیم گالہ نے نہ چاہا نہ سسر نہ سستی
 کوسہ چیم نیک نامی ہی کوسہ کھارہ و فر
 کیوسہ نہ بنے جانے تو تابیہ ہی
 کوسہ کوسہ چیم سعیدی ہی سیاد و اتری
 کیوسہ نہ یافت سعید جانہ تو زایہ و سستی
 کَم کَم چیم نیک نامی ہی زکیت امیا !!!
 کیم نہ سعید بنن چاہے نہ سستی
 (آئے سترن)

कम सना दोख द्वि तिम ही दोखन गालुवनि,
 यिम गलुनय नु चानि सुमरनि सत्य ।
 कोसु द्वि नेक नामी ही कोलस खारुवनि,
 योसु नु बनि चानि तोतायि सत्य ।
 कोसु कोसु द्वि सेंदी ही सेंदी दात्री,
 योसु नु प्राप्त सपादि चानि पूजायि सत्य ।
 कम कम द्वि तिम योग ही जगत अम्बा,
 यिम नु स्वद बनि चानि ब्यनतनु सत्य ॥
 —०— (आय शरणी) (१६)

ये देवि! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्थाः,
 ये कालि! कालखन पाश नितान्त बद्धाः ।
 ये चण्डि! चण्ड गुरु कलमषसिन्धु मग्ना
 स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥१६॥

ہی دلیوی یم مہا کالہ سند سے کھٹنس
 موکھس منتر باک گہمتی
 ہی کالی یم مہا کالہ سند سے کھٹنس
 ریزہ زور یا کھٹھی چھ گٹنہ آمتی
 ہی چٹھی یم باریک تہ کھٹنس
 پاپو کس سمندر سن مندر چھ چھمتی

سَلِّمْ كَرْنَ دِيَانِ چُون تِيْلَه حَكْمِه رَحْمَانِ
 تَمَن مَوَكَلَاوَانِ بِيَّيْه تَارَانِ تَرَسِيے - (۱۶)
 (آخِرُ شَرَحِ)

ही दीवी यिम महाकाल सुन्दिसय कठिनिस,
 मोखस मन्ज बाग गेमृत्य ।
 ही काली यिम महाकाल सुन्जि मोचि,
 रजि चरि पाठ्य छि गन्डनु आमृत्य ।
 ही चण्डी यिम बारीक तु कठिनिस,
 पापुकिस समन्दरस मन्ज छि फंट्यमृत्य ।
 येलि करन द्यान चीन ते'लि छख रक्षान,
 लिमत मोकलावान बेयि तारान चय ।

—०— (आय शरण) ॥१६॥

लक्ष्मी वशी करणचर्ण सहोदयानी,
 तत्पाद पङ्कजरांसि चिरं जयन्ति ।
 यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे,
 लुम्पन्ति देव लिखितानि दुरक्षराणि ॥

॥१७॥

آج بُو آئی لُحی و ش کر تَس سِط

پاؤچ گرد حانی چیه طاقتہ سوس
 چانہ پڑنامہ وز لگہ کھن لکائی
 پاؤچ گرد حانی پڑنہ شانه سوس
 سوس پاؤچ گرد گالہ دور اکھیر لک
 زگش منہ نہ سہ جے کارہ سوس (۱۴)
 (آئے شرن)

मोज बवान्य लहमी वश करलस प्यठ
 पादुच गर्द चान्य हाकुतु सोस ।
 चानि प्रणामु विजिलगि यिमनलल
 पादुच गर्द चान्य बडि निशानु सोस ।
 सोय पादुच गर्द गालि दौर बाहर तह
 जगतस मज बनि सु जयकार सोस ॥
 —०— (ओढ शरण)

रे मूढा !! किमऽयं वृथैव तपसा काव्यः
 परिक्लिश्यते
 यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रिय
 गृहाः ।
 भक्तिश्चेदऽविनशिनी भगवती पादद्वयं

मुनिद्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मीः
पुरो ध्यावते ॥१८॥

ही मुंडु क्वाजि दुख बे फायदु तनु किन्य,
पनुनिय शरीरस तकलीफ दिवान ।
यस किन्य, दानु किन्य, अजि देखि नाचि किन्य,
क्वाजि दुख गरु पनुन खाली करान ।
गढ़ शरण ह, गाजि शारिकायि प्राव बखती,
हैं करुन तसुन्दुय पादि सेवन ।
अदु फौलि मुति पम्पोशि नेत्रव सोस,

(१८)

लक्ष्मी ब्रौंठ ब्रौंठ हैयी दोरुण ॥ १८ ॥

—०— —(आय शरण०)

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि,
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्यः ।
श्लक्ष्णं वसे मधुरमदि भजे वरस्त्री-
देवि ! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ॥ १९ ॥

काल्से मंगले न स्यात् काल्से तार न बाजू
कार्तिके त्राव कर न काल्से स्यात्
नारदो वस्त्र दार केशव मोदरी हरि
अथ रत्न रत्ने स्यात् कर केशव
यिले माज बोली हरि रत्न रत्ने रत्ने
तिले म्याने कामना ये स्यात् स्यात् (१९)
(आय शरण)

कांसि मंगुनु बैयि कांसि तार न बाजूय,
आरचर त्राव कर न कांसि सेवा ।
जावित्य वस्तुर दारु ख्यमु मौदुर्य चीज ,
अव्वरव्वनुय सूर्य करु खेला ।

येलि मांज बवान्य हृदयस मंज में रोज़ख ,
तेलि म्यानि कामुनायि स्यद सपदन ॥ १९ ॥

—०— (आय शरण०)

शब्द ब्रह्ममयि ! स्वेच्छे ! देवि ! त्रिपुर सुन्दरि ,
यथा शक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरी ॥ २० ॥

ہی شبید روپی نہرئل سورؤپی
ہی دلہوی ہی تیر لور سوئدری
کر نیٹھا شکستی مئے چانی لوڑا
کر سٹولیکار ہی پر مہیشوری - (۲۰)
(آئے شرن)

ही शब्द रूपी न्यरमत स्वरूपी ,
ही दीवी ही त्रिपुर सुन्दरी ।
कर यथा शक्ती में चान्य पूजा ,
कर स्वीकार ही परमाेश्वरी ॥ २० ॥

—०— (आय शरण०)

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः ,
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः
ساری رزقین سوکھی حاج سادک ساری سدا ॥ २१ ॥

ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ

ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ

ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ

ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ
 ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ ۛۛۛ

पूजाधि . किन्त्य चीन महिमा मयन
जीवस दोख तु दोर बाग्य दूर सपद ॥ २३ ॥
—०— (आय शरण)

नमामे यामनी नाथलेखाल डकृत कुन्तलामा
भवानी भवसन्ताप निर्वोपन सुधा-नदी ॥
نمسكار چيس گران بيمس كيشش نيز
ترندرمه پرنلان راسترو دين
سمساره دو كفن چمكه نهواران تره
امرسته ندي پيشه پروا نه ستی زين
(آئے شرن)

नमस्कार कुस करान येमिस केशस मं
चन्द्ररमु प्रजलान रात्रो द्यन ॥
सम्सारु दोखन कुस न्यवारान च
अमर्यतु नदी हन्दि प्रवाह, सूत ॥
=०= (आय शरण)

मन्त्र हीनं क्रिया हीनं विधि हीनं च यद्वत्
त्वया तत्क्षम्यतां देवि ! कृपया परमेश्वरि ॥ २४ ॥

منترهين آستخه گرياهين آستخه
ودي هين آستخه يه كيشش پرونوم

تھتہ سارے ہی نریشوری
 ترے کرپا یہ کنی عاتس مئے تاج بخشم
 (۷۲) (آئے شرن)

मन्त्र हीन आसिध, क्रियाहीन आसिध ।
 विदि हीन आसिध, यि केंका प्रोबुम ॥
 तथ सारिसय ही परमीश्वरी ।
 न्युय कृपायि किन्य आरतिस मे माज
 आय शरण है पादन विनयि ^{लखशम}
 व्याकृत्यायि मंजु असि रक्षतु न्युय ॥ (२५)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथ अम्बास्तव

(चौथा स्तव)

ॐ नमो जगदम्बिकायै ।
 ॐ यामाऽऽमनन्ति मुनेभ्यः प्रकृति परार्णी,
 विद्येयीति यांश्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
 तामाऽर्च्यं पल्लवितशंकर रूप सुद्धां,
 देवीमऽनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥

یس منی شراد بر کسرتی مانان ۱
 یس و نان و دقا وید رسنه زانه و نی
 تس شونا تمه ستتر اردا شکی لوسه
 شوا سایه سوس زگتس چیم رجه و نی
 تس اامت به الکا گر تر بهت منحص
 چمس بیوان تس پا دن پیله پرن - (۱)

यस मुनीश्वर आदि प्रकृती मानान,
 यस वनान विद्या वेद रहस्य जानुवन।
 तस शिवनाथ सन्त अर्दाङ्गी योसु,
 शूबायि सोस जगतसद्धि रद्धिबुन्य॥
 तस आमुत ब एकागर द्यध बनिध,
 हुस प्यवान तस पादन प्यठ परन ॥ १॥

—०—

अम्ब ! स्त्वेषु तव तावद्ऽकर्तृकाणि -
 कुराठी भवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि ।
 डिम्बस्य मे स्तुतिरऽसावऽसमञ्जसाऽपि-
 वात्सल्य निधन हृदयां भवती धिनोति॥
 - (२)

ہی ماما جانی تو تاکر ش سٹھ
 برہما وانی تہ حہ سنائی
 مے شری سٹریہ تو تا یو دچہ ٹوٹ مھلے
 باونا بیر کنی ہر دیس تر سوکھ دوائی۔ (۲)

ही माता चान्य तोता करनस प्यठ ,
 ब्रह्मा वांनी ति जड बनानी ।
 मै श्रियसुन्ज यि तोता बोद छिटीः फुटय,
 बावुनायि किन्य हृदयस च सुख दिवानी ॥
 (2)

वयोमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुरेखा,
 रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।
 निगद्यन्दमान सुखबोध सुधा स्वरूपा,
 विद्योतसे मनसि भाग्यवता जनानाम ॥३॥

چدا کاشہ رویہ کنی ناد بیند رویہ کنی
 تر ندرمہ کلاہش چھکھ تر پیر زلان
 وانی ہند شد رویہ چون چہ وہ
 سوکھ نہ گیان امریتہ تر یے نش نیران
 چھکھ کنی چھکھ نش منہ نش تر یے
 تر گتہ ستن منہ نش تر یے تر یے تر یے تر یے

चिदाकाश रूप किन्त्य नाद विन्दरूप किन्त्य,
चन्दरम् कला हिश क्ख च्चु प्रजलान ।
वाणी हुन्द शब्द रूप चीन तु आसुवुन,
सीख तु ज्ञान अमर्यत्तु चैय निश नेरान॥
चमकान क्ख तस भजं मनस च्चु पानय,
जगतस भज्ज असि युस बाग्यवान ॥३॥

—०—

आविर्भवत्पुनक संततिभिः शरीरै-
र्निषण्णन्दमान सलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुवास्ते ये,
पादौ तवाम्ब ! भुवनेषु त एव धन्याः॥४॥

आसन लिये रम्य वृत्तद्वये शरीर

औश आरुयस नेत्रव नेरान

वाणी हुन्द शब्द रूप चीन तु आसुवुन

पादौ तवाम्ब ! भुवनेषु त एव धन्याः॥४॥

आसन लिये रम्य वृत्तद्वये शरीर

औश आरुयस नेत्रव नेरान

वाणी हुन्द शब्द रूप चीन तु आसुवुन

पादौ तवाम्ब ! भुवनेषु त एव धन्याः॥४॥

आसन लिये रम्य वृत्तद्वये शरीर

औश आरुयस नेत्रव नेरान

वांणी किन्ध पद परि गित्य गंक्ष्य गंक्ष्य,
पादन त्रै आसि युस पूजा करान ।
तस ह्युव कुस सना कु त्रैयलूगी मन्त्र,
त्रन वचनन मन्त्र सुय कु बान्यवान ॥४॥

वक्त्रं यदुद्यतमभिष्टुतये भवत्या--
स्तुम्यं नमो यदपि देविः शिरः करोतिः
चेतश्च यत्त्वयि परायणमऽम्ब ! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तयोर्विशेषैः ॥५॥

مَوَکَہ لَیْسَ اَسَہ وُدُلُوکَہ سَہ سَہ
ہی مَآج چَآنی تَوَہ تَاکَر لَہ سَہ سَہ
مَہ لَہ سَہ اَسَہ گَہ گَہ ہی مَآج !
تَہ لَہ کَہ مَہ کَہ کَہ سَہ سَہ
عَن لَہ لَہ لَہ گَہ مَہ مَہ مَہ مَہ
سَہ مَہ کَہ حَہ رَا سَہ وُدُلُوکَہ
اَسَہ کَاہَہ سَہ ہَاکَہ وَاہ کَہ تَاہ خَاہ تَہ
پَہ لَہ کَہ رَہ رَہ گَہ تَہ لَہ سَہ سَہ (۵)

मोख नस आसिय बुद्धूग सौस ही मांज,
 चान्य तोता करनस प्यठ ।
 शेर वल्लुद्धू आसि गरि गरि ही मांज,
 चैय कुन नमस्कार करनस प्यठ ॥
 मन रास लीगमुत आसि मांज चैय कुन,
 सुमरन करि चीन रात्रो धन ।
 आसि कांह सु नाग्यवान कनि तान्य खास तफे,
 पीणि विन्य रोजि गरि गरि चैय करान ॥
 (5)

—o—

मूलालबाल कुहरादुदिता भवानि !
 निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिसतेव ।
 भूयोऽपि तत्र निरासि ध्रुवमण्डलेन्दु-
 निःष्यन्दमान परमाऽमृत तोय रूपा ॥६॥

مولا دارلشبه درامتر گشته پيشو شتر
 بجلی هندی یا حطی میور کن کھسان
 شمسردله به منتر اثر حقه تو پر نیران
 امریتہ وانی رویہ لبون چھ واتان

(4) —

मूलादारु निशि द्रामुच्च थर शै पम्प्योश्च त्रि
 विजली हुन्ध्य पाठ्य ह्योर कुन खसान।
 सहस्र डलसुय मज अचिद्य तोर नेरान,
 अमरततु वान्य रूप बीन बैयि कि वसान॥
 —०— (6)

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते ,
 मुग्धाः कटाक्ष विधिरऽङ्कुरयां चकार ।
 धत्ते तदा प्रभृति देवि ! तलाटनेत्रं ,
 सत्यं हियेव पुगुलीकृतनिन्दुसौलिः ॥७॥

بيليه زول كالميلو كنه شيوتا
 اك كنه كنه تقي كنه ويداو كنه
 تنه سمي مه سادول شنه ليل شنه
 شرمه شنه ائو كنه نيختر شنه شراو كنه - (6)

बेलि जील कामदीव अख शीव नाथन
 कि कटाक्ष सिध्य कृत्य वोपदा विध
 पुगुली महादीव मज तलाटनेत्र
 न्य औडुय नेथुर हु मुचुरा वि

अज्ञात संभवमऽनाकलिताऽन्ववायं,
 भिक्षुं कपालिनमऽवास समऽद्वितीयम् ।
 पूर्वं कंठ ग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
 शम्भुं कस्व बुबुधे गिरिराजकन्धे ॥ ८ ॥

نه زرا آتی ز نیم لیس کو له سو س بیکیتو
 ننگه تہ دویمہ رو س ز صفتہ کلمہ مال
 چانه و لوانہ برو نطہ ہی ہمالہ پتہری
 کس اس زانان شیو سند حال ॥ (۸) ॥

न ज्ञान्यगुति जन्म युस कोलु सोस बिद्धू,
 नन्गय तु द्योयसि रोस वृनिध कलुमाला
 चानि व्यवहृ ब्रोंठ ही हिमालु पुत्री,
 कुस ओस जानान शीव सुन्द हाल ॥
 —०— (8)

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च,
 भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ ।
 वेनाल संहति परिग्रहता च शम्भोः,
 शोभां विभर्ति गिरिजे ! तव सह चर्यात् ॥
 (९)

حیرم لو پو ژاک شمشان لبما مله
 نثران شمشانن یسه بیکه منگه ون
 بؤت کیمه پروار آسه ون تس شوش
 شو بان تیلر ییلر ژیه سته چیه بکه ون (۹)

चरुम पोशाक शुभशान बस्मा मलित्य,
 नत्तान शुभशानन सु बीख बन्गुबुन ।
 बूत खिलु परिवार आसुबुन तस शिवस,
 शूबान तेलि वेलि द्वेय सत्य कुपकुबुन ॥
 —॥—

कल्पोपसंहरण केलिषु पण्डितानि,
 चण्डानि खण्डपरिशौरऽपि ताण्डवानि ।
 आलोकनेन तव कोमलितानि मातः,
 लस्यिस्मना परिणमन्ति जगदिभूतये ॥१०॥

کسانک تاش نثرناه تیه گشته ناه
 تس مهباد لو پو شوشنر چیه بکه کتر پدا
 بیه بکه بذران سمپدان شتر
 بیه تزاوان تیه شوب نظر (۱۰)

कल्पान्तुक नाश नवनाह तं गिन्दुनाह,
 तस महादीव संज कि बड क्रीड़ा
 सोरुय सु बटुलान सम्पदायन मंज,
 येलि त्रावान तथ च द्योव नजराह ॥
 —————
 ————— (19) —————

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये,
 निःशेष पाश पटलच्छिदुरा निमेषात्।
 कल्याणि ! दैशिक कटाक्ष समाश्रयेण,
 कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेद दीक्षा ॥११॥

زیوس کرمین سید شادی
 آله همیشه بیا آله تسبوه تسبوت گالان
 زین حجت و یایه کنی گوهر رؤیه
 شورش کفتم و یکمیا و وید پیش کران
 (11) जीवस कर्मन सपदिथ शोदी ,
 अकि निर्माशि फांसि समूह तस च गालान,
 नृय ह्रस्व दयायि किन्य गोरु रूप वनिथ तस,
 शिवशक्ती दीक्षा वोपदीश करान ॥११॥



मुक्ता विमणवती नवविदुमाभा,
 वाच्येतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या।
 एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां,
 कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥११॥

مؤخته ماله زلور زور ماله ترهني ترهني
 آسوي چمكه ترهني آج شو بايمان
 ليس لپوش آسبه سندا تاركو سوس
 چون سوروپ يته بهوش تاس باسان

تس لپوش تاركو چير لو گنبيه
 پانتر کانه روستی کامدیو شمراں - (۱۲)

मोखतु मालु जेवर रौद्र मालु कुन्य कुन्य,
 आसुवुन्य कुसु च माज शूबायिमान।
 युस पोरुष आसि सन्ध्या तारकव सौस,
 चोन सौरूप युध ह्यव तस बासान,
 तस पोरुशस त्रिबवैनचि युगिनीयि,
 पांन्नि कानि रौस्ती कामदीव सुमरान॥

ये भावयन्त्याऽमृतवाहिभि रंशुजालै-
 राप्यायमान भुवनामऽमृतेश्वरी त्वात् ।
 ते लङ्घयन्ति ननु मातरऽलङ्घनीयां ,
 ब्रह्मादिभिः सुर वरैरपि कालकक्षाम् ॥३३॥

ہی ماتا یم ترے سورہ و فی آسن
 امریتہ رؤیہ سورہ کہ دیوان ترن لون
 تم کران کالہ ٹری یادایہ الیوس
 یتھ ترن کٹھین بڑھا دکن تہ دلون (۱۳)
 ही माता यिम त्रै सोरुवुन्य आसन ,
 अमर्यतु रूपु सोख दिवान वनववनन ।
 तिम करान कालु मय्यादायि अपोर ,
 यथ तरुन कठ्युन ब्रह्मादिकन तु दीप्ता ॥
 —०— (३३)

यः स्फाटिकाक्ष गुण पुस्तककुण्डिकाढ्यां
 व्याख्या समुद्यत करा शरीदिन्दु शुभ्राम् ।
 पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते,
 मातः । स विश्वकवितार्किक चक्रवर्ती ॥
 — (३४) —

سٹک زبیر مان اکہ اکتہ داریتہ تر
 پوستک کمنڈل بیہ دین اکتھن
 ویاکھتہ نس سٹہ سٹہ اکتہ تر نوکرت
 تر نڈر مسٹہ تر نڈر تر نڈر تر نڈر
 لیس بیہ دین کر حین مخرج منتر منتر
 کویت منتر تر کر ورت بیان تر نڈر

सटकच जपुनाल अकि अथु दारिध च्चु,
 पोस्तक कमडेल बैयि दोन अथन ।

व्याख्यानस प्यठ व्याख अथ कुलींगमुत,
 चन्द्रमस ह्युव न्निपोशजन च आसन ।
 सुस युथ द्यान करि चोन साज मज्जनस,
 अव्ययन हुन्द चक्रव्रत बनान सुजगतस॥
 (14)

बहीवतं स युत बंबर केश पाशां,
 गुजावली कृतगनस्तनहरि शोभाम् ।
 श्यामां प्रवाल वदनां सबमार हस्तां,
 तामेव नीमि शबरीं शबरैस्त्य जायाम्॥२३॥

لیس سنجت بیہ کھور شو چہ آسہ وں
 ولسن ہند آتھ ہاسہ لور وک ورن
 چاہہ کم آسہ ستر ستر خچہ تم بنن - (14)

ही महासोन्दरी वख चुय आसुवुन्य,
 मनोहर तु सोन्दर नेव धर जन।
 क्याजि होतधन मोल युध ह्युव सोमी,
 युस सरुत जौयि कठोर शीवु हु आसुवुन।
 व्यसन हुन्दि अधु हासि पूर्वक वचन,
 चानि कम असन सत्य मूड द्वितिम वचन॥
 -०- (16)

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोऽयं,
 मायोदधिर्विविध दूख तरङ्ग मालः।
 आश्चर्यमऽम्ब भटिति प्रलयं प्रयाति,
 त्वद् ध्यान सन्तति महावड्वा मुखाम्बौ॥
 (१७)

بہ ہا ند ستر کھلہ ستر کھلہ یہ پایا سو در
 دو کھ لور و ستر ستر کھلہ آسہ وں

ہم شترِ چھٹی آج ناشس چھ واناں
چون دیاں آئے کھیت چھ واڈ وا اگنی (۱۷)

ब्रह्माण्ड बुबर खिल बरिथ बि माया सोदुर,
बोखु लहरव सतय बरिथ आसुबुन।
आश्वर कु ही माज नाशाय कु वातान,
चोन द्यान अथ वपुत कु वाडवा अंगुन।
—०— (१७)

दाक्षावतीति कुटिलेति गुह्यारणीति,
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि,
संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ॥१८॥

دکھ بتری تھے مولادار واسنی
ہر تھ تھو پھائیہ مندر چھکھ تھ روزانی
سما تھائی تھے تھی تھے بیہ
چھکھ کلاؤتی تھے تھے کھکھوتی
چھکھ تھے آستھ ہی مان چھوآنی
لیہ تھکھ یوان بہو روپ نثرانی (۱۸)

दक्षि पुत्री त्रय मूलादारु वालिनी,
 हृथ गोफाधि मंज हृथ च रोजानी।
 कान्त्यादेनी त्रय लक्ष्मी त्रय वैयि,
 हृथ कलापती त्रय तु त्रय भगवती॥
 कृष्ण कुनी आसिथ ही मांज मनीनी,
 लबनु हृथ चित्रान बहु रूपु नचानी॥
 —०— (18)

आनन्द, लक्षणमनाहत नस्ति देशे,
 नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे ।
 प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं,
 शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैश्च धन्याः ॥
 (१६)

آئنند رُوپی ترکت ترکت منست
 نادرُوپی ننه لست چونه دیان
 ابیا سه کنی آئنتر موکجه مننه کنی
 آئننه سوس کر دیان سے چجه بالکيه وان (۱۹)

आनन्दु रूपी हृथ चकरस मन्ज,
 नादु रूपु बनि यख चोनुय ध्यान ।

अभ्यास किन्त्य अन्तर मोखु मनु किन्त्य,
अशि सोस करि द्यान सुख हु बाधन ॥

—०—

(२२)

त्वं चन्द्रिका शशिवि सिम्बरुचौ रुचिस्त्वं,
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।

त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनी न्वसुखम्,
निःसारमेव निखिलं स्वदृते यदि ॥

—(२०)—

थे ॥ १ ॥ आज ब्रह्मा त्रिपुरारि
त्रिपुरारि त्रिपुरारि त्रिपुरारि
त्रिपुरारि त्रिपुरारि त्रिपुरारि
त्रिपुरारि त्रिपुरारि त्रिपुरारि
त्रिपुरारि त्रिपुरारि त्रिपुरारि
त्रिपुरारि त्रिपुरारि त्रिपुरारि
(१५) त्रिपुरारि त्रिपुरारि त्रिपुरारि

चय क्वख माज बवान्य च न्दमय ॥

चय सिर्ययस दिपती आ जान ।

चय क्वख चैतन्य पोरषस भासुवन्य,

चय पवनस मन्ज बल बासान ॥

द प्यांसि
स जगतः निम्नः

ज्योतींषि यद्विवि चरन्ति यदन्तरिक्षं ,
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च यत्ते ।
यद्वाति वायुरऽनलो यदुदचिराऽस्ते,
तत्सर्वमम्ब ! तव केवलमाज्ञयेव ॥ २१ ॥

ہی ماما ستری پیر ژندرمہ تارکھ
آکاشش پٹھیم پرکاش دیوان
شیش ریش کل پرتوی دارات
میگیم رود زرتش تران
والیو چیمہ ران اکن چھ روتان
تم ساری چانہ حکمہ ستی خزان (۲۱)

ही माता सिर्ययि चन्द्रसु तारख ,
आकाशस प्यठ यिम प्रकाश दिवान ।
शीशनान युस कुल पृथ्वी दानान ,
मेघ यिम रुद जगतस जगन् ॥

वायू फेरान अंगून कु जोतान,
तिम सारी चानि हुकमु सत्य चलान ॥
—०— (२१)

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं,
वाक् तर्कयोः स्त्वमऽसि भूमिरनामरूपा।
यद्वाविकासमुपयाति यदा तदानीं,
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरी भवन्ति ॥२२॥

शुकोत्थं चैव यत्तु संप्रदान
तिलैः चैव मां मनः त्वं नृणां चकार
तिलैः चैव मां मनः त्वं नृणां चकार
तिलैः चैव मां मनः त्वं नृणां चकार
(५५) तिलैः चैव मां मनः त्वं नृणां चकार
संकुच यद्वा येलि द्वयं संप्रदान,
तैलि चै मां मनः त्वं नृणां चकार
येलि व्याकासस यिवान द्वयं ही गिरिजे,
तैलि चान्य नाम रूप नन्य वि नेरान ॥
(२२)

भोगाय देवि भवती कृतिनः प्रणाम्य,
भ्रुकिङ्करी कृत सरोज गृहाः सहस्राः।

चिन्तामणि प्रचय कल्पित-केलि शैले,
कल्पद्रुमो पवन एव चिरं रमन्ते ॥ २३ ॥

हीदलूय सुरु के नाँत बाँसिह वान
यिले तरे नै गेची तम परनाम करान
तिले चाने भैरु हरकर तम नै गेची सने
साहे नरेश्वरी हरे रोर अन
चिन्तामणि रत्नक सन्तोष नै गेची नै गेची
कहिले भैरु स भैरु स भैरु स भैरु स भैरु स
कहिले भैरु स भैरु स भैरु स भैरु स भैरु स
मन्तर तम नै गेची काल गेची काल गेची काल
(२३)

ही दीवी सोख बापथ बाग्यवान,

वैलि तै की तिम प्रणाम करान ।

तैलि चानि

बुम्बि हरक च तिमनलक्ष्मी

सासु बज्र ऐश्वर्य दि ऐजानी ।

चिन्तामणी रत्नक सन्तोष बनाव्यमुतिस

खलि हुन्दिस पहाडस प्यठ तिम खेलानी ॥

कल्प वृक्ष सोस्त्यव बर्धमुत्यन बागन,

मज्जतिम यत्रकाल की फेरानी ॥ २३ ॥

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशे,
 संसार तापमऽखिलं दयया पशुनाम् ।
 वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्तया,
 धर्मं निजं शनयितुं निजयैव वृष्टया ॥२४॥

ہی مانج زلوٹس سہارا دھو کہ ساری

چھس ترے ناکش کران دیا پر کہ

دو کہ ہند ناکش ترے ماتहत دھو اسون

دو کہ نیوتی چھی ترے اودین

پتھ پٹھو ستری بہ چھی پتھنی کر می

شو مراوان پتھ ورشہ کہ

(۲۴)

ही माज जीवस संसार दोख सारी ;
 छिहस चय नाश करान दयायि किन्ध ।
 दोखन हुन्द नाश चय मातहत हुआसुन,
 दोख न्यवृत्ति ही चय आदीन ।
 बिधु पाठ्य सिययि द्युय पनुनी गदी,
 शोमरावल पनुनि वर्षनु किन्ध ॥२४॥

शक्तिः शरीरमऽधिदैवतमन्तरात्मा,
 ज्ञानं क्रिया करणानस्य जालमिच्छा ।

ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं,
किं तन्नयद्भवसि देवि ! शशाङ्कमौलेः ॥२५॥

श्रीरथे आसुनी شکھتی تھے آسونی
ویراٹ سورویا جھکھ آسونی تھے
زیو آتھا دتھان شکھتی، کریا شکھتی
تمیہندریہ شکھتی آسنی شکھتی تھے
نیرھا شکھتی (کیشوری) پیر وار تھے
کریمہندریہ شکھتی آسونی تھے
کیا نہ جھکھ تھے آسونی نہیں سورویا جھکھند
رے سورویا جھکھ پیر لوارن تھے (۱۵)

शरीर च य आसुवन्त्य शक्ती च य आसुवन्त्य
व्यराट् स्वरूपं कृत्वा आसुवन्त्य च य ।
जीव आत्मा द्यान्, शक्ती, क्रिया शक्ती,
येन्द्रिय शक्ती आसन् शक्ती च य ॥
यद्वा शक्ती ऐश्वरी परिवार च य,
ग्रेह घन हुञ्ज जाय आसुवन्त्य च य ॥

कथान् देख चु आसवुन्य युस स्वरूपशिव
सुय स्वरूप देख परिपूर्ण चुय ॥२०॥ सुन्द

भूमौ निवृत्ति लक्षिता पयसि प्रतिष्ठा,
विद्यामले महति शान्तिरतीतशाम्ति ।
व्योमनीति यः किलकलाः कलयन्ति विश्वं,
तासां विदूरतरमऽम्ब ! पदं त्वदीयम् ॥

پڑھوی منتر پوری کلا روپ ہے - (۲۶)

پڑھیں منتر پڑھیں کلا روپ ہے

آگس منتر پڑھیں کلا روپ ہے

لوہ منتر پڑھیں کلا روپ ہے

آکاش منتر پڑھیں کلا روپ ہے

تمو منتر پڑھیں کلا روپ ہے

تمو منتر پڑھیں کلا روپ ہے (۲۶)

تمو منتر پڑھیں کلا روپ ہے

पृथ्वी मन्त्र न्यवृत्ती कला रूप चुय,

जलस मन्त्र प्रतिष्ठा कला रूप चुय ।

अग्नस में विद्या कला चु आसवुन्य,

पदनस मजं शान्ती कला नृप ।
 आकाशस यिम कलायि जगद्य दारान् ।
 तिमव निशि दूर चीन स्वरूप आसु वुन
 तिमव कलायव निशि दूर चीन स्वरूप
 तिमि निशि माज दूर रोजान नृप ॥ ३६ ॥

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं,
 नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्चरण्ये ।
 तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकारा-
 स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति ॥

یونست تام نه پاؤ جوڑی چائی رتن ہر سوس
 یونست کمر و نی و لہ و آدی
 ہی نہ گئے رچھے نہ تو ت تانی تم شکہ
 مکر باؤ تہرے رناش کتہ سیدی (۱۷)

यौत ताम नृ पाद जूर्य चान्य रटन हृदयस
 यिम बहस कर कुन्य वुन्दु बांदी ।
 ही जगद्य रद्धि वलि तौत तान्य तिम
 शकु बर्य थुय,

मूड् बावु तिहुन्द नाश कति सपदी॥२१॥

—o—

यद्देवयान पितृयान विहारमेके,
कृत्वा मनः करण माण्डलसार्व भौमस ।
याने निवेश्य तवकारणं पञ्चकस्य,
पर्वणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम्॥

ہم یوگی یوہ پش پرائے ابیاس یوگ (۲۷)

ابیاس کری کری بیلہ پراون

نہندہ میسے کہلہ تہ من آسکھ زکونٹ

تم سو آری کران جی پائشٹن کارٹک (۲۸)

यिम यूगी चोरुष प्राणअम्यासु बूजे ,
अम्यास कंय कंय वैले प्रावन ।

वेन्द्रेय खिल त सब आस्थस ज्यून त,
तिम सर्वाय करान ही पांचन कारुणत॥
—o— (28)

स्थूलसु मूर्तिषु मही प्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवसम्ब ! चस्याः॥

पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं ,
साहि स्तुता किल संयेति तितिक्षितव्यम्॥

(२६)

بِرَقَّتْهُي تَوْتُ سِهْطِه مَيَا تَوْتُسِ تَام ۛ
يَمِ سَتَهْوَالِ مَوْرَتِيهِ مَاجِ حِهْ آسَانِ
كُنْهُ مَوْرَتِيهِ مَسْزِيهِ مَاجِ بُوْأَنِي
جَانِي سَهْوَالِ بُوْأَنِي حِهْ بَاسَانِ
بَرِ مَادِ كُنْ نَهْ حِهْ تَهْ سَهْوَالِ سَامَرَهْ
كُونِ جَانِي كِيُوْهْ حِهْ تَهْ كِيُوْهْ كِيُوْهْ
تَهْ وَلَوْتِي بَهْ كُونِ كُونِ كُونِ كُونِ
مَانِي دَهْ مَهْ مَهْ مَهْ مَهْ مَهْ مَهْ مَهْ مَهْ
(۲۹)

पृथ्वी तोत प्यठ माया तोतुख ताम ,
यिम स्थूल मूर्तिदि माज दि आखान ।
कुनि मूर्ती मज्ज ही माज बवानी ,
चान्य हिश विबूती छे नु बाखान ॥
ब्रह्मादिकन ति कुनु त्युथ ह्युव सामरथ,
गोण चान्य गेविथ बिनु तिम ति केह हकान ॥

तिमय विबूती हुन्ध्य गोण कय मे गायन,
सांफी दितम मे हुस ब आशावान ॥ २९ ॥

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब बडऽ वशुद्धा,
वाप्सायनेषु भवतीममृतौ च वृष्टिम् ।
श्यामां चनस्तनतटां सुकली कृतौ च,
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति ॥ ३० ॥

گلیا نیٹے آگئے یا کھڑے گیسے سو س ہی آج
سمسار ناچاस प्यठ च चमकान
सोरये पीये قائिम कर लस
हमक थै तिले अमरिग वरुन करान
सिम शामे रुप सोन्दर چون दियान चि दारा
सिम आज रे गेन्ही गोरु चिम सैदाल
(३०)

कलपांतु, अग्न, पाठ्य गह सोस ही माज,
समसार नाचास प्यठ च चमकान ।
सोरय बेयि कायिम करनस थठ,
दुस च तेलि अमृतुक वषुन करान ॥

यिस शमुरतपु सोन्दर चीन द्यात हि दारान्,
तिम माज जगतुक्थ गौरुहि सपदान ॥

—०—

((30))

विद्यां परां कतिचिदम्बरसम्ब! केनि,
दानन्मेव कतिचित्कतिचिच्चाम्भाम्।
त्वां विश्वमाहुरपर वयमामनाम,
साक्षादऽपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥ ३१॥

کیئے بی تمیز ویز یکیتہم چہ آشد
کیئے ہی مایا روپ ترے مانان
کیئے تر گنتہ ماتا ساکھیات حدروس
دیا سو روپ گوہ روپ اسوترے زانان
(۳۱)

कैह द्वी थंज विद्या कैह द्विआनन्द,
कैह द्वी माया रूप त्रै मानान।
कैह जगथ माता साक्षात हृदयैस,
दया स्वरूप गौरु रूप अस्थि ज्ञानान ॥
कुवलयदलनीलं बर्बर-रितग्ध केशं,
पृथुतरकुच माराक्रान्त कान्तावलग्नम्।

((31))

किमिह बहुभिरुक्तेरत्त्वत्स्वरूपपरं न।
सकल भुवन मातः सन्तत सन्निधात्तम॥

॥३२॥ कोले वल्ले आच्छि चक्रे माज थुं चिकोनी
द्वारुत थुं चक्रे माज सोन्दर केश
सोन्दर कमर सोस सीनु बोन त्राविध
ही माज आसुवन्द च जगतुच ईश।
ज्याद वन्द्यधुय व्याह नेरि हासिल माज
सनमोख मै रोजतम न्यथ दितम त्युध सन्देश॥

कुवलय वर्ग पाठ्य छत्र माज च चमकुवन्द्य
द्वारमुत चै बुय माज सोन्दर केश।
सोन्दर कमर सोस सीनु बोन त्राविध,
ही माज आसुवन्द च जगतुच ईश।
ज्याद वन्द्यधुय व्याह नेरि हासिल माज
सनमोख मै रोजतम न्यथ दितम त्युध सन्देश॥

(32)



सकलजननीस्तवः ।

(पांचवां स्तव)

अजानन्तो यान्ति ह्ययमवश्यमन्योन्यकलैह,
रमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः ।
जगन्मातर्जन्म ज्वरभय तमाकौमुदि ! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम् ॥ (१)

نه زانې وې نور که پايه وړې لړۍ لړۍ
آوښ يا هڅې ناسته باوس چپه و اتان ۶
پم مته وادی بایا به مېښه نه
گنډ نه مېښه مېښه پم ډله ډله گزهاڼ
هې زگنډه مانا اوسه نه نمېکې جوړ
بیه که تمه که تر څنډه مېښه نه باسان
آهتر شرن چپې سمنو که هې آج
مکې گنډه اوسې تر څو پړ نام چپې کران ۷

न जानुवन्त्य मूर्ख पानु वान्त्यलङ्घ्य लङ्घ्य,
अवश्य पाठ्य नाशि बावस द्वि वातान ।
यिम मतुवादी मायायि हुन्दिनय,

गन्धुन च फंसिथ विम डुलुडुल गङ्गान ।
 ही जगत्प्रमाता अलि जन्मुक्त ज्वर ,
 वयसि तमुक्तुय चन्द्ररमु च बासान ।
 आमुक्त्य शरण की सन्मोख ही माज,
 गुह्य गन्दिथ अस्य वै कुन प्रणाम की
 --- करान ॥ 1 ॥

वचस्तर्कागम्य स्वरस परमानन्द विभव-
 प्रबोधाकाराय द्युति तुलित नीलोत्पलरुचे ।
 शिवस्याराध्याय स्तनभर विनिम्नाय सत्सं-
 नमो यस्यै कस्यैचन भवतु सुरधावसहस्र ॥

(2)

دانی کنی و شرار کنی حکمہ تر آج نہ پراونی
 حکمہ تر جیتن سرورویا پریمہ قہر مند
 نیلہ اُتھیلے پوشہ دقتی شوہر سہ
 شوہر با ایمان بیسیہ گہاں نہ اندر
 شوہر حکمہ آرادنی ز تختس پادشاهان
 گہاں نہ کبریا تر و سہرہ تہہ بار کنی
 نمسکار اسی نے تہہ کھٹ تانی تیز س
 سارے مہر س اندر آناں تر بلیمہ کنی (۲)

वाणी किन्ध व्यचार किन्ध द्रव्य त्तु मांज न
 क्वचु चेतन स्वरूप परमु आनन्द। प्रावनी,
 नीलि उत्पत्तु पोशिदिपती सोह्य चय,
 शूबाधिमान वैयि ज्ञान तु आनन्द।
 शिवस क्वच आरादिनी जगतस बडावान,
 ज्ञान क्रिया रूपु तनु बारि किन्ध।
 नमस्कार आसिनय तथ कथ तान्य तीजस,
 सावित्रय मुहस अन्दर अनान त्तु येमि किन्ध,
 (२)

लुठत गुञ्जाहार स्तनभर नमन्मदयलतिका,
 मुदभदधर्माभमः करा गुशितनीलीत्यलरुचम्,
 शिवं पार्थत्राणप्रवरासृगयाकारगुशितं,
 शिवामन्वग्यान्तीं शवरसऽहमन्वेमि शबरीम्॥
 (३)

رتقلى بارثرے نالى تنہ بار تھیتے
 زاول کمریس ترے آج شوآن
 چھٹیتے گمہ سیتی گمہ پھیری ترے شوپوئی
 نیلہ اتیلہ پوشہ رنگہ چکان۔

از انچه ز چهره نه تس شیس پنه پنه
 در سمت شکاری روپ یس ترے آسمون
 شکاری بایه روپ یس ی ماح کو آبی
 کل گشت کھ ترے کشت آمت چھینے شرن (س)

रघु फल्य हार चै नाल्य तनु बारै नम्याधुव,
 जाव्युल कमर सुस चै माज शुबान।
 फटिमुति गुम् सल्य गुम् फेच्य चै धूबधुव,
 नीलि उत्पल पोशि रगु चसकान।
 अजैनस रक्षिने तस शैबस पतु पतु,
 दैरमुत शिकार्थ रूप गुस चै आसुवुन।
 तथ शिकार्थ बाधि रसस हीमाज भवानी,
 गुल्य गन्डिथ चैय कुन आमुत कुसय
 —०— शरम ॥ ३॥

मिथः केशा केशि प्रधन निधनास्तर्क चटना,
 बहु श्रद्धा भक्ति प्रसाय विषयाश्चासदिधयः।
 प्रसीद प्रत्यङ्गी भन गिरिसुते ! देहि शरणं,
 निरालम्बं चेतः परिलुठति पारिप्लवमिदम् ॥
 (४)

بخش کردی نمی مس گوان آکھ اکس
 گوی لڑی تھی بیتہ جیہ ناش سیدان
 سہیٹا لوجہ پش تکلفی کنہ تہ پرتیمہ کنہ
 شروایہ کنہ چائی لوزا کران
 ہی مآج پرکٹ بن آسہ سہیٹا پر سن بن
 سنہیٹا بن آسہ روز بچاوان
 آسہ جیہ ترنزل منہ سوس تھہ رؤستہ
 تھہ کر آسہ مآج ننتہ جیہ ڈولہ گزہان (۱۰)

बहस करुनुय की मस कड़ान अख अंकिस,
 लंड्य लंड्य रिमन पतु कु नाश सपहाना
 स्यठा पोरुष बस्ती किन्ध त प्रयसु किन्ध,
 श्रदायि किन्ध चान्ध पजा करान ।
 ही माज प्रकट बन असि प्यठ प्रसन्न बन,
 सन्तोष्ट बन असि रोज बचावान ।
 असि कि चन्धचल मनु सोस धपु रोस्तुय,
 थफ कर असि माज नतु कि डुलु गढ़ान ॥

शुनां वा बहेवां खगपरिषदो वा यदशानं,
 कदा केन वेति क्वचिदपि न कश्चित्कल-
 अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहिमसाह्वयवपुः^{यति}
 प्रपद्येऽशाश्चेतः सकल जननीमेव शरणम् ॥
 (५)

ہی منہ نہتہ شریکس سٹ نہ ایتبار
 چھے خوراک یہ انگ یا تشکی کھوان
 کہ وقتہ کتہ جابہ کتہ یا کتہ کتہ طبرقیہ
 پیہ پیہ شریک کتہ کتہ نہ زبان
 میانہ منہ گزشتہ شریک ز کتہ ماجیک
 شریک ممتا کو نہ ز جلیہ تراوان (۵)

ही मनु यद्य शरीरस्य प्यठ न एतिबार,
 कुय खोराक यि अंगनुक या पैही ख्यवाना
 कमि वक्तु कथ जायि, किथ पाठ्य कमि
 पैयि पथर शरीर कर काहे न जानान ॥ तीकु,
 म्यानि मनु गक्क शरण जगतुचि माजिकुन,
 शरीरुच ममता कोनु न जल्द त्रावान ॥५॥

अनाद्यन्ता भेद प्रणयसि कापि प्रणयिनी.

शिवस्यासीर्यत्त्वं परिणयविधौ देवि। गृहिणी।
सवित्री भूतानामऽपि यदुदभूः शैलतनया,
तदेतत्संसार प्रणयनमहानाटकं सुखम् ॥६॥

آدِ اَنتِه رُوسِ بيمِه سیدِ رُوسِ پَرِ سَورُوبِ
اَستِه تِه چَکِه شپُورِ سَنَرِ پَرِ بيمِه رُوبِ
دِلوانِه وِندِی کَئی هِی دِلوانِه چَکِه
تَس تِه دِلِو سَنَرِ گَرِ اَستِه رُوبِ
هِي هِمَالِه پَتِری جیونِ کرانِ تِه پَادرِ
سَمسارِ لَیلا چَکِه چُونِ عَستِه رُوبِ (۶)

आदि अन्तु रोस बैयि बेदु रोस प्रैयि स्वरूप ,
आसिथ ति क्ख शेवु सन्ज प्रयम् स्वरूप ।
व्यवाह वेदी किन्थ ही दीवी क्ख ,
तस महादेवु सन्ज गृहणी रूप ।
ही हिमाल पुत्री जीवन करान च पादु ,
सम्सार लीला वि चीन जशन रूप ॥ 6 ॥



ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति। सदन्त्ये विदुरस-
त्परे मातः। प्राहुस्तव सदसदन्त्ये सुखदयः।

परे नैतत्सर्वं समभिपद्यते देवि ! सुधिय-
स्तु देतत्त्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे ॥

॥ ७ ॥
 ही दलौ किंहे च्छी वनान ठे ते त्तोरुप
 किंहे च्छी वनान सत्ते किंहे अत्ते रुप
 किंहे च्छी वनान सत्ते क्कोते त्ते सोरुप
 किंहे दाना वनान सत्ते अत्ते रुप
 किंहे च्छी वनान अत्ते वाचि ते अत्ते वन
 किंहे वनान ये सोरु ते च्छी चोन प्पोलने रुप

ही दीवी केह की वनान ते तत्त्व रूप,
 केह की वनान सथ केह असथ रूप ।
 केह की वनान थदि खोतु थोद स्वरूप मान,
 केह दाना वनान सथ असथ रूप ।
 केह की वनान अनिवाच्य ते आसुवन,
 केह वनान थि सोरुय ते चोन फोलन रूप ॥
 —०— (7)

त्रि लोटि ज्योतिर्द्युति दलित षड्ग्रन्थि गहनं
 विष्टं स्वाकारं पुनरपि सुधावृष्टं वपुषा ॥

किनप्यष्टात्रिंशक्तिरसकली भूत मनशिं,
भजेधाम श्याममकुचभरनतं बर्बरकचम ॥
« ८ »

करोरु ड़ुल्ले सुमान च्यानी दफ्ती ॥ ४ ॥
कठिन्यन शन गन्दन चटिथ दख अचान ।
स्वादारु चकरस बेयि तोर नेरान ,
असरथतु वर्षरा स्वरूप किन्य वसान ।
३८ कलारूप जगथ वेकसाविथ ,
तनु बारि नमिधुय केश चै चमकान ।
तथ शामुरूपस ही माज बवानी ,
गरि गरि रोज़हा ब सीवा करान ॥ ४ ॥

करोरु वुजमलि समान चान्य दिपती ,
कठिन्यन शन गन्दन चटिथ दख अचान ।
स्वादारु चकरस बेयि तोर नेरान ,
असरथतु वर्षरा स्वरूप किन्य वसान ।
३८ कलारूप जगथ वेकसाविथ ,
तनु बारि नमिधुय केश चै चमकान ।
तथ शामुरूपस ही माज बवानी ,
गरि गरि रोज़हा ब सीवा करान ॥ ४ ॥

चतुष्पत्रान्तः षड् दलभग पुटान्त स्त्रिकल्य,
 स्फुरद्विद्युद्वहिद्युमणि नियुतामद्युतिश्रुते,
 षडश्रं च भित्त्वादौ दशदलमऽथ द्वादशदलं,
 कलाश्रं च द्वयश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते॥

॥ ६ ॥

चित्तं दले कले मन्त्रे निषिद्धे शब्दे
 त्रिकुलं मन्त्रे साष्टं त्रिद्वारं सरिपाकारं
 वृजं चमकं जन सासु बंध सिर्यधिजन,
 शक्ती कुण्डलिनी तैली च चमकान् ॥

चतुशदल कमल मंजु नीरिध षठ् दलस,
 त्रिकूलस मंजु साष्टत्रिद्वार सरपाकार।
 वृजमल चमक जन सासु बंध सिर्यधिजन,
 शक्ती कुण्डलिनी तैली च चमकान् ॥

षठदलु त्रिंशदलु पतु द्वादशदलु,
 पतु षोडशदलु प्यठ द्वि नैरान ।
 द्वादलु मन्जु द्रामुचि तस कुन्दुलिनी ,
 ही गिरजी कुस तथ स्वरूपस नमस्कार
 करान ॥१९

कुलं केचित्प्राहर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः,
 परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमऽपरे ।
 चतुर्णामप्येषामुपरि किमऽपि प्राहुरपरे ,
 महामाये । तत्त्वं तव कथमऽमी निश्चिनुमहे ॥
 (२०)

کیئہ گمانی و نان ترے ۳۶ تتو روپ
 کیئہ گمانی و نان ترے یرمہ شیروپ
 کیئہ و نان چھی مآج شیوشکھتی روپ
 کیئہ و نان امہ کھوتہ تھوڈ چھ چون روپ
 کیئہ و نان تھوڈ کھوتہ تھوڈ کستانی سو روپ
 ہی عیا مایا کہتہ پائٹھی بہہ استہ لشیچے
 کس سنا ا لوک چھ چون مآج سو روپ
 (۱۰)

कैहं ज्ञानी वनान त्रै ३६ तत्त्वरूप,
 कैहं ज्ञानी वनान त्रै ब्रह्म शैव रूप।
 कैहं वनान द्वी त्रै साज शिव शक्ति रूप,
 कैहं वनान अमि खोतु थोद कु चोन स्वरूप।
 कैहं वनान थदि खोतु कुस्तान्य रूप,
 ही महासाया किथु पाठ्य बनि असि निश्चय।
 कुससना अलौकिक कु चोन साज स्वरूप॥
 —ॐ— (10)

षडद्वारण्यानी प्रलयरविकोटि प्रतिरुचा,
 रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम्।
 वितन्वानः शैवं किमपि वपुर्हिन्दीवररुचिः,
 कुचभयामानसः शिवपुरुषकारो विजयते ॥
 (११)

شہ دتہ سوُس حَبَنُگل پیرے کالس پیٹھ
 کرور دفتی سوُس تہ پیرز لانے
 پینہن بکھتین یم جاپن تہ رشن
 پیٹھ حقوان مستک چکھ تہن رحمان
 شہ پینر کوستان سوُر وپ تہ دفتی سوُس

گسبان کبریا تنہ بار شہمتہ ترے شو بان ۛ
 شہوت فتر پور شہ کار حکمہ آج ترے سو
 شہوت شہمتہ رؤس چیس بے پیر نام کران (۱۱)

शिवति सोस जंगल प्रलय कालस प्यठ,
 करौर दिपती सोस च प्रजलान ।
 पनन्यन बरबत्यन विम चान्यन चरणन,
 प्यठ थवान मस्तक छख तिमन रखान ।
 शिव सुन्ज कोस्तान्य स्वरूप ते दीपती
 ज्ञान क्रिया तनुबरि नमिद्य ते शूबान, सोस,
 शिव सुन्ज पोरुषकार छख मोज च आसुवन्य
 तथ्य शक्ती रूपस छुस वं प्रणाम करान ॥

—०—

(11)

प्रियङ्गु श्यामाङ्गीमऽरुण तरुणः किसलयां
 समुन्मीलन्मुक्ताफल बहुलनेपथ्य कुसुमाम् ।
 स्तनद्वन्द्वस्फार स्तवकनमितां कल्पलतिकां,
 सकृददधायन्तस्त्वां दधति शिवचिन्तामणि-

پد م ॥ ۱۲ ॥
 پنگہ پوشہ پاٹھو شامہ سو نذر شیر پوس

سورخ و ستر تمکیم در دارآنی ۴ ۴ ۴ ۴
 میچو ایمنه منوخته بیبه پوشه لباسه سوس
 تنه باره نمک تھے شوشو دانی
 ہی دیوی چھکھ تر کلمہ حقیر آسہ وری
 لیس اگر لٹ چون دین دارآنی ۴
 سے شپور روی چنتا من سرتن ۴
 چاہے دیایہ کنی چھ پھراوانی - (۱۲)

पिंगु पोशि पाठ्य श्याम, सोन्दर शरीर सोस,
 सोरुख वस्त्र दख जु दारानी ।
 फौल्मुत्ति मोखतु बेधि पोशिलिबासु सोस,
 तन बारि नमिधुय त्रै शूबानी ।
 ही दीवी दख जु कल्प धर आसुवन्य,
 सुस अकि लटि चीन दान दारानी ।
 सुय शरीरु रूपी चिन्ता मन रतन,
 चानि दयायि किन्थ कु प्रावानी ॥ १२ ॥

प्रकाशानन्दाभ्यामविदितचरीं मध्य पदवी;

प्रवीणौ तद्द्वन्द्वं रवि शशि समाऽख्यं कवलयन्।
 प्रविश्योर्ध्वं नादं लय दहन भस्मीकृतकुलः,
 प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमऽम्ब प्रविशति॥
 (१३)

ग्यानं कर्त्तृयापे कर्त्तृयापे कर्त्तृयापे
 अन्तरात्तु दशुनी ग्रास करान
 उर्दनादस अन्तरात्तु दशुनी ग्रास करान
 सारिने चकरन बसुम छि करान
 तमि पतु चानि अनुग्रह किन्त्य सादक
 अविनाशि शिव पदस प्यठ छि वातान
 (१३)

ज्ञान किन्त्य क्रियायि किन्त्य फीरिथ सुशमना,
 अन्तर अन्तिथ दोशवनी ग्रास करान ।
 उर्दनादस अन्तिथ व्यथ व्यमर्शु अंगु किन्त्य,
 सारिनुय चकरन बसुम छि करान ।
 तमि पतु चानि अनुग्रह किन्त्य सादक,
 अविनाशि शिव पदस प्यठ छि वातान ॥ १३ ॥

षडाधारावर्तपरिमित मन्त्रोर्मिपटले-

अलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद् दैवतभूषैः ।
क्रमस्तोत्रोभिस्त्वं वहसि वरनादाऽमृत नदीं,
भवानि ! प्रत्यग्रा शिवचिद्ऽमृताब्धि प्रणयिनी ॥

«२४»

۶ چکر اولینہ نشہ منتر ملکوتیہ
مُد رابی کفہ نشہ بیلہ تر نیران
کرم روپیہ گاڈو نشہ کر مکہ در ی یو نشہ
پیر ناد امریتہ روپیہ بیلہ چمکھ وسان
ہی مارج و اتان چمکھ نوں در ی یو
شور روپیہ تر بیتہ سو در س منتر تر روزان
(۱۶)

6 चक्र आवलुनि निशि मन्त्र मुलकव निशि,
मुद्राई कफि निशि यैलि च्चु नेरान ।
कर्म रूपु गाढव निशि कूमकि दैययावु निशि,
परुनाद अमृत रूपु यैलि वख वसान ।
ही माज वातान वख नविस दैययावस,
शिव रूपु च्यतु सोदरस मज च्चु रोजान ॥

(14)

महीपाथो वहिश्चसनवियदात्मेन्दु रविभि,

वपुभिर्ग्रस्तांशैरपि तव कियानऽम्ब !

महिमा ।

अमून्यालोकयन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतय-

मऽवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योम

वपुषि ॥१५॥

پڑھتوی، جل، اگن، والو، ته آکاش
 سري به، ژندرمه بييه زيلو آتما
 امشو کني نيا و ميتي چي ژلے پاتے
 کوتاه چھ ماچ بو آني چون مهسا
 چانيس پر مه آکا شکس سوروليس
 منتر چھينه يم ته کنيه وو جو دس يوان (15)

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तु आकाश,
 सूर्ययि, चन्द्रम, बैधि जीव आत्मा,
 अमशव किन्ध बनाव्यमुत्य द्वी चे पानय।
 कोताह दु माज बवान्य चोन महिमा,
 चानिस परम, आकाशकिस स्वरूपस,
 मज द्विनु यिम ति वुनि वोजूदस यिवान॥

मनुष्यास्ति र्गञ्चो मरुत इति लोक त्रयमिदं
 भवाम्भो धौ मानं त्रिगुण लहरी कोटिलुखिम॥
 कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया
 शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम्॥

(३६)

मंश, चारु आये ते दिलो त्रिलोकी
 शम्भार सुदरस मंजु चि फट्ठमृत्यु
 करीर बजु सद्यरज तम् लंहरन मन्जु,
 त्रिगुण मुल्कन मंजु डुलु बि गामृत्यु
 योदोये यम मंजु बने का लसे चोन कलाह
 ही माता सेरु लो अडि चि वान
 प्रेमान्द कस सुदरु लसि चि जलदे
 प्रेमे पद दियाये चाने कनी चि प्रान - (५)

मनुष्य, चारवाय, तु देव त्रियलूकी
 सम्सारु सोदरस मंजु बि फट्ठमृत्यु ।
 करीरु बजु सद्यरज तम् लंहरन मन्जु,
 त्रिगोण मुल्कन मंजु डुलु बि गामृत्यु ।

दीदवय यि मन मज्ज बनि कांसि चोन कटाह,
ही माता सु जीव अदु हु वातान ।

परमानन्दु किस स्वरूपस हु जलदुव,
परमपद दयायि चानि किन्थ हु प्रावान् ।
(16)

कलां प्रज्ञामऽद्यां समयमनुभूति समरसां,
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथां ।
प्रमाणं निर्वीणं परममतिभूतं परगुह्यं ।
विधिं विद्यामाहुः सकलजनीमेव मुनयः ॥
(२७)

ہی زگت ماما منیشور چہ ترسیر و تان

کبریا، بود، آد انو بو ست ماما

گوہ پریم پیرا وینے وہ پیش شوکتا

پیرمان، نہرمان، پیرتیکش تہ آومان

رسنہ، گیان، مری یادا بیہر وینا شکتی

زگت ماما چانی سوروپا ایم تان (14)

ही जगत माता मुनीश्वर द्वि त्रैय वनाज

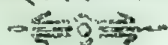
कथं बोध आदि अनुभव समता ।

गोरु परमपरा विनय वीपदीश शिवकथा,
 प्रमान, व्यर्मान प्रत्यक्ष तु अनुमान ।
 रहस्य, ज्ञान, मर्यादा, व्यैयि विद्याशक्ति,
 जगत साक्षात् चानी स्वरूप विम वनान् ॥ (१७)

प्रलीने शब्ददौष्टे तदनुविरते बिन्दु विभवे,
 ततस्तत्त्वे चाष्टद्वनिभिरनुपाधिभ्युपरते ।
 अस्मिन् शास्त्रे पर्वण्यनुकूलित चित्तमात्र गहनां,
 स्वसंविर्त्ति योगी स्वयति शिवाख्यां पतनम् ॥ (१८)

شبه سوره ركاوتك سيبه بنيد و يبو گالته
 ميشه پشيمان شريجه آكاشش مثلين كرتنه
 تتووس سيطه آتمه سوروليس وه ياد روليس
 ياد روليس پير امرتيس مننه ركاوتك
 شكفته بارگك آ شريجه چچم رطان
 شريعتن ماترك ربه سيبه تم و سهرش كران
 مثل يوك شيو سوروليس تم پراوان
 مشه س شيو سوروليس تم سواد كران

शब्दसमूह रुकाविथ पतु ब्वन्दु ब्वबू गालिथ,
 येष्टु ज्ञान चयथ आकाशरा मजं लीन करिथ।
 तत्वस प्यठ आत्म स्वरूपस दोषादि रस्यतिस,
 नादु रूपु पर असत्थतस मजं रुकाविथ।
 शक्ति मार्गिक आश्रय द्वि विम रटान,
 चेतन मातृक रहस्य तिस व्यमर्श करान।
 स्वाभाविक शिव स्वरूपस तिम जावान,
 थंदिस शिव स्वरूपस तिम स्वाद करान ॥



(18)

परानन्दाकारां निरऽबन्धि शिवैश्वर्यं वदुषं-
 निराकार ज्ञान प्रकृतिमऽनवच्छिन्न करुणाम्।
 सवित्री लोकानां निरतिशय धामास्पदपदां,
 भयी वा भोक्षी वा भवतु भवतीमेव भजताम्॥

(१९)

خَدِ رُؤْسِ نِيرَمِ آئِنْدِ رُؤْپِ چُونِ دِيَانِ
 شَيَوِ اَلِشَوْرِي رُؤْپِ لَيْسِ مَانِ
 نِهرو بِكَارِ گِيَانِ سُوْسِ خَدِ رُؤْسِ دِيَا رُؤْپِ
 زِيُو پَاوِ كَرُونِ لَيْسِ تَرِ مَانِ

تس برابرے چھے موکھیہ یا سمسار
 یس کنہ روپہ چانی سپوا کران ۔

हृदरोस परमानन्द रूप चीन ध्यान,
 शैव ऐश्वरी रूप यस मानान ।
 न्यरविकार ज्ञानु सोस हृदरोस दया रूप,
 जीव पादु करुबुन युस च मानान ।
 तस बराबरुय कुय मोक्ष या समसार ,
 युस कुनि रूप चान्य सीवा करान ॥ 19 ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

गत्कायेकृत्वा तमऽपि हृदये तच्च पुरुषे,
 गुमासं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्य गहने ।
 तदेतज्ज्ञानाख्यं तदपि परमानन्द विभवे,
 महा व्योमाकारे ! त्वदऽनु भवश्चीलो विजयते ॥
 (२०)

نرگت کا یا یہ منہ چمکے ہر دے تر آسہ و
 ہر دس منہ چمکے آتمہ دیور روپ
 آتمہ شخص منہ بندہ تر چمکے
 بندس منہ چمکے پر دے ناو روپ

نادر من گیان روپ چون آسون
 گئی تس مندر پرماشدر ویمو روپ
 ہی زگت ماما جے کار — تسمنے
 یم کرن چون آلو بو مہا کاشہ روپ (۲۰)

जगत कायायि मन्त्र हृदय च आसुवुन
 हृदयस मन्त्र हृदय आत्म दे रूप।
 आत्म पोरषस मन्त्र बिन्दु च ठीकिथ,
 बिन्दुस मन्त्र ज्ञान रूप चोन आसुवुन।
 नादस मन्त्र ज्ञान रूप चोन आसुवुन,
 ज्ञानस मन्त्र परमानन्द बैबू रूप।
 ही जगत माता जयकार तिमनुय,
 यिम करन चोन अनुभव महा काशि रूप
 (२०)

विद्ये विद्ये वेद्ये विविध समये वेद जननि,
 विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके।
 शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवनि
 शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरूपयाम्॥
 (२१)

ہی کر یا شکتی، گئی ان شکتی قسمہ قسمہ
 سدا نت آثارِ روی ہی وید مکتا
 ہی وحی تر روی چھکھ تر ز کج آری
 و پنیہ کنی تر پر او آتی وید چ مکتا
 شیو آگنیایہ مکتا ترے سو باو روی
 شیو پد دیوان ترے ہی مکتا
 سو کھ کے خزانہ چھکھ آسوی ترے ہی مکتا
 بے حد شکتی دتہ مے ہی مکتا! (۲۱)

ही क्रिया शक्ती, ज्ञान शक्ती कस्म कस्म,
 सिद्धान्त आचार रूप ही वीदु माता ।
 ही विचित्र रूपी कख च जगत च आद्य,
 व्यनधि किन्य च प्रावानी वीदु च गार ॥
 शीव आगिन्यायि हुज ज्ञय सोबाव रूपी,
 शीव पद दिवान ज्ञय ही माता ।
 सोखकुय खजानु कख असुन्य च ही मांज,
 बे हद करती दित, मे ही माता ॥
 (21)

विधेर्मण्डं हत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
 हरि शूल प्रोतं यदऽगमयदंसाऽऽमरणता
 अलंबक्रे कण्ठं यदपि गरलेताम्ब। गिरिशि
 शिवस्थायाः शक्ते स्तदिदमऽखिलं ते -
 विलसितम्॥२॥

پتر ہا شد کلہ الگ کر تھ تھ کلس
 پنے نے اٹھک پاتر بناوتھ
 پنے نے پھیکہ کے نیوون زلیور
 ناراین تر شولس پیٹھ ویر تھ
 سنجے کھو تہ شجئے زہر کھو تہ شجئون
 ہوٹ ایس پنے نے شو بہ روون
 شوس پیٹھ ٹھیک پتر امہ شکتی تھ
 یہ سہرے چوئے وپلاس چھ آسہ وون (۲۲)

ब्रह्मा सुन्द कलु अलग करिथ तथ कलस,
 पनुने अधुक पात्र बनाविथ।
 पनुने फेकिरुय बनोवुन जेवर,
 नारायण नुशूलस प्यठ वुरिथ।

सरत्तु स्रोत्तु सरत्तु च जंहरु किन्ना तंम्य शिवन्,
हौट सुस पनुनुय शूबरोवुन ।

शिवस प्यठ ठेकिमुच्चि अमि शक्ती हुन्द,
यि सोरुय चोनुय व्यलास वु आसवुन ॥



॥ 22 ॥

विरिञ्चयारुया मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वम-
त्रिलोकीं रुद्रारुया हरसि विदधासि ^{इवसि} श्वरदशासु।
भवन्ती सादारुया शिवर्यासि च पाशौघदलिनी,
त्वमेवैकाङ्गे कामऽवसि कृतभेदैर्गिरिसुते ॥ २३ ॥

برہمانا و کئی کران یاد تر بلوکی
نارا اینہ نامہ کئی جھکھ پڑتھے رُجھان
روڈ برہنا و کئی جھکھ پڑے کران شہماہ
اپشردشا جھکھ پڑے داوان
سیدرا شہونا و کئی زگتس دوازا سوکھ
پاشن مہندری شہوہ پڑے گا
ہی بہالہ پتیری پڑے کئی آستہ
بیون بیون کامہو کئی انیکھ پڑے سان - (۲۳)

ब्रह्मा नावुकिन्य करान च पादु त्रेयलूकी,
 नारायण नावुकिन्य कृत्स्न च तथ रत्नान।
 रुद्र नावुकिन्य चय कृत्स्न करान समुहार,
 ईश्वर दशा कृत्स्न चय दावान।
 सदा शिव नावुकिन्य जगत्स दिवान सोऽख,
 पाशान हन्ध समूह चय गातान।
 ही हिमालुपुत्री चय कुनी आशिष,
 व्योम व्योम काम्यव किन्य अंगीख च
 वासान्॥ (२३)

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायै रपि मनाक,
 अशक्ये संस्पृष्टुं चकित चोक्तैरऽम्ब सततम्।
 श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरे,
 कथं ते विन्दन्ति पदकिसलये पार्वति! पदम्॥

॥२४॥

ہی ماما یم منہ شور جھی منہ کھو
 گلی منہ دو شو سوئی آسہ و نی
 تم نہ گھوڑی کھوڑی مارج چاہن یارن
 سیرش کر لیس سٹھ جھی نہ ہکے و نی
 وہ پیر نشہ سوہ با و نی کھن پانہ پکے
 چاہن تر نہ کھن تل جاے پراون۔ (۲۴)

ही माता विम मुनीश्वर द्विय मनु कथो,
 गंत्यमुत्थव दूषव सोऽस्य आसुवुन्य।
 तिम ति खूच्य खूच्य मांज चान्यन पादन,
 स्पर्श करुनल प्यठ द्विय नृह्यकुवुन्य।
 वोपनिशद सोबावु किन्य कठिन्य पोव्य
 पकिथुव तिम,
 चान्यन चरनु कमलन तल जाय प्रावुन्य॥
 (२४)

तडिद्वल्लीं नित्यामऽमृत सरितं पाररहितां,
 मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमऽगुणग्रन्थि-
 गहनाम्।
 गिरां दूरां विद्यामऽवनत कुचां विश्वजमनी-
 मपर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो-
 भगवतीम्॥२५॥

وَرَمَلِه رُوپ اَپار اَمْرُو شِيم رُوپ
 نِيرَمَلِه ژَنَدَرَمِه تَر گونا تَمک رُوپ
 وَا نِي لَشِه دُور تَر ے کُز وِیَر نیا سُو رُوپ
 گِیَان کَر یا تَنو نِیْمِت ز گِست مَاتا رُوپ

جیہی ونان سستہ زن ہی دیوی چائی
 ہم روپ تہ بیہ اتنتہ لخمی روپ (۱۵)

वृजमलि रूप अपार अमरश्चतु नदी रूप,
 न्यर्मलु चंद्रमूत्रगोणात्मक रूप ।
 वाणी निशि दूर चय धाजि विद्या स्वरूप,
 ज्ञान क्रिया तनव निमित्त जगत माता रूप
 ह्री वनान सधजन ही दीवी चान्य,
 यिम रूप तु वेदि अन्नत लक्ष्मी रूप॥
 (२५)

शरीरं क्षित्यम्यः प्रवृत्ते रचितं केवलमिदं
 सुखं दुखं चायंकलयति पुमांश्चेतन इति ।
 स्फुटं जानानेऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
 शरीराहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते॥
 (२६)

پرتھوی، زل، آگن، والیو تہ آکاش
 جھے یمن پائتر بوتن شیر بنان
 سوکھ دوکھ امیک زانان پوریش جتن
 نو موڈ پاتھو زلو امیک الو بو کران

ہی ہمالہ ستیری شریک آشکار
چھینے زیلو چاہے آلو گریہ رو آس تراوان۔ (۲۶)

پृथ्वی, जल, अंगुन, वायु तु आकाश,
कूय यि मन पांचू बूतन शरीर बनान।
सोख दोख अम्युक जानान पोरुष चैतन,
नोमूद पाठ्य जीव अम्युक अनुभव करान।
ही हिमालु पुत्री शरीरुक अहंकार,
छुनु जीव चानि अनुगेह रोस त्रावान॥
(२६)

पिता माता भ्राता सुहृदऽनुचरः सदा गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमऽपि यदा मां विजहति ।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं,
महाज्योत्स्ने मातर्भव करुणया सन्निधिकरी॥
(२७)

مول ماچ بائے بند گریہ
شریر پتر مینتر گریہ دین
بیمہ وقتہ تراوتم تمہ وقتہ بے مہ
اللہ کار مسر خا خا تر گریہ

مہاپتر کاشہ رویہ کنی سنیہ دیایہ کنی مآج
نزدیک ٹھہرے شمس من کھ مئے بن - (۲۷)

مोल मांज बांय बन्द नोकरतु गेहेणी,
शरीर पुत्र मैत्र गरु बैयि दनु ।
यैमि वक्तु त्रावनम तमि वक्तु वय युह,
अन्दुकारस जलुद जलुद चटुबुन्य बन ।
महा प्रकाशि रूप बनिथ दयायिकिन्ध मांज,
नजदीक ठुहरिथ सन्मोख मै बन ॥२१॥

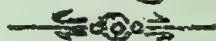


सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातस्त्वमुदभू,
स दीपं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया ।
अनाद्यन्ता शम्भोरऽपृथगऽपि शक्तिर्भगवती,
विवाहाज्जयासीत्वहहचरितं वेत्ति तवकः ॥
(२८)

ہی زگت ماماگوڈر سیلہ آسکھ
دکھ پتر زانیہنی ترے کو ماری
دوستہ کنی ترے حقن سے ترے تراوتہ
پتہ بنیکہ ترے ہمالہ پیتری

آدی آنتہ رستی تیس شپوس نشہ چھکینہ
 زانہ تہ بیٹون ہی شکستی مگوئی
 ولوایہ روس وردورقن ترغیے شکر
 تم چانی چہ تر کستی زانی - (۲۸)

ही जगत माता गोडु ये'लि आसुख,
 दक्षि प्रजापतु संज नुय कोमारी ।
 दूषि किन्य कुनधन सुय चैय नाविथ,
 पतु बनेयख च हिमालय पुत्री ॥
 आद्य अन्तु रसितिस तस शिवस निशुखनु,
 जांह ति ब्योन ही शक्ती भगवती:
 व्यवह रैस वर दोरथन चैय शंकर,
 तिम चान्य चरित्र कुस जानी ॥ २८ ॥



कणास्त्वद्दीप्तानां रवि शशि कृष्णानु प्रभृतयः
 परम्ब्रह्म ह्रुदं तव नियतमाऽनन्द कणिका ।
 शिवादि हित्यन्तं त्रिवलयतनोः सर्वमुदे,
 तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भाक्ती ॥
 (२९)

ہی دایمی ستری یہ تڑند رہیہ بیہ اگن
 چاہنہ رفتی ہنہر چھ اکھ تہمبہرا
 پیرم برہم چھے چاہنہ نیہتر آئشہ ہنہر
 آسوں چھے اکھ لوکٹ ہنہر لہشہ
 شونہ تہہ شہہ ہنہر ہنہر ہنہر ہنہر
 سارنہ تڑکٹہ لہنی روٹ روزان
 آئشہ تڑچھ ہونہ تاج ہنہر ہنہر
 ہنہر ہنہر ہنہر ہنہر ہنہر

॥ ۲۹ ॥

ہی دیوی سیتھنی چنندرمو بےیہی اُگن،
 چانی دیپتی ہنہر کی اُکھ تہمبہرا ।
 پرانہ برہم ہنہر چانی نیتھہر ہنہر ہنہر،
 آسوں ہنہر اُکھ لوکٹ ہنہر لہشہ
 شونہ تہہ شہہ ہنہر ہنہر ہنہر ہنہر
 سارنہ تڑکٹہ لہنی روٹ روزان
 آئشہ تڑچھ ہونہ تاج ہنہر ہنہر
 ہنہر ہنہر ہنہر ہنہر ہنہر

त्वया यो जानीति स्वयति भवत्यैव सततं,
 त्वयैवेच्छुत्यम्ब ! त्वमसि निखिला यस्य
 गतः साम्यं शम्भुर्वहीत परमं व्योम ^{तन्मन्त्रः} भवती,
 तथाप्येवं हित्वा विहरति विशवस्येति
 किमिदम ॥ ३० ॥

چائی کنو زانان چائی کنو ترهان سے
 چائی کنو سے شہو ز رگت تجھے بناوان
 ترے چھکے تس سوروپ چائی کنو تجھے سے
 سامی باؤس پیٹھ وابتان
 چانے نیز صایہ تیلہ سے چائے تس
 پر مہ آکا شس منتر لین سپدان ॥ (۳۰) ॥

चान्य किन्य जानान चान्य किन्य वदान
 चान्य किन्य सु शेव जगत द्युय बनावान । सुय,
 द्युय द्युय तस स्वरूप चान्य किन्य द्युयसुय,
 सामी बावस प्यठ वात्तान ।
 चाने यद्वायि तेलि सुय चानिस,
 परम् आकाशस मज लीन सपदान ॥ (३०) ॥

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं,
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यमऽ-
गुह्यम्।

द्वीयो नदीयः सदसदिति विश्वम्
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनहोमं ^{भगवती} जननीम्॥
(३२)

بروئے پتہ اندر تیر لک لود موٹ سوکھ
شور روپ شکھتی روپ گفتہ نو موڈ روپ
دور نزدیک سہ سہ روپ لیس زگت
تہ سہ لیتی سہ سہ سہ سہ سہ سہ
زگتہ سہ سہ سہ سہ سہ سہ سہ سہ
(३१)

ब्रौठ पत अन्दर नैबर लूक बीड मोट सूक्ष्म,
शिव रूप शक्ती रूप गुरु नैबर रूप ।
पुर नजदीक सथ असथ रूपसु गत,
तथ खेष्टीस्थिती समुहार च करुवुन्ध ,
जगथ अल्लियाकार तु जानुनु धिवान्॥
(३१)

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्गदीप्रिकणिकाः
 पयोधौ कुल्लोलप्रतिहितमहिम्नीव पृषतः।
 उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तास्त्रिककैल-
 भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशममऽनुकल्पं परवशाः॥

« ३२ »

سَمْدَنَ يَكُنْ بِهِنَّ زَيْنًا، اَلْجَنَّةِ تَهْمُ زَيْنًا
 سَمْدَنَ يَكُنْ بِهِنَّ زَيْنًا، اَلْجَنَّةِ تَهْمُ زَيْنًا
 تَهْمُ زَيْنًا، اَلْجَنَّةِ تَهْمُ زَيْنًا
 بِرَحْمَةِ كَلْبِ اَلْهَيْسِ وَرَحْمَةِ كَلْبِ اَلْهَيْسِ - « ۳۳ »

सिययि सुन्ज, किरण जन, अंगुचि त्यम्बरिजन,
 समन्दरन मलुकन हुन्ज पानवा क्विज जन।
 तिथय पाठ्य शिवु प्यठु पृथ्वीतत्त्वस तान्य,
 प्रथ कल्पान्तस वंथय वंथय लय सपदान।
 « ३६ »

विद्युर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिशुण्डमादिनकरः
 स्वभावोजेनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमऽनिलाः।
 शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां,
 विकल्पैरेभि स्त्वामऽभिदधाति सन्तो भगवतीम्॥
 « ३३ »

ژندرمه، ویشنو، برهما بیسه ستریه
 مایا، سوباد، مت، زلو، آتما
 آکاش، والو، شتو، شکتی، یم، ناو
 بید کنی و پیر یم و اتان
 سخته زن یمو ناو کنی بیون بیون
 ہی مانج بو آنی ژئی چھی سمران — (۳۳)

चन्द्रम्, वैष्णो, ब्रह्मा, बैयि सिर्घयि,
 माया, स्वबाव, मत, जीव तु, आत्मा ।
 आकाश, वायु, शिव, शक्ती, यिम नाव,
 बीदु किन्य बीदस यिम वातान ॥
 सथ ज़न यिमव नाव किन्य ब्योन ब्योन,
 ही मान्ज बवानी चैय ही सुमुरान ॥ ३३ ॥



प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदययादेशिकदृशा,
 षडध्वध्वान्तौघच्छिदुर गणनातीत करुणाम्।
 परानन्दाकारां सखदिशिवयन्तीमपितनं,
 स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवन्तीम्,
 (३४)

تو درتی دیا پر کوفہ گو رہی نظر کن
 ہم شکستہ تھی ہاگس مشر شیش کران
 تھینے نہ تھی وہ سب سے شمسار انوار
 دیا پر کوفہ ہی ساج چھتہ گالات
 پر ماٹھ کے سو کہ دیوان ترسمنے
 تھے مباحیوان ساج چھی ترسمنے پران

کو درستی دیا پر کوفہ گو رہی نظر کن
 ہم شکستہ تھی ہاگس مشر شیش کران
 تھینے نہ تھی وہ سب سے شمسار انوار
 دیا پر کوفہ ہی ساج چھتہ گالات
 پر ماٹھ کے سو کہ دیوان ترسمنے
 تھے مباحیوان ساج چھی ترسمنے پران



शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि ममया त्वं सत्-
 त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमथमणिमादिगुणगुणी
 अविद्या त्वम् विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं
 पूज्यस्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे ॥

(३५)

ترے حکم شہوتے ترے چمکے شکھتی ۴
 ترے ستمے تہ تہ زانہ و فی حکم ترے
 ترے آتما حکم و ویشی حکم ترے
 ترے انیما کہ انشہ سیدی ترے
 ترے اویڈیا ویدیا رنگک پدارتھ
 ترے لہرہ کاتھو چھپہ اسی ہیون زانان (۲۵)

नृप द्रव्य शिव तय नृप द्रव्य शक्ती,
 नृप समय त् स्रव द्रव्य ज्ञानवृत्त्य नृप।
 नृप आत्मा द्रव्य वीचदीश द्रव्य नृप,
 नृप अनीमादिद्रव्य अष्ट सैदी नृप ॥
 नृप अविद्या विद्या जगत्पद पदार्थ,
 नृप निशि कांह तत्त्व किन् अर्थ व्यौन जानन
 (३५)

असंख्यैः प्राचीनैर्जननी जननैः कर्मविलया-
 द्भूतैर्जन्मन्यन्तं गुरुबपुषतासाद्य गिरिशम्।
 आवाप्याज्ञां शैवीं क्रमस्तनुरपि त्यां विदितवान्
 नयेयं त्वत् पूजास्तुति विरचनेनैव दिवसान् ॥
 (३६)

ہی ماما استنکھید پیرانن ز منن ہندی
 کرم گلنہ کتر و دنی ز نیم میراؤ متھہ ماما
 گورؤ شو سورؤپ لکھتہ شکھتہ سورؤپ پیراؤ متھہ
 واپہ پاٹھی حاج چون سورؤپ پیراؤ متھہ
 چانی تو تانہ پوزا کرون بڑ روز پئے

تھو ستی ترہینہ بڑ دین دین کٹاؤ متھہ (۱۳۶)

ही माता असंख्य प्राण्यन जनमन हृद्य,
 कर्म मलनु कित्य वोन्य जन्म प्राविथ ।
 गौरे शिव स्वरूप लेखिथ शक्ती स्वरूप
 वार पाठ्य मांज चीन स्वरूप जानिथ ॥
 चोनी तोता तु पूजा करुनु ब रोज हय,
 तैथ्य सूर्य छनु ब धान दान कटाविथ ॥
 (36)

यत् षट् पत्रं कमलं उदितं तस्य याकर्णिका-
 योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम् ।
 तस्मिन्नऽन्तः कुचभरतां कुण्डलीतः प्रवृत्ता,
 श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि ॥
 (३७)

سَوَادِ شَطَانِ تَر کُرسِ مُنْزِ شَطِ دَلِ
 نَمُوشِ لَیسِ حُجَّهٔ مَاجِ آسِ مَونِ
 تَهْ مَنزِ آسِ مَونِ لَیسِ حُجَّهٔ مَونِ کُرسِ
 مَونِ کُرسِ شَطِ پَیْطِ اَوَسْکَ پَچِ جَاسِ
 اَوَسْکَ پَچِ حَیْ حَیْ پَیْطِ وَا سِ کُرسِ
 لَیْسِ کُرسِ لَیْسِ کُرسِ کُرسِ کُرسِ
 کُرسِ کُرسِ کُرسِ کُرسِ کُرسِ کُرسِ
 کُرسِ کُرسِ کُرسِ کُرسِ کُرسِ کُرسِ

स्वादिष्टान चकरस मज्ज षष्ठ दल,
 पम्पौशा युस हुय साज आसुवुन।
 तथ सज्ज आसुवुन युस कु बीजुक कोश,
 बीजु कोशस प्यठ ओंकारुच जाय,
 ओंकारुचि जायि प्यठ वास करुवुन्य;
 योस कुण्डलिनी ह्रस्व तंत्य च्चु रोजान।
 तस्य शाम् सोन्दर मूरती दारुवुन्य,
 जगत सातायि जैय न्यथ व सुमरान ॥



ਦਯਾਨ

काला म्रामाम कटाक्षैररि भुलभयदा -
 मौलिबद्धेन्दुरेखां,
 शङ्ख चक्रम् कृपाणं त्रिशिखमऽपि -
 करैरुद्धहन्तीं त्रिनेत्रास्।
 सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभवनमरिबलं तेजसा -
 पूरयन्तीं ।

दद्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिद्वि. त्रिवृता
सेवितां सिद्धिदायिनीः॥

کالہ اڈہ کی باغیچہ شاخہ روئے سمتے کٹا کھٹہ کنوشتمن
 ویکسی پٹہ ترند خیمہ دورعت شنگھ زکر تلوار ترشول اخن مندران
 نیرتے شیکھر دایہ فی صلیب کھنڈہ ساری سے تر لوکس پتہ تیر لوہاوان
 دیان کرکھ تفس جے نا و سوس درگایہ تہد دیو نہان سیدی
 یترہ ورن سپوائس کران

ہمیں گویا شہری لہو لے۔ حبیب دہلوی کے ہاتھوں ہمنام سرسینا سہت مارا گیا تو اندر
اور بس دلتا پیر من ہو کر سانشاٹانگ ڈنڈوت کر کے اس پر کار رکھ گوتی کی
ستون تکر تکر تے لگے۔

काल, ओवरुद्ध पाठ्य शाम् रूप सौस्तुय
 कटाक्ष किन्त्य दुश्मननकुलन व्यदिगन्
 उद्यकय प्यठ चन्दरम दौरसुत शांख चक्र
 तलवार त्रिशूल अथन मज योसुदारान्
 त्रै नेधुर दारुवुन्य सुहस खिद्य सौर्यव्यु
 त्रिबचनस्य पननि तीज्ज पूरजावान्
 ध्यान करिब तस जय नाव् सौस दुर्गायि हुन्द
 देव नमान सैदी यक्षुन सेवा रासकरान्
 मेधाऽऽपि बोले :- जब देवी के हाथों महिषासुर
 सेना सहित मारा गया तो इन्द्र और सब
 देवता प्रसन्न होकर साष्टांग डण्डवत करके
 इन्द्र प्रकार भगवती देवी की स्तुती करने
 लगे ।

ऋषिरुवाच :-

ओं शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
 तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ।
 तां तृष्टुवः प्रयाति नम्रशिरो धरांसा ।
 वाग्भिः प्रहृषि पुलकोद् गमचारुदेहम् ॥

ہی دپوی میلہ ماری تھکھ ٹوٹے تم دو شٹ
 راکھس سینا یوہ سہ بلوان
 وائی کئی پر سن کر کہ تہ تہ رازن تہ
 دیوہ کھلے کو مر آوتھ کو کہ شے پر نام
 ہر شے کئی تہن تہم تہم تہم تہم تہم
 سوندر شری سوسو آہی تم پر زلان (۱)

ہی دیوی یعلی ماری تھک تہ تہم دو شٹ-
 راکھس سینا یوہ سہ بلوان
 وائی کینئ پر سن کر کہ تہ تہ رازن تہ
 دیوہ کھلے کو مر آوتھ کو کہ شے پر نام
 ہر شے کئی تہن تہم تہم تہم تہم تہم
 سوندر شری سوسو آہی تم پر زلان (۱)

ہر شے کینئ پر سن کر کہ تہ تہ رازن تہ
 دیوہ کھلے کو مر آوتھ کو کہ شے پر نام
 ہر شے کئی تہن تہم تہم تہم تہم تہم
 سوندر شری سوسو آہی تم پر زلان (۱)

دیویا یعا تاتا مہ جگداत्म शक्त्या,
 निश्शेष देवगण शक्ति समूह मूर्त्या।
 तामऽम्बिकानखिलदेवं महाविष्णु उवाच,
 भक्त्या न तावत्समं विदधातु शुभानि नाना॥
 (२)

ہی دلوں ترے رنگت مجھے ویاہست
 سورے جانہ شکستی سترے چھ شویان
 سارے دلوں میں شکتی نہایت
 مجھے آج چہرے بس سوز و پشیمانیوں
 یس کران چہ پوزا ساری دلوں تہا
 بیہ وقہ تم ریشہ مقرب
 گنگا گندہ چھس کران پر نام تھی ہے
 سونے آج گزری تہم کلیان میوں (۱۲)

ہی دیوی تری جगत कुय व्यापकुत,
 सोरय चानि शक्ती सत्य कुशबान।
 सारिनुय दीवन हुन्नि शक्ती कुन्द समूह,
 कुय माज चीनुय स्वरुप आखवन।
 यस करान छि पूजा सारी दीवता
 बैचि वोतम रेश तेमित माजिवन।
 गुल्य गन्डिथ कुय करान प्रणाम तेमित,
 सोय माज कर्यतनम कल्याण खेन।



- (३३)

यस्याः प्रभावमऽतुलं भगवानऽनयो,

ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमऽलं बलं च ।
 सा चण्डिकाऽखिल जगत्परिपालनाय,
 नाशाय चाशुमभवस्यमर्तिकरी ॥ ३ ॥

सुन्दर प्रभाव हृद रोस आयुवन,
 भगवान् तु शीशनाग दुनु वनिध ह्यकान ।
 ब्रह्मा तु शंकर द्विन् तिम चैव पाठ्य,
 तावत् सौम्य महिमा चीन जानान ।
 सोय चण्डी दीवी रेक तनम मे,
 योसु सारिसुय जगतस्य हे पालाना ।

येन्यसुन्द प्रभाव हृद रोस आयुवन,
 भगवान् तु शीशनाग दुनु वनिध ह्यकान ।
 ब्रह्मा तु शंकर द्विन् तिम चैव पाठ्य,
 तावत् सौम्य महिमा चीन जानान ।
 सोय चण्डी दीवी रेक तनम मे,
 योसु सारिसुय जगतस्य हे पालाना ।

दीतनम तिद्ध शोच बोद्ध सोय दीवी।
 येमि सत्य अशोच बय नाश रूपदान ॥
 —ॐ— (४)

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेषु लक्ष्मीः
 पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
 श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा-
 तां स्वां नतागदम परिपालय देवि विश्वम्।
 - (४)

باکیر وان گرن مندر یوسه نکھی رُوب
 یایی گرن مندر یوسه آنکھی *
 سته یورشن شرواکول یورشن لزا
 نشود یورشن بوه رُوب رولانی
 پالیا کرتہ سارو یے زگتن مانج
 ژئیے چھئے گگر گشدرتہ پر نام کرانی - (۱۱)

बाध्यवान गरन मन्ज योसु लक्ष्मी रूप
 पापी गरन मन्ज योसु अलक्ष्मी।
 सध पोरशन श्रद्धा कौल पोरशन लज्जा
 शोद पोरशन बोदिरूप रोजानी।

पालना करतु... सारिसुय जगतस माज।
 वेय सुसय गुत्य गन्डिथ प्रणाम करानी॥
 (४)

किं वरायाम तव रूपमऽचिन्त्यमेतत् ,
 किंचाति वीर्यमऽसुर ह्यकारि भूरि-
 किंचाह्वेषु चरितानि तवाद्भुतानि ,
 सर्वेषु देव्यसुरदेव गणादिकेषु ॥ ५ ॥

کیاہ کر ورنن چون سوروپ ہی مآج
 لیس روپ چون آسہون نہ سورانی
 کیاہ کر ورنن چون بل تہ سامرثہ
 لیس راکشسن حید ناش کرانی
 کتبہ انہ بوز مشدہ آئی قیدی حیرتہ
 راکشس تہ دلوز شترس گترطانی (۵)

व्याह करु वर्णन चीन स्वरूप ही माज
 युस रूप चीन आसबुन न सोरानी ।
 क्याह करु वर्णन चीन बल तु सामरथ,
 युस राक्षसन तु नाश करानी ॥

कति अनु बोज मज चान्य बड्य चरित्र,
राक्षस तु दीव आधुरस गह्वानी ॥५॥



हेतु समस्त जगतां त्रिगुणापि दोषैः
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरपि पारा ।
सर्वाश्चयाखिलमिदं जगदंशभूतम्,
व्याकृता हि परमाप्रकृतिस्त्वसाध्या ॥६॥

सारी जगत् च हीतो बख च ही मोज,
त्रिगुणात्मक जगत बुस कु उगसबुन ।
नारायणसि शत्रुस च्छेने राते लोअन
माचोन सूरुप लिस अपार आसे वन
मिअने अशे लसे रगत च्छे वने पिलो मित
चोने असे लसे च्छे आसे वन
आदी प्रकृति त्रिगुणा ही मातानेर विसार
छे कसे त्रिगुणा च्छे वन सूरुप लिस वन
(५)

सारी जगत् च हीतो बख च ही मोज,
त्रिगुणात्मक जगत बुस कु उगसबुन ।

नारायणस्य शिवस्य ह्युज्जानुन् विवान,
माता चो न स्वरूपं तु स अपार आसुवुन।
चानि अंशि निशि दुस जगत हु वोपद्योमुत्,
चोन्य आसर तथ हु आसुवुन ॥
आद्य प्रकृती च क्षर ही माता व्यरविकार
थदि खोत थोद चोन स्वरूप आसुवुन॥

—•—❁—•—

(६)

यस्या समस्त सुरता सममुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवी
स्वहासिवै पितुं गणासि तृप्तिहेतुर
उच्चार्त्यसे त्वं अनेन जनैः स्वधा च ॥७॥

بیہوش ہندی ساری منتر پندہ ستی
 یگنیادکن ترفتی چھ واسات
 سو انا شبد کنی ہی دیوی تہ
 دیون ترفتی ہند کارن بیان
 سو دہہ شبد کنی ہی دیوی ساری
 پیترو کن ترفتی چھے سیدان

यैम्यसुन्ध सारी मन्त्र परनु सून्ध,
 यैज्ञादिकन तृप्ती छि वातान :
 स्वाहा शब्दु किन्ध ही दीवी नुय,
 दीवन तृप्ती हुन्द कारण बनान ।
 स्वधुः शब्दु किन्ध ही दीवी सारिनुय,
 प्यत्र लूकन तृप्ती छय सपदान ॥१॥

या मुक्ति हेतुर अविचिन्त्य महावृत्तत्वं,
 अम्यस्वस्ये स्वनियतेन्द्रिय तत्त्व सारै,
 मोक्षार्थिभिर्मुनि भिरस्त समस्त दोशैः
 विद्यासि सा भगवती परमाहिदेवी ॥

॥८॥

ترے حکم موکھتی مہند کارن مارج
 ترے تپ تپو سار سوس نہ سوری
 مہند ریہہ رٹھ آسن ییلہ ورتہ مہی
 ییلہ جانی دوپاسنا چھ سپدانی
 موکھی ترہہ ونی مہنیشور سیم دوشہہ رسی
 چیکھ تمن ترہہ ویدیا روپ کھگوئی - (۸)

चय हख मोरुती हुन्द कारण माज,
 चय बडि तत्व सारु सोरु न हवरनी।
 येनेपि रंठिध आसन वेलि वृत्त सोरुय,
 तेलि वापासना हें सपदांनी ।
 मूला यहुवन्य मनीश्वर विस दूषि रंस्थ,
 हख निमन च विद्या रूपु भगवती ॥४॥



शब्दात्मिका सु विमलः प्रह्व यजुषाम निधान-
 मुद्गीध रम्य पद पाठवतां च साम्नाम् ।
 देवेत्रियी भगवती भवभावनाय,
 वार्ता च सर्व जगतां परमार्तिहन्त्री ॥६॥

شید روپ ریکه، یحیو، سامه ویک خزانہ
 ترے پد، ترے پاٹھ، ترے پرتو روپ
 ستمسار پالنہ بانیہ ہی دلوی !
 ترے آسہ و فی حیکہ ترے وید روپ
 زرگتک آرتہ کالینہ بانیہ، ۴ ۴ ۴ ۴
 ترے حیکہ آسہ و فی وارت روپ

शब्द रूप खख, यजु, साम वीदुख खजानु,
 न्युय पद, न्युय पाठ, न्युय प्रनव रूप ।
 सम्सार पालनायि बापथ ही दीवी,
 न्युय आसुवुन्य कख ननवय वीदु रूप ।
 जगतुक आरचर गालुन बापथ ;
 न्युय कख आसुवुन्य वारता रूप ॥

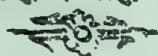


मेघासिदेवि विदताखिलशास्त्रसारा
 दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौरङ्गः ।
 श्रीः कैटभारि हृदयैक कृताश्रि वासा,
 गौरी त्वमेव शशि मौलिकृत प्रतिष्ठाः ॥
 (२०)

ہی دلوی یو شاسترن مہندسار زون
 چھکھ آتمن بودی رؤب تر آسانی
 درگا رویہ کنی مشگلن تر نی
 سمسار ساگر تر ناو بنانی
 نکھری رویہ کنی نارایتن چھکھ
 ہر دیش مہندسار ترے واس کرانی

گوری رویہ کنی ژند ز مہ لیس کلس
 تس شونانختس لستہ ژ روزانی - «۱۰»

ही दीवी यिमव शास्त्रन हुन्द खर जोन,
 कख तिमन बोद्धि रूप च आसानी ।
 दुरगा रूप किन्त्य मुशकिलस तरनी,
 सम्सार सागरस च नाव बनानी ।
 लक्ष्मी रूप किन्त्य नारायणस दुख,
 हृदयस मज्ज चय वास करानी ।
 गौरी रूप किन्त्य चन्द्रस यस कलस,
 तस शिवनाथस निश च रोजानी ॥६०॥



ईषत्तदाद्यानमलं परैपूर्य चन्द्र,
 बिम्बानुकारिकन्कोत्तम कान्ति कान्तम् ।
 अतियद्भुतं प्रहृतमान्तरुणा तथापि,
 वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥६१॥

پریلورن ژند ز مہ نیرلی ژند ز تمب ہیو
 چون موه که سوئی پاشی و س چکه دن

آسہ وں سوئدر وقت تم موکہ چون
 شو با یہ سوئس آتش تر کر وون ۴۴
 حبس دلی سے موکہ و حقیقت ہشتا سو ہے

یسی اوس را کہائیں کر و کر وون۔ (۱۱)

पति त्वं नन्दनं वन्दितुं नन्दनं भुव,
 नाल मोख सोनका ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अबुवन सोन्दर वीतम मोख चीन,
 शुबायि सोस आध्वर करवोन ।
 ह्यस डेव्य सु मोख बुद्धि सहिजासुरसुय,
 युस ओस राहुस ब्रूद करवोन ॥ ॥ ॥

दृष्टापि देवि कुपितं प्रकुटीकरालमु-
 धुच्छशशाङ्कं सदृशं च्यवियन्नलधः ।
 प्राणान्मुमोच सहिषस्तदतीवचिन्तं,
 कैजीन्यतेहि कुपितान्तक दैत्यनेन ॥ २२ ॥

و حقیقت تر دلی کر و کر و ستر بری ہے
 سوئس تر کر و کر و ستر بری ہے

پران تر آوی تمی وقتہ ہیشا سور نے
 کاہنہ آشتر جھینہ توتہ شیدان ۶
 کس روز ز نیکہ ماج بیتہ ز گتسی منتر
 سیلہ و جھپہ سہ مہاکال کرودی بنان (۱۲)

बुद्धिधुय च दीवी क्रूदु सत्यवरिधुय,
 वौदयि सौस चन्द्रमु जन च प्रजलान
 प्राण त्राव्य तमी वक्तु महिषासुरनुय,
 कांह आश्रर कुनु तोति सपदान;
 कुस रोजि जिन्दु माज यथ जगतस मज
 यैलि बुद्धि सु महाकाल क्रूदी बनान ॥ १॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय ,
 सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलाणि ।
 विज्ञातमेतदधुनैव यदहस्तमेत-
 न्नीतं बल सुविपलं महिषासुरस्य ॥ १॥

ہی دپوی وونی آسہ سپٹہ پڑستنی وون ۶
 چیکہ تر ماج آسہ وونی سونے کلہیان

یہ تھل شیدان کرو دی ہی مآج !
تہلہ چپکھ نیکدم گلن ناش کران۔

مہشاسورن فوج ناشس واتنووھن

نیش فوج نش اوس سٹھا بلہ وان۔

ही दीवी वोन्य असि यठ प्रसन्न वन,
छख च्चु माज आसुवन्य सोनुय कल्याण,
तैलि छख सपदान क्रूदी ही माज,
तैलि छख यकदम कुलन नाश करान।
महिषासोरुन फोज नाशस वातुनोवधन,
युस फोज तस ओस स्थठाबलवान॥
(13)

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सौदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदाराः,
तेषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्नाः॥१४॥

شہرین بئرمآج تھر ہے چھ مان
دینہ سمپدایہ سوس تھر چھ آسان

تہنہ لیش بڑان دھرم نہ کم گڑھان
 تہنہ دینہ واد ساری دیوان ۶۶
 وہنہ سوُس تہنہ ترسہ، سنہان، نوکر
 زگتس مشر مآج تم باکیہوان ۶۶
 تہنہ ہمیشہ چھک وودیر سوُس روزان
 یکن پیٹھ چھک نہ مآج پُرسن سیدان (۱۱۶)

शहरन मंज मांज तिमनुय हि मानान,
 धनु सम्पदायि सौस तिम हि आसान।
 तिमनुय यश बडान धर्म नु कम गढ़ान,
 तिमनुय प्रन्यवाद सारी दिवान।
 विनयि सौस तिमनुय नुय, सन्तान, नोकर,
 जगतस मंज मांज तिम आग्यवान।
 तिमनुय हमेशि हरव बोदयि सौस रोजान
 सिमन प्यठ कुरव नु मांज प्रसन्न सपदान
 धर्म्यारिण हेति ॥ नि सदैव कर्मिन् (११५)
 अथ पुनः प्रातर्दिनं सुकृती करोति।

स्वर्गं प्रयांति न सती भवति प्रसादात्,
लोक त्रयोपि फलदाननु देवि तेन ॥२५॥

ہی دلوی یم پرتھ دو بہ چھی کران
دھرم چھ کامہ بد آدر سان
سورگس کسان تم جانیہ الو گرتہ ستی
زگرس منہ چھی تم ناکہ وان
نشیچہ گرتہ آج ترن بو تن منہ
ثیے چھکھ بو آئی یس پھل دیوان (۲۵)

ही दीवी यिम प्रथ दोह छी करान,
धर्मचि कामि बडि आदरु खान।
स्वर्गास खसान तिम जानि अनुग्रहसूय,
जगतस मन्ज छी तिम भाग्यवान।
निश्चय करिथ माज जन बबनन मज,
चुय छख बबानी यथ फल दिवान॥



दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमऽशेष जन्तो,
स्वस्थैः स्मृता मतिमऽतीव शुभाददास्या

दारिद्र दुःख भयहारिणिकाः त्वदन्यः
सर्वोपकार करणाय सदाद्रिचिन्ता । १६॥

ہی دلیوی چاہے سمرنے زلوٹس
ساری بے چھپس ناش سیدان
وار پاٹھی بیلیہ سہ کر چوئے سمرن
تیلہ چھکھ کلپا پنج بود تہ تس دیوان
دار دیو باو بے بیہ کٹھن دو کھتہ غم
کس سنا تہیے روس مآج دور تمن کران
وہ پکار چھکھ کران ہی مآج سار بے
ہر ہمیشہ کو مل تہ تہ سوس تہ روزان (۱۶)

ही दीवी चानि सुमुरनि जीवस ,
सारी भय द्विस नाश सपदान ।
वारु पाठ्य वैलि सुकरि चोनुय सुमरन ,
तैलि दुख कल्याणच बोद च तस दिवान ।
दारिद्र बावु भय बैयि कठिन्य दोख तु गस ,
कुस सना त्रै रोस माज दूर तिमेन करान ॥

वोपुकार करव करान ही मांज सारिनुय,
हर हमेशि कोमल द्यथ सोस चुरोजान॥



(16)

एभिर्हतैजगदुपैति सुखं तथैते,
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु,
मन्वेति नूनमांहतान्विनिर्हसि देवी॥ १७॥

थेर ताम नरकस मन्ज रोजनु बापथ,
यिम जीव स्थठा पाफ मांज छी करान।
संग्राम मृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु,
मन्वेति नूनमांहतान्विनिर्हसि देवी॥ १७॥

ही दलुय श्चरन नरकालान - (14)

चेर ताम नरकस मन्ज रोजनु बापथ,
यिम जीव स्थठा पाफ मांज छी करान।

तिहुन्दी मारु सृत्य ही मांज बबानी,
 सोरुय त्रिलवन सोख चु प्रावान ।
 यिम छख लडायि मंज मारान चु ही मांज,
 तिम छिहख स्वर्गस चु वातनावान ।
 यी मानिथ युहै निश्चय करिथ छव,
 ही दीवी शत्रन चु गात्तान ॥



दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म,
 सर्वासुरानरिषु यत्प्रहीणोषि शस्त्रम् ।
 लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रं पूता,
 इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेष्व साध्वी ॥ १८ ॥

چانه در شتی سیدی کیا ز سیدی نه بسیم
 سارے راکھسن تہ بیہ و شمشین
 مگر چھیکہ تر تراوان شستری مانج
 تھہ ہم امہ شستری شود سیدان
 شستری و شستری وائنیم تہ سورگہ لوکس
 نیہ تہ تھکار چھیکہ تھمن سید کران
 - (18) -

चानि दृष्टि स्रूत्य क्वाजि सपदिनु बसुम,
 सारिनुय राक्षसन तु ब्ययि दुश्मनन ।
 भगर द्रख च त्रावान शस्त्रही नाज,
 सुध यिम अमि स्रूत्य शौद सपदन ।
 शौद बनिध वातन यिम ति स्वर्गतूकस,
 योहय हातुकार द्रख तिमन प्यत करान ॥
 (18)

खड्ग प्रभानिकरविस्फुरणे स्तथौ गैः
 शूलोयकान्तिनिबहेन दृशोऽसुराणाम् ।
 यन्नागता विलयमंशमदिन्दु खण्ड -
 योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥

کھڈگ پربھانیکر ویسفرणे ستثو گئैः
 शूलोयकान्तिनिबहेन दृशोऽसुराणाम् ।
 यन्नागता विलयमंशमदिन्दु खण्ड -
 योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥
 (19)

खडग दिपती समूह, कठिनि चमकि हुन्द समूह,
 त्रिशूल दिपती समूह, युस त्रै चमकान ॥
 प्रजलान कुय चीन मोख त्युधुय ही मांज,
 राहसन तथ प्यठ नजर कुन दरान ।
 चन्द्रमु सुन्ही पूरुदिपती सौस ,
 ही मांज त्युधुय कु चीन मोख बुकान ॥
 ————— (५६)

दुर्वृत वृत शसनं तव देवि शीलं ,
 रूपं तथैतदविचिन्त्यम तुल्यमन्यैः ।
 वीर्यं च हन्तृहतदेव पराक्रमाणां ,
 वैरिष्वपि प्रकटितैव दयात्वयेत्थम् ॥२०॥

خراب چلن ہی آج چھکھ بناوان شانت
 آسہ وُن یوہ ہے چھے چونے سو باو
 روپ چون آسہ وُن ہی آج نہ سو
 چانہ روٹیک حد چھنہ کیئہ بیان
 دیون ناش گومت یس سامرکہ
 چھکھ تمن پور شارکہ بڈاوان ۶ ۶

شہرین سپہ چمکے ہی مائج بو آئی
 دیا یہ سوس تمن دیا پیر کٹ چمک کران
 (۲۰۰)

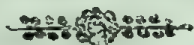
खराब चलन ही मांज छख बनावान शांत,
 आसबुन यो हय छुय चोनुब स्वबाव ।
 रूप चीन आसबुन ही मांज नस्वरबुन,
 चानि रूपुक हद छिनु कैह लबान ॥
 दीबन नाशगो मुत युस सामरथ,
 छख तिमन पीर पारथ बडावान ।
 शंथरन प्यठ छख ही मांज बबानी,
 दयायि सोस तिमन दया प्रकट छख
 करान ॥

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य,
 रूप च शत्रु भयकार्यतिहारि कुत्र ।
 चित्तं कृपा समर निष्ठुरता च दृष्ट्वा,
 त्यययेव देवि वरदे भवेन त्रियेऽपि ॥

کس کز بربڑی مائج چانہ و پیرتایہ
 چون روپ شہرین بے دوائی

کُنہ جابہ چون روپ منوہر آسہ وُن بلو ۴
 دیا یہ سوس ہر دے کُنہ جابہ چھکھ تھو آئی ۴
 لڑا یہ منسز روپ چون کھطور مانج آسہ وُن
 ترن لوکن چھکھ ور دو آئی ۴ ۴ ۴ (۲۱)

کوس کر برباری مانج چانی ویرتا یی،
 چون روپ ۲۲ بج دیوانی۔
 کونی جانی چون روپ منوہر آسہ وُن،
 دیا یی سوس ہر دے کُنہ جابہ چھکھ تھو آئی۔
 لڑا یی منسز روپ چون کھطور مانج آسہ وُن
 ترن لوکن چھکھ ور دیوانی ॥ ۲۱ ॥



त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन ,
 आतं त्वया समरसूदनितेडपिहत्वा ।
 नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपायतम,
 समाकमुन्मद सुरारि भवं नमस्ते ॥
 ॥ २२ ॥

سارنے دشمن لڑا یہ منسز روپ کھطور
 بجیا دشمن ترے ہی مانج تر لوکی ۴

ماری تھکھ راھیں لڑا یہ مٹندی مآج
 کھاری تھکھ ترے سوں گس ہی بوائی
 ناش کور تھکھ دشمن اسے لے دے کور تھکھ
 اسی ترے ماما گئی گند تھکھ پر نام کر آئی - (۲۲)

سارینوہ दुशमनन लडावि मन्ज नाश करिथ,
 बचावधान चै ही माज त्रैलुकी ।
 मारियथक राहस लडावि मज ही माज,
 सारियथक चै स्वरगस ही बवानी ।
 नाश कुरुथ दुशमनन असि बय दूर कोरथ॥
 अस्य चै माता गुल्य गन्डिथ प्रनाम करानी॥
 (२२॥)



शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन
 घण्टास्वने नः पाहि, चापज्यानिःस्वनेन च॥
 (२३॥)

لے تیر شول پستی رحمتہ اسے ہی مآج
 کھڈ گے پستی رحمتہ اسے ہی مآج
 گنڈا یہ شبد پستی رحمتہ اسے ہی مآج
 کمانہ شبد پستی رحمتہ ہی مآج - (۲۳)

पनुने त्रिशूल सत्य रक्षतु असि ही मांज,
 खड्ग सत्य रक्षतु असि ही माता ॥
 गन्दायि शब्द सत्य रक्षतु असि ही मांज,
 कमानि शब्द सत्य रक्षतु असि माता ॥
 — ❦ —
 «२३»

प्राच्यां रक्ष प्रतिच्यां च, चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
 भ्रामणेनात्म शूलस्य, उतरस्यां तथे श्वरी ॥
 «२४»

پوری کنی رحمتہ اسہ کھیمہ کنی رحمتہ اسہ
 ای چٹدی رچھ اسہ دھیمہ کنی
 پھر ناو ترشول میں اسہ ترو پاری عراج!
 ای مائار چھ اسہ وہ پاری کنی - (۲۴)

पूर्यकिन्य रक्षतु असि पक्ष्म किन्य -
 रक्षतु असि।

ही चण्डी रक्ष असि दक्षिण किन्य।
 फिरनाव त्रिशूल पनुन अस्य चोपाय
 ही मांज,
 ही माता रक्ष असि उतर, किन्य ॥२५॥
 — ❦ —

सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति
यानि चात्यन घौराणि, तै रक्षास्मांतथाभूवन् ॥२५॥

सुन्दर रूप जानि मातािम तरे असुनी
त्रिलोकी मन्त्र घोरानी २
गुण रूप, कठिन रूप यिम जानि असुनी
तमोस्ती असुनी प्रह्वी रज्जु थो पारी (५५)

सुन्दर रूप चान्य साता यिम तै आसुन्य,
त्रैलोक्यी मन्त्र फेरानी ।
गुण रूप, कठिन रूप यिम चान्य आसु-
न्य, तिमव सत्य आसि त पृथ्वी रज्जु थो पारी ॥२५॥

खड्ग शूल गदादीनि, यानि चास्त्राणि
तेऽम्बिके,
करपल्लव संगीनि, तैरस्मान रक्ष सर्वतः ॥२६॥

कट्ग, त्रिशूल, शिंशु, दिक, यिम तरे असुनी
अस्त्र यिम तरे माज चक्रे वारानी २
सिंशु, अक्षु, शिंशु, चक्रे तरे माज
तमोस्ती असुनी माज रज्जु थो पारी २

खड्ग त्रिशूल येत्यादिक विम है आशुक्ल,
 अस्तुर विम त्रु मांज कुख दारांनी ।
 पम्पोशि अथन मन्ज रतिथ दखचुही मांज,
 तिमव सूय असि माता रकु चोपारी ॥

(26)



क्षमास्तुति

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदापि च न जानेस्तुतिमहो,
 न वाहवानं ध्यानं तदापि च न जानेस्तुतिकथा॥
 न जाने मुद्रास्ते तदापि च न जाने विलपनं,
 परं जाने माता तदनुसरीं कलेश हरनम् ॥१॥

मन्त्रं ते पन्त्रं चिन्तये किन्तु रानान
 रानान चिन्तये मांज ह्योन म्हा
 आवाहनं ते द्यानं चिन्तये किन्तु ते रानान
 रानान चिन्तये माता जानी तूता
 म्हा रानान चिन्तये किन्तु रानान
 रानान चिन्तये माता च्योन विलपिन
 एतं पन्त्रं लोके ह्ये मांज चिन्तये रानान

ترئیے پتہ پتہ کیجئے دیکھن ناٹش سپدان (۱)

मन्त्र तु यन्त्र कुस नु कैह जानान,
 जानान कुसनु माता चीन महिमा ।
 आवाहन तु द्यान कुसनु कैह ति जानान,
 जानान कुसनु माता चान्ध तोता ।
 सुदरायि चानि माज कुसनु कैह ति जानान,
 जानान कुसनु माता चीन विलीपन,
 बड हिश योरुती माज कुसनु जानान,
 ज्ञेय पत्तु पत्तु पक्किथ दोखन नाश सपदान
 (११)

विधेरऽज्ञानेन द्रव्येन विरहीनालस्तथा
 विद्धी अशक्यत्वात्तव चर्णयो या चुत्यन्त ।
 तत्तेतद क्षिन्तव्यं जननि सकलोधारिणि शिवे
 कुपुत्रो जायेत कुचिदर्शप कुमाता न भवत ।
 (१२)

چھس ویدی نہ زانہ وُن دِنہ رُوس تہ آلتری
 زرنہ سپواچانی چھس نہ کینہ کران
 بترہ آلتری سوس چھس نہ کرتم کھیا
 ہی ماسا سارنے چھکھ وودار کران

کو پتر چیر ز گتس مندر یاد سپدان
 ماما کو ماما زائید تر چینه مبان (۱۲)

कुस विदी नु ज्ञानुबुन, दनु रौस तु आलुच्य,
 चरन, सीबा चान्य कुस नु केंह करान ।
 यिदि आलुच्य सौस कुस बेकरतम हमा,
 हीमाता । साबिनय छरौ बोदार करान ॥
 को पुत्र छि जगतस नमज पादु सपदान,
 माता को माता जांह ति छनु बनान ॥

—❧—

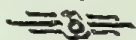
(2)

प्रथिन्या पुत्रास्ते, जननि बहवैसन्ती सरला,
 परम तेषां मध्य-विलतरलौहं तव स्वतः ।
 मध्य योयं त्यागः समुचितं इदं नो तव शिवे,
 कुपुत्रो जायीते, कुचिदपि कुमाता न भवते ॥३॥

ماما پر محوی سپٹ سبھا ترے شہتان
 تومن مندر بے یوت چھسے نابہ کار
 چکھ مئے تراوان ماما چھے نہ ترے یہ جائیز
 ہی پارڈتی کوہ چکھ و بزاران
 کو پتر چیر ز گتس مندر یاد سپدان

माता को माता नाने ते चिन्हें बिनान-॥३॥

माता पृथ्वी प्यठ स्यठा चै सन्तान,
तिमन मन्ज बय चीत दुसय नाबुकारा,
दुख मै त्रावान माता दुय नु चै वि जायिज,
ही पारवती कोन दुख व्यचारान ।
को पुत्र छि जगतस मज पादु सपदान,
माता को माता जांह ति दनु बनान ॥३॥



जगतमातर्माताः तव चरण सेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवे द्रव्यनपि भोयस्तव मया ।
तथापि एवं स्नेहं, मयि निरुपममद्यत प्रकुरुषि,
कुपुत्रो जायते कुचिदपि कुमाता न भवते ॥
॥४॥

ہی زگتِ ماما چانی ژرنہ سپوا
نہ گرم بپتہ کن نہ و فی کین کران
چانہ با پتہ خہرچ کنہ کورم نہ اذ تانی
و فی کین تہ د نہ ژرنہ پتہ چمپسہ خہرچان
توتہ چکھ ژسو ماما، لیس چمپ میون حد رؤس

موصوفه تہ لوسہ حجیم مئے گرگر رحمان
کوئیتر چہر زشتش شتر یا و سیدان

ماتا کو ماما زائہ تہ چھنہ بنان۔ (۱)

ही जगत माता चान्य जगत् सीमा,

न करुम पथकुन न मुन्यकथन करान।

चानि बापथ खच्च कुनि कोरुम न अजताम,

बुन्यकथन ति दनु च पथ दुसन खच्चान।

तोति वख च सो माता, यस दुम्योन हदुरोस

मोहबथ तु योसु कम मे गरि गरि ख्वान।

कोपुत्रर छि जगतस मज पद सपदान,

माता कोमाता जाह ति दनु बनान॥

—ॐ—

«(4)»

परित्यक्ता देवान विविदविद सेवाकुलतया,

मया पञ्चाशीतिऽर्धिकमपनीते तु वयसि।

इदानींचिदमातः तव यदि कृपानापि भक्ता

निरालम्बो लम्बोदर जननि कं यामि शणिम्॥

(५)

سایہ دیوین ہنر سیوا مئے تراؤ
سہمت چھپس ماہج سہٹا ویاکل

۸۵۔ دُری گزراؤں سے وہیں پہنچے
 سید مت چھپے نہ مانج تہا نیرل
 ورنی یو دوسے سے بنے نہ جانے کیا ہی مانج
 تھپہ روس چھپے نہ مانج کس گزیر شرن (۶)

सारिनुय दीवन हुज्ज सीवा में त्राव,
 सपुदमुत कुस ब माज ख्यठा व्याकुल ।
 85 वरी गुजराव्य में बुम्बारि हुन्द,
 सपुदमुत कुस ब माज ख्यठा न्यरबल ।
 वीन्य योदवय में बनि न चान्य कृपा ही
 थपि रोस कुसव ब माज कस गकु शरण ॥ ५ ॥

चिता भस्मालेपो घरलमशनंयकपट दुरी,
 जटा घारी कण्ठ सुजगपति हरे पशुपते ।
 कपाले भोतेष्व - भजति जगत ईषकपदवीं,
 भवाने स्वत पाणे ग्रहण परिपाट्य फलम
 इवम् ॥

چیتا بسما ملکہ لیس نہ ہر چھے خوراک

نیشا قہ کلمہ مالہ نالی تراوان -
 و اشک پڑے لیس لیس جٹاچہ داران - موت لیس سہی سہی جٹاچہ مانان

1011